

प्रस्तावना-



प्रगट हो कि,—यद्यपि ज्योतिःशास्त्रके अनेक जातक-ग्रन्थ यत्र तत्र प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु ऐसा ग्रन्थ देखनेमें नहीं आया कि जिसके द्वारा सरल रीतिसे जन्म-पत्री बन सकै. इसी कारण बहुत दिनोंसे हमारा विचार था, कि जन्मपत्री बनानेमें जिससे सुगमता हो ऐसा एक ग्रन्थ लिखा जावै. सावकाश न मिलनेके कारण यह आशा पूरी न हो सकी. इस समयभी सावकाश नहीं, तथापि ज्यो त्यों करके इस जन्मपत्रीप्रदीप ग्रन्थको यथा-वकाश लिखा है. इस ग्रन्थको दो भागोंमें विभक्त कर देनेकी इच्छासे पहले यह प्रथम भाग लिखा है. इसमें मुख्य मुख्य विषय जो जन्मपत्रीमें अवश्य बनाने योग्य हैं उनको यथावृद्धि लिख दिया है. और फलितको इस भागमें लिखना उचित नहीं समझा. क्यों कि—फलितका विस्तार अधिक है. इस ग्रन्थके देखनेसे पहले हमारे लिखे हुए बालबोधज्योतिःसारसंग्रहको पुनः लगजातक, लघुजातकके भाषानुवादको देख लेवै जो मुंबईमें छप चुके हैं. अनन्तर इस जन्मपत्रीप्रदीपको देखै पढ़ै तो विशेष ज्ञान होगा. जिन विद्यार्थियोंको जन्मपत्री बनाना नहीं आता उनको सरल रीतिसे जन्म-

पत्री बनाना आजै इसीसे हमने यह ग्रन्थ भाषानु-
वाद तथा भाषा उदाहरणसहित लिखकर प्रकाशित
किया है, यदि इस पुस्तकमें विद्यार्थियोंकी विशेष रुचि
होगी तो इस ग्रन्थके द्वितीय भागमें हम उन विषयोंको
लिखेंगे जो विषय जन्मपत्री बनानेमें शेष रह गये
हैं, इस पुस्तकके छापनेका सर्वाधिकार प्रकाशकने
स्वाधीन रक्खा है.

अन्तमें यह प्रार्थना है कि—जहां कहीं हमारे लेख-
दोषसे कुछ भूल हो गई हो उसको सज्जनजन क्षमा
करें, द्वितीय आवृत्तिमें वह भूल सुधर जायगी। शुभ-
मित्यलम् ।

सत्कृपाभाजन—

पं० नारायणप्रसाद मिश्र,

लखीमपुर खीरी.



जन्मपत्रीप्रदीपकी अनुक्रमणिका ॥

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
मंगलाचरण	१	चन्द्रमाधनोदाहरण	४०
जन्मपत्रीलेखनप्रकार	१	सूयादिग्रहसाष्टचक्र	४३
मङ्गलश्लोक	५	तथा च	४४
आशीर्वादश्लोक	६	भावसाधनार्थ अयनांशसाधन	४५
तथा च	७	अयनांशसाधनोदाहरण	४६
जन्मपत्रलेखनोदाहरण	९	लग्नसाधन.....	४७
तथा च	१०	दशमसाधन	४९
जन्मपत्रीप्रशंसा	११	लग्नसाधनोदाहरण	५०
व्याख्यान	१४	नतमाधन.....	५२
लग्नसारणीसाधन	२४	नतोन्नतप्रकार	५३
नैमिषर्मदले लग्नप्रमाण	२४	लंकोदयप्रमाण	५६
लग्नप्रमाणयंत्र	२५	लंकोदयलग्नप्रमाणयंत्र	५६
तत्काळलग्नज्ञान	२५	दशमसाधनोदाहरण	५७
लग्नसारणी	२७	धनादिभावसाधन	५८
लग्नसारणीपरसे लग्नज्ञान	२९	धनादिभावसाधनोदाहरण ..	६०
उदाहरण	२९	भावमाधनप्रयोजन	६१
दशमसारणी	३१	तथा च	६२
दशमसारणीपरसे दशमज्ञान ..	३३	भावलेखनप्रकार	६२
उदाहरण	३३	तन्वादिद्वादशभावचक्र	६३
ग्रहसाधनार्थ चाकनप्रकार.....	३३	ग्रहभावचलिनयंत्र	६४
ग्रहस्पष्टीकरण	३४	ग्रहभावफलविचार	६४
तथा च	३५	द्वादशभाव	६६
पंचांगस्यग्रह	३६	ग्रहदृष्टिविचार	६७
ग्रहमाधनोदाहरण....	३६	ग्रहर्मत्रीविचार	६८
चन्द्रसाधनार्थ भयतमभोग- प्रकार	३८	नैसर्गिकमित्रज्ञान	६८
तत्काळ चन्द्रसाधन	३९	सप्तर्मत्रीज्ञान	६९
		शत्रुप्रहृष्टान	६९

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
नैसर्गिकग्रहमैत्रीयंत्र	७०	सप्तशिवविचारयंत्र	९३
तात्कालिक ग्रहमैत्रीयंत्र	७१	नवांशविचार	९४
पंचवाग्रहमैत्रीयंत्र	७२	नवांशविचारयंत्र	९५
राशिस्वामिज्ञान	७२	चर्माचमनवांशज्ञान	९६
राशिस्वामियंत्र	७३	द्वादशांशविचार	९७
उच्चनीचराशिज्ञान	७३	द्वादशांशविचारयंत्र	९७
उच्चग्रहराशियंत्र	७४	त्रिंशांशविचार	९८
नीचग्रहराशियंत्र	७४	विषमत्रिंशांशविचारयंत्र	९९
मूलत्रिकोणराशिज्ञान	७५	समात्रेक्षांशविचारयंत्र	१००
ग्रहमूलत्रिकोणराशियंत्र	७५	पद्मसाधनोदाहरण	१०१
राहुब्यादिराशिज्ञान	७५	होराज्ञानोदाहरण	१०१
केतुब्यादिराशिज्ञान	७६	होरायंत्र	१०१
ग्रहमित्रादिफल	७७	पद्मफल	१०२
तन्वादिभावेविचारज्ञान	७७	होराफल	१०२
दीप्तादिग्रहज्ञान	८२	द्रेष्काणज्ञानोदाहरण	१०३
भावबलाबलज्ञान	८२	द्रेष्काणयंत्र	१०३
मंशस्तग्रहज्ञान	८३	द्रेष्काणफल	१०४
अशुभसूचकग्रह	८५	नवांशज्ञानोदाहरण	१०४
ग्रहोत्तमग्रहोत्तमफल	८६	नवांशयंत्र	१०४
भावफल	८६	नवांशफल	१०४
आयुर्माहात्म्य	८७	द्वादशांशज्ञानोदाहरण	१०५
अकाळमृत्युलक्षण	८७	द्वादशांशयंत्र	१०५
सप्तवर्गपतिविचार	८८	द्वादशांशफल	१०५
सप्तवर्गप्रयोजन	८८	त्रिंशांशज्ञानोदाहरण	१०६
जन्मलग्नयंत्र	९०	त्रिंशांशयंत्र	१०६
होराद्रेष्काणविचार	९१	त्रिंशांशफल	१०६
होराविचारयंत्र	९२	पारकस्यानविचार	१०७
द्रेष्काणविचारयंत्र	९२	महादशाक्रम	१०९
सप्तांशविचार	९३	विज्ञोत्तरीमहादशाविचार	१११

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
विंशोत्तरीदशाविचारचक्र	११२	योगिनीदशाप्रवेशयंत्र	१२७
विंशोत्तरीअन्तर्दशासाधन	११३	योगिनीअंतर्दशासाधनो-	
विंशोत्तरीदशासाधनोदाहरण.	११३	दाहरण	१२८
विंशोत्तरीमहादशाप्रवेशयंत्र...	११४	योगिनीअन्तर्दशाचक्र	१२८
अन्तर्दशासाधनोदाहरण	११५	योगिनीप्रत्यन्तर्दशासाधन ...	१२९
विंशोत्तरीअंतर्दशाचक्र	११६	प्रत्यंतर्दशासाधनोदाहरण....	१३०
अष्टोत्तरीमहादशाविचार	११८	योगिनीमहादशाफल	१३१
अष्टोत्तरीदशाविचारचक्र	११९	मंगलादशाफल	१३१
अष्टोत्तरीअन्तर्दशासाधन	१२०	पिंगलादशाफल	१३१
अष्टोत्तरीदशासाधनोदाहरण.	१२०	धन्यादशाफल	१३२
अष्टोत्तरीदशाप्रवेशयंत्र	१२१	भ्रामरीदशाफल	१३२
अन्तर्दशासाधनोदाहरण	१२२	भद्रिकादशाफल	१३३
अष्टोत्तरीअन्तर्दशाचक्र	१२२	उल्कादशाफल	१३३
योगिनीमहादशाप्रकार	१२४	सिद्धादशाफल	१३४
योगिनीदशानाम तथा वर्ष-		संकटादशाफल	१३५
संख्या	१२६	ग्रन्थसमाप्तिसमय	१३६
योगिनीदशासाधनोदाहरण..	१२६	ग्रन्थसमाप्त	१३६

इत्यनुक्रमणिका समाप्त ।

विज्ञापन.

मुंबईआदि नगरोंकी संस्कृतभाषा पुस्तकें हमारे
पुस्तकालयमें योग्यमूल्यसे मिलती हैं.

नवीन छपी पुस्तकें—

१ भजनमाळा दोनौभाग	१ आना.
२ भजन पचीसी	१॥ आणा.
३ रामायण पचीसी	आधआना.
४ शंभु पचीसी	आधआना.
५ गोविन्द पचीसी	आधआना.
६ सांगीतरत्नमाळा	आधआना.
७ रसखान कवितावली	८ आना.
८ व्याख्यान कवितावली	१ आना.
९ व्याख्यान दोहावली	१ आना.
१० व्याख्यानरत्नमाला संस्कृतभाषाटीकासहित (धर्मविषयक व्याख्यान)	२ रुपया.
११ गोविन्दविलास संस्कृतभाषा—(धर्मविषयक व्याख्यान)	१२ आना.
१२ आल्हारामायण लंकाकांड	१॥ आणा.
१३ केरळप्रश्न भाषाटीका	३ आना.
१४ जन्मपत्रीप्रदीप (जन्मपत्र बनानेका पहला ग्रंथ)	१२ आना.
१५ योगिनीशतक भाषाटीका (योगिनीदशान्त- दशाफलसहित)	८ आना.
१६ सांवत्सरी पद्धति (संवत्सर संबंधी सर्व विचार)	१ रुपया.
१७ सत्यनारायण काव्य भाषाटीकासहित (दंडकश्लोक)	५ आना.
१८ विश्वरत्नावली (विवाहमें विनति कहनेकी पुस्तक) दो टीका	८ आना.

पुस्तक मिलनेका पता—

पं० नारायणप्रसाद सीतारामजी—मुंबई पुस्तकालय
लक्ष्मीपुरखीरी.

जन्मपत्रप्रदीप ।

भापाटीकासहित ।



मङ्गलाचरण ।

नत्वा गणाधीशपदारविन्दं नारायणाख्येनसमादरेण ।
प्रकाश्यते निर्मलजन्मपत्रीप्रदीपकं बालविवोधहेतोः १

अन्वय — गणाधीशपदारविन्द (श्रीगणेशस्य चरणकमल) नत्वा (नमस्कृत्य) नारायणाख्येन मिश्रनारायणप्रसादेन) समादरेण (सम्यक् आदरेण) बालविवोधहेतो निर्मलजन्मपत्रीप्रदीपक प्रकाश्यते इत्यन्वय ॥ १ ॥

अर्थ—श्रीगणेशजीके चरणकमलको प्रणाम करके ज्योतिर्वित्पण्डित नारायणप्रसादमिश्रने भली भांति आदरपूर्वक बालबुद्धिजनोंको विशेष बोधके हेतु निर्मल जन्मपत्रीप्रदीपको प्रकाशित किया ॥ १ ॥

जन्मपत्रीलेखनप्रकार ।

अथ शीघ्रावबोधार्थं जन्मपत्रस्य लेखनम् ॥

वक्ष्ये संक्षेपतः सम्यक् छात्राणां सुखदायकम् ॥ २ ॥

अर्थ—पहले (इस ग्रन्थके आरम्भमें) शीघ्रतापूर्वक बोध होनेके अर्थ जन्मपत्र लिखनेका अनुक्रम संक्षेपसे वर्णन करूंगा, जो अनुक्रम विद्यार्थियोंको भली भांति सुख देनेवाला है ॥ २ ॥

आदिमे मङ्गलश्लोका आशीःश्लोकास्ततः परम् ॥

गताब्दविक्रमार्कस्य शालिवाहनभूषतेः ॥ ३ ॥

शकोऽयनर्तुर्मासश्च पक्षभेदस्तिथिस्तथा ॥

वारस्तारयुतिलेख्यो घटिका सपलान्विता ॥ ४ ॥

अर्थ—जन्मपत्री लिखनेके समय प्रथम मंगलश्लोक, फिर आशीर्वादश्लोक, अनन्तर महाराजाविक्रमादित्य-जीके गत वर्ष अर्थात् संवत् और शालिवाहन राजाके शांके, फिर अयन (उत्तरायण वा दक्षिणायन), ऋतु (वसन्त आदि), मास (चैत्र आदि), पक्ष (शुक्ल अथवा कृष्ण) तथा तिथि (प्रतिपदा आदि), वार (सूर्य आदि), नक्षत्र (अश्विनी आदि), योग (विष्कम्भ आदि), जन्म-समयमें जो हों सो घंटीपलसहित लिखना ॥ ३ ॥ ४ ॥

करणं दिनमानं च रात्रिमानं ततः परम् ॥

गताऽर्काऽशोथ भोग्यांशो ह्युदयाद्वटिका गताः ॥ ५ ॥

अर्थ—फिर करण, दिनमान, रात्रिप्रमाण, तदनन्तर सूर्यके सुक्त अंश (गत अंश), फिर भोग्यांश, अनन्तर सूर्यके उदयसे जन्मसमय गत घंटी अर्थात् इष्ट घंटी पलसंख्या लिखना कि—जिसको इष्ट काल कहते हैं ॥ ५ ॥

१ शाके सत्या लिखनेके अनन्तर जिम सवसरमें जन्म हो उस सवसरका नामभी लिखना उचित है ।

२ यहां घंटी, पल, तिथि, नक्षत्र और योगको लिखने चाहिये ।

ततस्तात्कालिकं लग्नं श्रीयुतं स्वस्तिपूर्वकम् ॥

अधिकारान्वितं नाम पित्रादित्रयभेदतः ॥ ६ ॥

अर्थ—फिर जन्मसमयमें जो लग्न हो सो लिखना।
उपरान्त श्रीसहित स्वस्तिपूर्वक अधिकार और पिता
आदि तीन पुरुष (पिता, पितामह, प्रपितामह) अर्थात्
बाप, दादा, परदादाका नाम लिखना ॥ ६ ॥

नक्षत्रपादभेदस्तु राशिनाम लिखेत्ततः ॥

जन्मकुंडलिका पश्चाच्चन्द्रकुंडलिका ततः ॥ ७ ॥

अर्थ—फिर जिस नक्षत्रका जन्म हो उसका चरण
और पुत्र वा कन्याकी राशिका नाम लिखना, पश्चात्
जन्मकुंडलीचक्र, फिर चन्द्रकुंडलीचक्र लिखना ॥ ७ ॥

भयातं च भभोगं च गतैष्यदिवसादिकम् ॥

सूर्यादयो ग्रहाः स्पष्टाः सजवास्तदनन्तरम् ॥ ८ ॥

अर्थ—भयात (जन्मनक्षत्रकी गत घटी पल) और
भभोग (सर्वर्क्ष) अर्थात् जन्मनक्षत्रकी समस्त घटी
पल लिखना, और ग्रहोंको स्पष्ट करनेके अर्थ, गत ऐष्य
दिवस आदि अर्थात् वारादि ऋण चालन अथवा धन-
चालन लिखना, फिर सूर्य आदिक स्पष्ट ग्रह, गतिसहित
लिखना, तदनन्तर अर्थात् इसके उपरान्त ॥ ८ ॥

अयनांशाः सायनाऽर्कस्तस्य भोग्यांशकादि च ॥

दिनखंडं रात्रिखंडं ततो लेख्यो नतोन्नतम् ॥ ९ ॥

अर्थ--अयनांश, सायनार्क और सायन सूर्यके भोग्य अंश आदि लिखना, उपरान्त दिनार्द्धघटीपल, रात्रिखंड-घटीपल फिर नत और उन्नत लिखना ॥ ९ ॥

पश्चात्तन्वादयो भावाः क्रमाल्लेख्याः ससन्धयः ॥

फलं सम्वत्सरादीनां ग्रहाणां दृष्टनिरूपणम् ॥ १० ॥

अर्थ-फिर तनु आदि द्वादश भाव क्रमपूर्वक संधि-योंसहित लिखना, अनन्तर जन्मसम्वत्सर आदि (संवत् अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, लग्न, दिन वा रात्रि) का फल लिखना, फिर ग्रहोंकी दृष्टि निरूपण करना ॥ १० ॥

ग्रहदृष्टिः समालेख्या तथा दृष्टिफलं ततः ॥

ग्रहमैत्र्या लिखेच्चक्रं ग्रहमैत्रीफलं तथा ॥ ११ ॥

अर्थ-फिर ग्रहोंकी दृष्टि लिखकर, ग्रहोंकी दृष्टिका फल लिखना तदनन्तर ग्रहमैत्रीचक्र लिखना तथा ग्रहमै-त्रीका फल लिखना ॥ ११ ॥

सप्रवर्गलिखेच्चक्रमरिष्टारिष्टभङ्गकम् ॥

सभङ्गराजयोगाश्च लग्नाद्भावविचारणम् ॥ १२ ॥

अर्थ-फिर सप्रवर्ग (गृहेश, होरा, द्रेष्काण, नवांश, सतांश, द्वादशांश, त्रिंशांश) चक्र लिखना और अरिष्ट व अरिष्टभंग तथा राजयोग और राजभंगयोग लिखकर लग्नसे भावोंका विचार लिखना ॥ १२ ॥

ग्रहभावफलं पश्चादवस्थां विलिखेत्ततः ॥

दशगताविधानेन तत्प्रवेशार्ज्जलेखनम् ॥ १३ ॥

अर्थ—फिर ग्रहभावफल लिखकर, ग्रहोंकी अवस्था लिखना; तदनन्तर विधिसे दशा बनाकर दशाप्रवेशसमय सूर्यराश्यादिसंयुक्त कर अर्थात् दशाप्रवेशका समय निरूपण करके लिखना ॥ १३ ॥

दशाफलान्तरं चैव वर्णाष्टकफलान्वितम् ॥

सूर्यकालानलं चक्रं चन्द्रकालानलं तथा ॥ १४ ॥

अर्थ—फिर दशाका फल लिखकर अन्तर्दशाका फल लिखना, फिर अष्टकवर्गचक्र फलसहित लिखना; अनन्तर सूर्यकालानल तथा चन्द्रकालानलचक्र लिखना ॥ १४ ॥

सर्वतोभद्रचक्रं च निर्याणादि लिखेत्ततः ॥

आयुर्दायक्रमान्ते च लेखनीयं क्रमाहुधैः ॥ १५ ॥

अर्थ—सर्वतोभद्रचक्र लिखकर निर्याण आदि लिखना; फिर अन्तमें आयुर्दायक्रम अर्थात् आयुर्दायप्रमाण लिखे, इस क्रममें पंडित जन जन्मपत्री लिखे ॥ १५ ॥

अब आगे इन श्लोकोंके अनुसार हम जन्मपत्री लिखनेका क्रम दर्शाते हैं ।

मङ्गलश्लोकाः ।

सद्विलासकलगर्जनशीलः शुण्डिकावलयकृत्प्रतिवेलम्
अस्तु वः कलितभालतलेन्दुर्मङ्गलाय किल मङ्गल-

मूर्तिः ॥ १ ॥ वदनद्युतिनिर्जितेन्दुविम्बा चरण-
 प्रान्त्यनताऽमरीकदम्बा ॥ पुरुषोत्तमनागराज्वलम्बा
 जगदम्बा वितनोतु मङ्गलानि ॥ २ ॥ यन्मंडलं तपति
 विश्वजनीनमेतद्याङ्गाच्च विभ्रदखिलात्मगतस्य भानोः ॥
 भाभिर्वियद्विमलयत्सुरराजपूज्यं सन्मङ्गलं दिशतु
 तद्भजतां शरण्यम् ॥ ३ ॥ अतसीकुसुमोपमेयकान्ति-
 र्यमुनाकूलकदम्बमूलवर्ती ॥ नवगोपवधूविलासशाली
 वनमाली वितनोतु मङ्गलानि ॥ ४ ॥ स जयति सिन्धुर-
 वदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ॥ वासरमणिरिव
 तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम् ॥ ५ ॥ वन्दामहे
 महेशानं चण्डकोदण्डखण्डनम् ॥ जानकीहृदया-
 नन्दचन्दनं रघुनन्दनम् ॥ ६ ॥ इन्दीवरदलश्याम-
 मिन्दिरानन्दकन्दलम् ॥ वन्दारुजनमन्दारं वन्देऽहं
 यदुनन्दनम् ॥ ७ ॥

आशीर्वादश्लोकाः ।

विघ्नेशो विधिरच्युतस्त्रिनयनो वाणी रमा पार्वती
 स्कन्दार्केन्दुकुजज्ञजीवभृगुजामन्दश्च राहुः शिखी ॥
 नक्षत्रं तिथिवारयोगकरणं मेपादयो राशय-
 स्ते रक्षन्तु सदैव यस्य विमलापत्री मया लिख्यते ॥ १ ॥
 श्रीमत्पद्मजिनीपतिः कुमुदिनीप्राणेश्वरो भूमिभूः
 शाशाङ्किः सुरराजवन्दितपदो देत्येन्द्रमंत्री शनिः ॥

स्वभानुः शिखिनां गणो गणपतिर्वह्नेशलक्ष्मीधरा-
स्ते रक्षन्तु सदैव यस्य विमला पत्री मया लिख्यते ॥२॥
आदित्यप्रमुखाश्च ये दिविचरास्तारागणैः संयुताः
मेपाद्यापि च राशयो गणपतिर्वह्नेशलक्ष्मीधराः ॥
गौर्याद्याः किल मातरोऽष्टवसवः शक्रश्च सप्तर्षयस्ते
रक्षन्तु सदैव यस्य विमला पत्री मया लिख्यते
॥ ३ ॥ कल्याणं कमलासनः स भगवान् विष्णुः
सजिष्णुः स्वयं प्रालेयाद्रिसुतापतिः सुतनयो ज्ञानं च
निर्विघ्नताम् ॥ चन्द्रज्ञास्फुजिदार्किभौमधिपणाच्छा-
यासुतैरान्विता ज्योतिश्चक्रमिदं सदैव भवतामायु-
श्चिरं यच्छतु ॥ ४ ॥ सूर्यः शौर्यमुखेन्दुरुच्चपदवीं
सन्मङ्गलं मङ्गलः सद्बुद्धिं च ध्रुवो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः
सुखं शं शनिः ॥ राहुर्बाहुवलं करोतु विपुलं केतुः
कुलस्योन्नतिं नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु भवतां सर्वे
प्रसन्ना ग्रहाः ॥ ५ ॥

तथाच ।

स्वस्ति श्रीसौख्यधात्री सुतजयजननी तुष्टिपुष्टिप्रदात्री
माङ्गल्योत्साहकर्त्री गतभवसदसत्कर्मणां व्यञ्जयित्री ॥
नानासम्पद्दिधात्री धनकुलयशसामायुषां वर्धयित्री
दुष्टापद्रिघ्नहर्त्री गुणगणवसतिर्लिख्यते जन्मपत्री ॥१॥
गणनाथो रविमुख्यस्त्रेचराः कुलदेवीविधिविष्णुशंकराः
उदयांशाधिपतिः प्रकुर्वतां चिरमायुः खलु यस्य पत्रिका

गणाधिपो, ग्रहाश्चैव गोत्रजा मातरो ग्रहाः ॥
 सर्वे कल्याणमिच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ ३ ॥
 जननी जन्मसौख्यानां वर्धिनी कुलसम्पदाम् ॥
 पदवी पूर्वपुण्यानां लिख्यते जन्मपत्रिका ॥ ४ ॥
 आदित्यादिग्रहाः सर्वे सनक्षत्राः सराशयः ॥
 दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ ५ ॥
 ब्रह्मा करोतु दीर्घायुर्विष्णुः कुर्याच्च सम्पदम् ॥
 हरो रक्षतु गात्राणि यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ ६ ॥
 वंशो विस्तरतां यातु कीर्तिर्यातु दिगन्तरे ॥
 आयुर्विपुलतां यातु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ ७ ॥
 यावन्मेरुर्धरापीठे यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ तावन्नन्दतु
 वालोऽयं यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ ८ ॥ उमा गौरी
 शिवा दुर्गा भद्रा भगवती तथा ॥ रक्षन्तु देवताः
 सर्वे यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ ९ ॥ अमरीकवरीभार-
 त्रमरीमुखरीकृतम् ॥ दूरीकरोतु दुरितं गौरीचरणप-
 द्मजम् ॥ १० ॥ जयति पराशरसूनुः सत्यवतीहृदयन्दनो
 व्यासः ॥ यस्यास्यकमलगलितं वाङ्मयममृतं जग-
 त्पिबति ॥ ११ ॥ जयति रघुवंशतिलकः कौशल्या-
 हृदयनन्दनो रामः ॥ दशवदननिधनकारी दाशराथिः
 पुण्डरीकाक्षः ॥ १२ ॥

इन श्लोकोमें इच्छानुसार श्लोक जन्मपत्रकी आदिमें
 लिगे ।

जन्मपत्रलेखनोदाहरण ।

आदौ गणेशाय नमस्करोमि विरञ्चिनारायण-
शंकरेभ्यः ॥ इन्द्रादयो देवगणाश्च सर्वे पश्चालिखे-
न्निर्मलजन्मपत्रीम् ॥ १ ॥ आयुःश्रीसुखकान्तिकी-
र्तिजननी माङ्गल्यपुष्टिप्रदा पुण्याहे विदिते सखेचर-
गणा लेख्या पटे पत्रिका ॥ दैवज्ञेन सुवृद्धिना विरचि-
ता जन्मादिसंसारिता ज्ञाते जन्मनि पूर्वजं कलिमलं
पत्री मया लिख्यते ॥ २ ॥ अथ श्रीमन्नृपवर-

चक्रचूडामणोर्विक्रमादित्यस्य राज्यतो गताब्दाः संवत्
१८४६ तदन्तर्गतश्रीमन्नृपतिशालिवाहन शाके १८११
तत्र प्रभवादिपष्टिसंवत्सराणां मध्ये चैत्रशुक्लादौ नर्म-
दोत्तरभागे गुरुमानेन प्लवनाग्नि संवत्सरे सौम्यायने
भास्करे वसन्तर्तौ मासोत्तमे वैशाखमासे शुक्लपञ्चे-
तिथौ द्वितीयायां गुरुवासरे घट्यादि० १। ५२ तदुपरि
तृतीयायां रोहिणीनक्षत्रे दंडादि ५७। ३२ शोभनयोगे
नाड्यो विनाड्यश्च २३। २७ परत अनिगण्डयोगे
तैतिलकरणे एवं परिशोधितपञ्चाङ्गशुद्धेऽहनि तत्र
दिनप्रमाणम् घट्यादि० ३२। ३८ रात्रिप्रमाणम् घट्या-
दि० २७। २२ अहोरात्रं पष्टिघट्यात्मकम् । तत्र मेषाऽ-
र्कगतांशाः १९ भोग्यांशाः ११ नक्षिने श्रीमूर्ध्यादया-
दिष्टम् घट्यादि० ३४। ०८ तदा तुल्यलघोदये नि

कुले कान्यकुब्जवंशे कश्यपगोत्रीयत्रिपाठ्युपनामक
 श्रीमत्पण्डितहंसारामात्मजस्वकुलकमलाहस्करोवल
 दीरामस्तत्पुत्रपण्डितवद्रीप्रसादस्तत्पत्नी शीला-
 लङ्कारधारिणी तथोभयकुलानन्ददायिनी पुत्ररत्न-
 मजीजनत् । तदभिधानभवकहडचक्रा नुसारेण रो-
 हिर्णानक्षत्रस्य तृतीयचरणो जननत्वादकाराक्षरे
 इकारस्वरे विद्याभूषणशर्मेति शुभम् उल्लापने तु द्वार-
 काप्रसादनामेति लोके प्रसिद्धः । देवदिजाशीर्वचना-
 चिरंजीवी सुखी च भूयात् ॥

जन्मलग्नम् ।



चन्द्रकुंडली ।



तथाच ।

शिखंडालंकारी युवतिपटहारी जलमुचां

त्विपां गर्वध्वंसी मलिलतरवंशीवरधरः ॥

यशोदामोदार्चि वदनविधुलोकेन प्रथयन्

स्वभक्ताज्ञापाली दिशतु वनमाली तव शिवम् ॥१॥

अथ श्री मन्मथराविक्रमाचार्य संयत् १९४२

तदन्तर्गतश्रीमच्छालिवाहनभूमर्तुदशाके १८०७ तत्र

मासोत्तमे आपाढे मामि शुक्ले पक्षे त्रयोदश्यां शुक्र-
वासरे घ० ५४। १४ मूलनामनक्षत्रे घ० ४३। ८ ऐन्द्रयोगे
१५। ३ परतः वैधृतियोगे कौलवनाग्नि करणे ८ एवंप-
ञ्चाङ्गे नत्र कर्काङ्कगतांशाः ९ तत्र दिनमानम् घ० ३२।
२८ रात्रिप्रमाणम् २७। ३२ अहोरात्रं षष्टिघट्यात्मकम् ।
तद्विने श्रीसूर्योयादिष्टम् घ० १६। ४५ तदा तुलालग्नोदयेऽंशः ७
अयोध्या (अवध) मण्डलान्तर्वर्तिलखीमपुरखीरीनि-
वासिन्योतिर्वित्पडितनारायणप्रसादसुत (प्रसिद्धनाम)
सीतारामस्य जन्म । तस्य होठाचक्राऽनुसारेण मूलनक्षत्रे
तृतीयचरणे मकाराक्षरे अकारस्त्ररे भगवानप्रसाद नामे
ति चिरंजीवी सुखी च भूयात भयात ३९।४ मभोग ६६। ०३ ॥

जन्माक्षम् ।



चन्द्रलम् ।



जन्मपत्रीप्रशंसा ।

श्रीजन्मपत्रीशुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भावि फलं समग्रम् ।
क्षपाप्रदीपेन यथा गृहस्थं घटादिजातं प्रकटत्वमेति ?

अर्थ—श्रीजन्मपत्रीरूप उत्तम दीपकसे होनेवाला
सम्पूर्ण फल प्रकाशित हो जाता है, जैसे चन्द्रमासे

अथवा रात्रिसमय दीपकसे घरके भीतर रक्खे हुए सब घट पट आदि पदार्थ प्रत्यक्ष दिखाई देने लगते हैं ॥ १ ॥

ग्रहा राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा राज्यं हरन्ति च ॥

ग्रहैर्व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ २ ॥

अर्थ—ग्रहही राज्यको देते हैं और ग्रहही राज्यको हर लेते हैं; ग्रहोंसेही यह सम्पूर्ण चराचर जगत् व्याप्त हो रहा है ॥ २ ॥

प्रायः जन अब इस आर्यावर्तदेशमें फलित ज्योतिष-के विषयमें शंका करते हैं कि—‘यह मिथ्या है, यह’ उन लोगोंकी भूल है. बहुतेरे तो फलितके गुणकोही नहीं जानते और जो जिसके गुणको नहीं जानता वह उसकी निरन्तर निन्दा करता है.

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तं सदा निन्द-

ति नात्र चित्रम् ॥ यथा किराती करिकुम्भ-

जातां मुक्तां परित्यज्य विभर्ति गुंजाम् ॥ ३ ॥

अर्थ—जो जिसके गुणको नहीं जानता है वह उसकी मदा निन्दा करता रहे तो इसमें आश्चर्यही क्या है ? जैसे भिल्लिनी गजमुक्ताओंको त्यागकर घुंघुचियोंको धारण करती है ॥ ३ ॥

हजारों लाखों जन्मपत्र और वर्षपत्र बनती हैं. यदि फलितमें गुण नहीं तो क्यों लोग बनवाकर उसका फल

जानकर अपने सहस्रों रूपये खर्च कर देते हैं ! सच्ची बात तो यह है कि—दो एक नास्तिक मत ऐसे चले हैं जो किसीको मानतेही नहीं; अपनी कहते हैं; दूसरेकी सुनतेभी नहीं है । हमारे प्राचीन आचार्योंने कहा है कि—

देशभेदं ग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषमपि ।

यः कथयति शुभाशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥४॥

अर्थ—देशभेद, ग्रहगणित, जातक इनको देखकर और अन्यभी समयानुसार बातोंको देखकर, जो शुभ अशुभ कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती ॥ ४ ॥

प्रत्यक्षं भास्करं देवं प्रत्यक्षं द्विजदैवतम् ॥

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं साक्षिणौ चन्द्रभाकरौ ॥५॥

अर्थ—भास्करदेव अर्थात् सूर्यनारायण प्रत्यक्ष और ब्राह्मणदेवता प्रत्यक्ष और ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष है जहां चन्द्रमा और सूर्य साक्षी हैं ॥ ५ ॥ सूर्यदेवसेही जगत्के सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होते हैं और जगत् सूर्यसेही स्थिर है. यदि सूर्य न हो तो जगत् नष्ट हो जाय. क्योंकि उष्णता और प्रकाश सूर्यहीका स्वरूप है. इन दोनोंके बिना जगत् स्थिर नहीं रह सकता । इसी प्रकार ब्राह्मण-देवता जगत्में प्रत्यक्ष है. पूर्व ब्राह्मणोंने कैसे कैसे उत्तम शास्त्र रचकर जगत्का उपकार, किया है ! आजकलके कुछ कुचाली भिक्षुक और मूर्ख ब्राह्मणोंने यद्यपि ब्राह्मणोंके

नाममें धब्बा लगाया है तथापि अबभी जो गुण विद्या बुद्धिका चमत्कार ब्राह्मणवर्णमें है वह अन्य वर्णमें नहीं देखा जाता, इसीसे ब्राह्मण अब भी जगद्गुरु कहाते हैं । एवं ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष है, ज्योतिषग्रन्थोंके द्वारा जो विचारकर बयलाया जाता है वह ठीक उतर जाता है, देखो इस बातके साक्षी चन्द्रमा और सूर्य हैं, जिस समय ग्रहण विचारा जाता है ठीक उसी समय सूर्य-चन्द्रग्रहण देखनेमें आता है, इससे बढकर प्रत्यक्ष और क्या हो सकता है ? ॥

व्याख्यान ।

यहां हम ज्योतिषविद्याके प्रत्यक्ष होनेमें एक व्याख्यान संक्षेप रीतीसे लिखते हैं । सम्पूर्ण प्रकाशवान् पदार्थोंका वर्णन जिस शास्त्रमें हो उसको ज्योतिषशास्त्र कहते हैं, जिस प्रकार प्रकाश होनेसे अंधकारमेंके सब पदार्थ स्पष्ट दीख पडते हैं उसी प्रकार ज्योतिषशास्त्रके प्रकाशसे भूत भविष्य वर्तमान फल प्रगट हो जाते हैं । इसमें बहुतेरे लोग यह कह उठते हैं कि—ज्योतिषको तो ब्राह्मणोंने दूसरोंको ठगनेके लिये बना लिया है और ग्रह जड पदार्थ होनेसे किसीको सुख दुःख नहीं पहुंचा सकते, क्योंकि सुख और दुःख कर्मके आधीन हैं, इसमें पहली बातका उत्तर यह है कि—पूर्वसमयमें ब्राह्मणलोग

ऐसे निर्लोभी थे कि—विना बुलाये कभी किसीके यहां नहीं जाते थे कि जिसको कुछ पूछनेकी आवश्यकता होती थी तो ब्राह्मणोंके समीप जाय, बड़ी नम्रतासे पूछता था और यह भारतभूमि विद्या और रत्नकी खानि थी जैसे आजकल ब्राह्मणलोग निर्धन हैं वैसे उस समय नहीं थे. विद्याके बलसे ब्राह्मणलोग देवताके समान माने जाते थे. इस कारण ब्राह्मणोंको ठगनेके लिये ग्रन्थ बनानेकी क्या आवश्यकता थी ? विद्यारूपी धन सब धनोंसे श्रेष्ठ है. 'विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।' विद्यारूपी धन जिसने प्राप्त किया उसको दूसरा धन तुच्छ जचता है. इस कारण यह बात निर्मूल है कि—ठगनेके लिये ज्योतिष बना लिया. ज्योतिष तो वेदके छः अंगोंमेंसे एक अंग है. जो लोग ब्राह्मणोंके महत्वको नहीं जानते वे लोग ऐसीही निर्मूल बात कह बैठते हैं । दूसरी बात-का उत्तर यह है कि—जिस प्रकार पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ये पांच तत्व सब जगत्में पूर्णरूपसे व्याप्त हैं, इनसे पृथक् जगत् नहीं, इसी प्रकार जगत्के सम्पूर्ण पदार्थोंका सम्बन्ध ग्रहोंसे है. उनमेंसे केवल सूर्यहीकी ओर ध्यान देके विचार किया जाय तो ज्ञात हो जाता है कि—सूर्यसे संसारके सब कार्य पूर्ण होते हैं. सूर्यकी उष्णतासे पाँड़ाभी होने लगती है और सूर्यकी

नहीं होता. जैसे चूना सपेद होता है और हलदी पीली होती है. दोनोंको मिलानेसे लाल रंग हो जाता है. यद्यपि इस प्रत्यक्ष लाल रंगका कारण, प्रत्येकको ज्ञात नहीं है, तथापि लाल रंग मिथ्या नहीं कहा जा सकता है. कारण न ज्ञात होनेसे ज्योतिषका प्रत्यक्ष फल मिथ्या नहीं हो सकता, क्योंकि—सबही कारण सबके समझमें नहीं आते, जैसे वैद्यकके ग्रन्थकारोंने लिखा है कि 'गुडूची ज्वरं निवारयति' कि गुर्च (गिलोय) ज्वर (बुखार) को निवारण (शान्त—करती है और डाक्ट्) ढरोंने अनुभव करके लिखा है कि—'कुनैन बुखारको दूर करती है' यहां किसी ज्वररोगीको गिलोय और कुनैनसे बुखार नहीं जाय तो गिलोय और कुनैनका गुण अथवा वैद्य और डाक्ट्टरका मत मिथ्या नहीं हो सकता उसमें कारण यही समझा जायगा कि औषधीके प्रयोगमें कुछ त्रुटि रह गई होगी ।

'गणितं फलितं चैव ज्योतिषं तु द्विधा मतम्' इति सूर्यसिद्धान्तः। फलितशास्त्रके कहनेवाले आचार्योंने भली भांति अनुभव करके फलितके ग्रंथोंको प्रकाशित किया है. बारंवार परीक्षा किये बिना फल नहीं लिखा गया. फलका निर्णय परीक्षानुसार है. कथित फल घटित न होय तो फलितशास्त्र मिथ्या नहीं हो सकता. इसमें विचार करनेवालेका दोष समझना चाहिये । ग्रहोंका प्रभाव सूक्ष्म है; वह प्रत्येक मनुष्यकी समझमें नहीं आ सकता है इस देशमें छः ऋतु (वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा,

उष्णतासेही शिकालमें शरीरसे शीतवाधा दूर होकर, मुख पहुँचता हैं, यद्यपि सुख दुःख कर्माधीन हैं तथापि ग्रह उसके सूचक हैं, जैसे किसी प्राणघातकको फांसीकी आज्ञा राजाने दी और उस आज्ञाको किसी राजकर्मचारीने प्राणघातकके सन्मुख आकर सूचित किया तो यहां राजकर्मचारी, सूचक हुआ और फांसी तो उसके कर्मसे मिली, तथा जैसे दीपकके प्रकाशसे अंधकारमें धरी हुई वस्तु देख पडती है और दूँढनेसे मिल जाती है तो उस वस्तुको धरनेवाला दीपक नहीं है दीपकने तो उस वस्तुको दिखा दिया, एवं यात्रासमय जैसे नकुलका दर्शन हुआ और आगे चलकर सौ रुपये मिल गये तो नकुलने वे रुपये नहीं दिये, रुपये तो कर्मानुसार मिले, नकुल उन रुपयोंके मिलनेका सूचक था, वस, इसी प्रकार समग्र लेना चाहिये कि—फल कर्मके आधनि होता है परन्तु उसके बतानेवाले ग्रह होते हैं, पूर्वकर्माजित फल देखनेमें नहीं आता; उसको दिखानेवाले ग्रह हैं ऐसा जानना ।

प्रायः जन यहभी कहते हैं कि ग्रहोंके फलसूचक होनेमें प्रमाण और युक्ति कुछ नहीं है, इसका उत्तर यह है कि--‘कारणाभावे कार्याभावः’ अर्थात् कारणके न होनेसे कार्यका अभाव जानना, विना कारणके कार्य

नहीं होता. जैसे चूना सपेद होता है और हल्दी पीली होती है. दोनोंको मिलानेसे लाल रंग हो जाता है. यद्यपि इस प्रत्यक्ष लाल रंगका कारण प्रत्येकको ज्ञात नहीं है, तथापि लाल रंग मिथ्या नहीं कहा जा सकता है. कारण न ज्ञात होनेसे ज्योतिषका प्रत्यक्ष फल मिथ्या नहीं हो सकता. क्योंकि सचही कारण सबके समझमें नहीं आते, जैसे वैद्यकके ग्रन्थकारोंने लिखा है कि 'गुडूची ज्वरं निवारयति' कि गुर्व (गिलोय) ज्वर (बुखार) को निवारण (शान्त—करती है और डाक्ट्) ढरोंने अनुभव करके लिखा है कि--'कुनैन बुखारको दूर करती है' यहां किसी ज्वररोगीको गिलोय और कुनैनसे बुखार नहीं जाय तो गिलोय और कुनैनका गुण अथवा वैद्य और डाक्ट्ढरका मत मिथ्या नहीं हो सकता उसमें कारण यही समझा जायगा कि औषधीके प्रयोगमें कुछ शुटि रह गई होगी ।

'गणितं फलितं चैव ज्योतिषं तु द्विधा मतम्' इति सूर्यसिद्धान्तः । फलितशास्त्रके कहनेवाले आचार्योंने भली भांति अनुभव करके फलितके ग्रथोंको प्रकाशित किया है. वारंवार परीक्षा किये बिना फल नहीं लिखा गया. फलका निर्णय परीक्षानुसार है. कथित फल घटित न होय तो फलितशास्त्र मिथ्या नहीं हो सकता. इसमें विचार करनेवालेका दोष समझना चाहिये । ग्रहोंका प्रभाव सूक्ष्म है; वह प्रत्येक मनुष्यकी समझमें नहीं आ सकता है इस देशमें छः ऋतु (वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा,

शरद्, हेमन्त, शिशिर) हैं. दो दो महीनेकी एक एक ऋतु होती है. दो दो ऋतु मिलकर एक एक काल होता है. जैसे वसन्त और ग्रीष्मऋतु मिलकर उष्णकाल (गरमी) और वर्षा शरद् ऋतु मिलकर वर्षाकाल (बरसात) तथा हेमन्त शिशिरऋतु मिलकर शीतकाल (जाड़ा) कहाता है. उष्णकाल, वर्षाकाल, शीतकाल ये तीनों काल ग्रहोंसे सम्बन्ध रखते हैं. जब सूर्य वृषराशिपर आता है तब मनुष्यकी प्रकृतिमें उष्णताकी वृद्धि होती है और महामारिका कोप होता है. आर्द्रानक्षत्रकी श्वान योनि है. जब आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य आता है तब श्वानों (कुत्तों) को जलभयरोग हो जाता है. जब कन्याराशिपर सूर्य आता है तब विषमज्वरका प्रकोप होता है. जब ऋतु ठीक होती तब मनुष्यभी प्रसन्नचित्त और आरोग्यशरीर रहता है. जब ऋतु तीक्ष्ण हो जाती है तब मनुष्योंके शरीर शिथिल और रोगग्रस्त हो जाते हैं. जाड़ोंमें जाड़ा, गरमियोंमें गरमी और बरसातमें बरसात जब नहीं होती तब मनुष्यादि प्राणियोंको दुःख पहुँचता है इससे जान लेना चाहिये कि—मनुष्यादि समस्त प्राणियोंके सुख और दुःखका कारणरूप ऋतु हैं और ऋतुकर्ता ग्रह हैं. जो सूर्यके समीप उष्ण-कटिबंधमें रहते हैं व लोग उष्णताके कारण प्रायः काले होते हैं. जैसे बंगाली आदि । सूर्यमुखी सूर्यहीकी ओरको अपना मुख रखती है. अर्क (मदार) वृक्ष जेष्ठमासमेंही प्रफुल्लित रहता है और वर्षाऋतुमें सुख जाता है. पाटलका पुष्प

सूर्यके अस्त होतेही मुरझा जाता है. यह सूर्यका प्रभाव संक्षेप रीतिसे कहा. अब चन्द्रमाका प्रभाव सुनो. चन्द्रमाका नाम उदधिसुतभी है तो जैसे पुत्रको देखकर पिताका उत्साह बढ़ता है इसी प्रकार चन्द्रमाको पूर्ण देखकर उदधि (समुद्र) उमंगने लगता है. उसकी लहरें बहुत ऊंची उठने लगती हैं. जिसको ज्वार भाटा कहते हैं. देखो चन्द्रमाकी कलाओंके अनुसार बिलावके नेत्रकी पुतली कमती बढ़ती होती रहती हैं. अनारका बीज जिस तिथिको बोया जाता है उसी तिथिकी संख्याके अनुसार उतनेही वर्षतक अनार स्थित रहता है. शुक्लपक्षमें मटर बोई जानेसे सदा हरी भरी बनी रहती है. चन्द्रमाकी वृद्धिमें जो बीज बोया जाता है वह वृद्धिको प्राप्त होता है और फूलता है. कृष्णपक्षकी अपेक्षा शुक्लपक्षमें बोया बीज अधिक फूल फलसे युक्त होता है । कुमोदिनी रात्रिकोही फूलती है. मधुमक्खी फूलोंसे रसको शुक्लपक्षमें ग्रहण करती है और उसको संचयकरके कृष्णपक्षमें पान कर लेती है. इससे यह सूचित हुआ कि--शुक्लपक्षमें चन्द्रमाकी वृद्धिके साथ फूलोंमें रसकी वृद्धि होती है. तब उस प्रकृतिहीसे पूर्ण हुए पुष्परसको मधुमक्खी ग्रहण कर लेती है और कृष्णपक्षमें चन्द्रमाके क्षीण होनेसे पुष्पमें रस क्षीण हो जानेके कारण रसका संचय नहीं करके संचित किये रसका पान कर जाती है. तात्पर्य यह है कि--सूर्य और चन्द्रमाका प्रभाव जगत्के सम्पूर्ण पदार्थोंपर पड़ता है. देखो, पश्चिमोत्तर (वायव्य) दिशामें यूरोपदेश

है वहां मेघराशि बहुत समीप है और मेघराशिका स्वामी मंगल है. मंगलका रंग लाल है इसी कारण मंगलकी राशिके प्रभावसे वहांके निवासी लाल रंगके होते हैं. इसी प्रकार अन्य बुध आदि ग्रहोंका प्रभावभी समझ लेना चाहिये. ज्योतिषशास्त्रमें पूर्ण रीतिसे अभ्यास करनेवाले ज्योतिषीलोक मनुष्यका शरीर देखकर, जन्मसमयके ग्रह जन्मसंवत्, जन्ममास, जन्मपक्ष-तिथि, वार, नक्षत्र, योग, लग्न और जन्मसमयकी घटी और पल बतला देते हैं. इससे यह सिद्ध हुआ कि-मनुष्यके शरीरमें ग्रहोंका प्रभाव पूर्ण रीतिसे वर्तमान है हाथकी रेखा देखकरके जन्मसमयके ग्रह आदि बतलाकर भूत भविष्य वर्तमान फल कहा जा सकता है. इस प्रमाणसेभी यही सिद्ध है कि-मनुष्यशरीर ग्रहोंसे बना है. इसी कारण जन्मसमयके ग्रहों की स्थिति जाननेमें आती है. प्राणियोंके शरीरकी आकृति ग्रहोंसे जैसी बनती है वैसीही जन्मसमयके ग्रहोंसे ज्ञात हो जाती है. परमात्माने ग्रहोंको प्रकृतिके अनुसार जितनी दूरीपर जो ग्रह चाहिये उतनी दूरीपर उसको स्थापित किया है. इतने दूर होनेपरभी सम्पूर्ण जगत्में ग्रहोंका प्रकाश है. यद्यपि ग्रह नव और राशि बारह हैं तथापि उनकी स्थितिके असंख्यात भेद हैं इसी कारण एक मनुष्यके तुल्य दूसरेका रूप रंग स्वभाव आदि नहीं देखा जाता है. ग्रह किसीपर प्रसन्न और अप्रसन्न नहीं होते. कर्मानुसार शुभाशुभ फलके सूचक होते हैं जिस ग्रहका जो स्वभाव है वह बदल नहीं सकता. जैसे सूर्यका स्वभा-

व है उष्ण है, चन्द्रमाका शीतल है तो सूर्य शीतल और चन्द्रमा उष्ण नहीं हो सकता. यहां बहुतेरे जन यह कहने लगते हैं कि—गणित ठीक है और फलित ठीक नहीं. इसका उत्तर यह है कि—गणितको वृक्ष जानो और फलितको उस वृक्षका फल समझो. यदि फलितको नहीं मानोगे तो गणितरूपी वृक्ष फलहीन समझा जायगा, बिना फलका वृक्ष शोभा नहीं देता. गणित और फलितका परस्पर सम्बन्ध है. आपके नहीं माननेसे फलित वृथा नहीं हो सकता जैसे किसीने किसीको एक सौ रुपये एक रुपये सैकड़ा व्याजपर साढे चार वर्षके लिये दिये तो गणितसे जाना गया कि चौवन रुपये व्याजके हुए, तो गणितसे चार वर्षका द्रव्यप्राप्तिरूप फल पहलेहीसे ज्ञात हो गया कि चार वर्षमें चौवन रुपये प्राप्त होंगे. आकाशमें स्थित सूर्यचन्द्रग्रहण पहलेहीसे ज्ञात हो जाता है, यही प्रत्यक्ष फल है. ग्रहोंकी दशा अन्तर्दशा और आयुर्दाय गणितसे लगाकर जो बताते हैं सो सब ठीक उसी अनुसार फल प्राप्त होता है जैसा कि फलित पुस्तकोंमें लिखा होता है. यदि किसी समय फल नहीं मिले तो विचारमें भूल रह जानेका अनुमान कर लेना चाहिये और फलितमें देश, कुल, जाति और धन आदिकी भी अनुमान कर लेना चाहिये. हां, एक बात अवश्य है कि आजकलके नवीन ज्योतिषियोंने कुछ अनुभव करके दो चार ऐसे नवीन ग्रन्थ रच दिये हैं कि उनके

फलमें शंका उत्पन्न होती है । इसीसे यह श्लोक कहा गया है० । की—

शकुनं शपथं चैव ज्योपितंच चिकित्सिम् ॥

कलौ चत्वारि राजेन्द्र भवन्ति न भवन्ति च ॥ १ ॥

अर्थात् शकुन, शपथ, ज्योतिष और, चिकित्सा, हे राजेन्द्र ! कलियुगमें ये चारों होते हैं और नहीं होते हैं जैसे जिस शकुनके देखनेसे एक समय कार्य हो गया दूसरे समय उसी शकुनसे कार्य नहींभी होता है, किसी समय शपथ (सगन्धौ) से हानि पहुंचती है और किसी समय हानि नहीं होती, किसी समय उसी प्रश्नसे मुट्ठी मेंकी वस्तु बतादी जाती है किसी समय उसी विचारसे भेद पड जाता है, किसी समय जो औपधी दी जाती है वह गुणकरती है, वही औपधी दूसरी बार गुण नहीं करती है, परन्तु यहाँपर समय और कर्म तथा भेदाभेद अथवा प्रयोगमें त्रुटिका रह जाना ऐसा मानना चाहिये । २ ।

विना फलितके गणित नहीं और विना गणितके फलित नहीं, गणित नाम गणना करनेका है और गणना करनेसे जो उत्तर (जवाब) आता है, वही फल है, फलितशास्त्रका प्रचार इस देशमें बहुत कालसे है, रामकुंडली कृष्णकुंडली अवकतक प्रचलित हैं, प्राचीन इतिहासग्रन्थोंमेंभी फलित का वर्णन है, मुसलमान लोगोमें शियालोग फलितको भली भांति मानते हैं, यूरुपमें नेपोलियन बोनापार्टी नामवाले ज्योतिषी फलितका एक ग्रंथ अंगरेजीमें बना गया है, जो कलकत्तामें छपा है

और आजकलभी उसका प्रचार है. ओक्सफोर्ड निवासी मोक्षमूलर प्रोफेसर फलित ज्योतिषको मानते थे. तारणी-प्रसाद ज्योतिषी जो कलकत्तेमें रहते हैं, वह अंगरेजोंके ज्योतिषी हैं और प्रतिवर्ष भविष्य फल अंगरेजी अखबारों में छपाया करते हैं. ज्योतिष्यके फलितकी सत्यता में अनेकानेक प्रमाण हैं, यदि पूर्ण प्रकारसे इसके विषयमें लिखा जाय तो एक बड़ा ग्रन्थ बन जाय इस कारण यहां इतना नहीं लिखना उचित है।

जन्मपत्रीका फल जिन ग्रन्थोंसे कहा जाता है, उन ग्रन्थोंको जातक ग्रन्थ कहते हैं. जातकमें अनेक ग्रन्थ हैं, परन्तु कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है जिसमें जन्मपत्री बनानेकी सरल रीति दर्शाई हो. इस कारण हमने यह जन्मपत्री प्रदीप नामक ग्रन्थको लिखनेका साहस किया है। इस ग्रन्थमें दो जन्मपत्री उदाहरणार्थ लिखी हैं पहली जन्मपत्री हमारे एक सुयोग्य शिष्य पण्डित द्वारकाप्रसाद-त्रिपाठी लखीमपुरनिवासीकी है और दूसरी 'जन्मपत्री हमारे धर्मपुत्र सीतारामपुस्तकालयाध्यक्ष लखीमपुरनिवासीकी है। इस ग्रन्थमें पहली कुंडलीके ग्रहभाव आदि उदाहरणमें लिखे जायेंगे सो ध्यान रहे।

यद्यपि जन्मपत्रीका बनाना बिना गुरुके उपदेशके नहीं आता, क्योंकि कई एक ऐसीभी बातें हैं कि समझकर लिखनेपर भी समझमें नहीं आतीं तथापि इस पुस्तकसे विद्यार्थियोंको बहुत सहायता प्राप्त होगी।

लग्नसारणीसाधन ।

प्रथम लग्नसारणीसाधन करने (बनाने) की रीति दर्शाते हैं सो इस प्रकार कि अपने अपने देशके लग्नप्रमाणसे लग्नसारणी बन जाती है। प्रत्येक साधारण पण्डितभी अपने अपने देशका लग्न प्रमाण जानता है, इस कारण यहां प्रति स्थानके लग्नप्रमाणको लिखनेकी आवश्यकता नहीं है, लग्नसारणी बनानेके लिये लग्नप्रमाण जाननेकी परम आवश्यकता है, लग्नप्रमाण जाननेकी रीति ज्योतिषके सिद्धान्तग्रन्थोंमें इस प्रकार लिखी है कि प्रथम पुलमा बनावै; फिर चरखंडसाधन करै, अनन्तर लंकोदयसे घटा बढाकर स्वदेशोदय बना लेवै, परन्तु इस लिखनेकी यहां कुछ आवश्यकता नहीं, क्योंकि अपने अपने स्थानका लग्नप्रमाण सब पण्डित लोग जानते हैं इस कारण हम अपने नैमिष मंडलके राश्यादय (लग्न प्रमाण) से लग्नसारणी बनाना लिखते हैं । यथा—

नैमिषमण्डले लग्नप्रमाण ।

नागेन्दुदस्ता २१८ विधुवाणदस्ता २५१ रामाभ्ररामा ३०३ गुणवेद रामा ३४३ ॥ सप्ताब्धि रामा ३४७ वसुराम रामा ३३८ क्रमोत्क्रमान्मेपतुलादिमानम् ॥ १ ॥

अर्थ— मेपका उदय प्रमाण २१८ पल अर्थात् ३ घटी ३८ पल, वृषका उदय प्रमाण २५१ पल अर्थात्

जन्मपत्रप्रदीपः.

कि जिस राशिका जितने अंशपर सूर्य उदय होता है, वही लग्न उतने अंश सूर्योदय समय जानना. जितने पल सूर्योदयसे शुक्त होते हैं उतने पल लग्नके शुक्त हो जाते हैं जब लग्नके सब पल शुक्त हो जाते हैं तब दूसरी लग्नका प्रवेश हो जाता है. छः लग्न दिनमें और छः लग्न रात्रिमें व्यतीत होती हैं. एक राशिके तीस अंश होते हैं सो अपने प्रमाणमें तीसो अंश व्यतीत हो जाते हैं. यहां मेषका उदय प्रमाण २१८ पल है इनको तीस अंशोंमें बांट दिया अर्थात् तीसका भाग दिया तो एक अंशपर ७ पल १६ विपल मेष लग्न रही. वृषका उदय २५१ पलको तीस अंशोंमें बांटा तो एक अंशपर ८ पल २२ विपल हुए. इसी प्रकार मिथुन आदिके पलात्मक चालनांक जानने. यहां अयनांश २१ मानकर सारिणी रची गई है इस कारण मीनके दश गतांशसे प्रारंभ किया है सो सारणीमें स्पष्ट देख ले ७ पल १६ विपलसे स्थापित है, आगे तीस अंश अर्थात् मेषके नवगत दशवें अंश पर्यन्त ७ पल १६ विपल संयुक्त करते चले गये हैं. तो मेष लग्न प्रमाण ३ घटी ३८ पल वहां धरे हैं. अनन्तर वृषका चालनांक ८ पल २२ विपल जोड़ना प्रारंभ किया है. एवं लग्न सारणी बन गई, लग्न देखनेसे उसके बनानेकी रीति समझमें आजाती है आगे सारणी लिखते हैं.

[illegible]

यह उपलब्ध आत्मानः परतन्निष्ठः ही है जो नमिष दुर्दय-पचागोमं निः

लग्नसारणीपरसे लग्नज्ञान-

इष्टार्क राश्यंशतले घटीपले स्वामीष्टनाडीपल
संयुतंच ॥ यद्वाशिभांगस्यतलेस्थितं भवेत्त
देव लग्नंच कलाऽनुमानतः ॥ २ ॥

अर्थ:- इस समय सूर्य राशिके अंशके नीचे घटीपल
संख्यानें इष्ट कालीन घटी पलकी संयुक्त करे, संयुक्त
करनेसे जो अंक आवे वे अंक जिस राशिके अंशके
नीचे स्थित होंवे, वही कलाओंके लग्न जानना. औ
र उतनेही अंश आनना. यहां कला अनुमानसे क-
ल्पित करना. ॥ २ ॥ अंश सहित लग्न जाननेकी यह
साधारण रीति है.

उदाहरण.

जैसे द्वारका प्रसादकी जन्मपत्रीमें मेषके सूर्यके गतांश
१९ हैं और इष्ट काल घटीपल ३४।८ हैं तो लग्नसारणीमें
मेष राशिके १९ अंशके नीचे अंक ५।१।४८ हैं यह अंक
इष्ट कालमें संयुक्त कर दिये तो ३९।९।४० यह अंक हुए-
सो तुलाके २७ गतांशके नीचे ३९।६।१२ अंक हैं तो तु-
ला लग्नके २७ गतांश जन्म समयमें हुए अब कलाओं-

जन्मपत्रप्रदीपः.

का अनुमान कर लेना है कुछ कला सूर्यशिसे अधिक जानलेना चाहिये और कुछ कला लग्नके एक अंश प्रमाणके कलाओंके अनुसार चन्द्रिको प्राप्त हुए जान लेना चाहिये यह अनुमानसें लग्नज्ञान वर्णन किया. लग्न स्पष्टकी रीति आगे लिखेंगे परंतु यह सदा ध्यान रहे कि।

यस्मिन् राशौ सदा सूर्यस्तलग्नमुदये भवेत्॥

तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नं तदुच्यते ॥ ३ ॥

अर्थ:-

जिस राशिपर सूर्य स्थित होते हैं वही लग्न सूर्योदयसमय होती है और जितने अंश सूर्यके भुक्त होते हैं उतनेही लग्नके भी भुक्त हो जाते हैं और उससे सातवीं लग्न सूर्यके अस्त समयमें होती है उसको अस्त लग्न कहते हैं ॥ ३ ॥

जिस प्रकार स्वदेशोदय प्रमाणसे लग्नसारणी बनती है उसी प्रकार लंकोदय प्रमाणसे दशमसारणी बन जाती है. दशमसारणीमें इष्टकालके स्थान नत ग्रहण किया जाता है, आगे दशमसारणी लिखते हैं.

दशमसारणी.

[illegible]

दशमसारिणीसे दशम लग्नज्ञान ।

दशमसारिण्यां इष्टार्कराग्यंशतलस्थघटीपलेषु
नतनाडीपलसंयुतं यदंकं भवति यद्राशिभागस्य
तले स्थितं तदेव दशमं ज्ञेयम् ॥ ॥ ॥

अर्थ—दशमसारिणीमें सूर्यराशिके अंशके नीचे घटीपलसंख्यामें नत घटीपलको जोड़ देवे, जोड़नेसे जो अंक आवे वे अंक जिस राशिके अंशके नीचे स्थित हों वही दशमलग्न जानना, कभी कभी यह चौथी लग्न आती है, इसमें ६ जोड़ देनेसे दशम हो जाती है ।

उदाहरण ।

जैसे, द्वारकाप्रसादकी जन्मकुंडलीमें दशम ल्यावना है तो दशमसारणीमें मेपके सूर्यके १९ अंशके नीचे ६।२७।३८ अंक हैं इनमें नत घटी पल १२।११ संयुक्त करनेसे १८।३८।३८ अंक हुए, तो दशमसारणीमें मिथुनके २८ अंशके नीचे १८।३५।२० अंक हैं तो यहां दशमलग्न मिथुनके गतांश २८ हुए, नतसाधनका प्रकार आगे वर्णन किया जायगा और दशमभाव स्पष्ट करनेकी रीति आगे लिखेंगे ।

ग्रहसाधनार्थ चालनप्रकार ।

प्रस्तारस्तु यदाग्रे स्यादिष्टं संशोधयेद्गणय ॥

इष्टकालो यदाग्रे स्यात्प्रस्तारं शोधयेद्गणय ॥ २॥

अर्थ--जन्मसमयमें सूर्य आदि ग्रहोंको स्पष्ट करनेके अर्थ प्रथम चालन प्रकार लिखते हैं--तिथिपत्र अर्थात् पंचांगमें जो आठ आठ दिनके सूर्य आदि ग्रह स्पष्ट किये होते हैं उसको प्रस्तार ^{पंक्ति} और पंक्ति कहते हैं. सो प्रस्तार यदि इष्टकाल अर्थात् जन्मसमयसे आगे होवे तो प्रस्तारके वारघटीपलमें इष्टसमयका वारघटीः पल घटा देवे. जो शेष रहै वह वारादि ऋणचालन होता है और जो इष्ट काल आगे होवे और प्रस्तार पीछे होवे तो इष्टकालात्मक वारघटीपलमें प्रस्तारका वारघटीपल घटा देवे तो शेष अंक वारादि धनचालन होता है ॥ ४ ॥

ग्रहस्पष्टीकरण ।

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निष्णी खपदहता ॥
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥ ५ ॥

अर्थ--^{१ गुणार्थ} गत और ^{२ दिना} ऐष्यदिवसोंकरके, अर्थात् ऋणचालन वा धनचालनसे ग्रहकी गतिको गुणा करे, फिर गोमूत्रिकारीतिसे साठका भाग देवे. भाग देनेसे जो अंश कलाविकलात्मक लब्ध होवे उसको पंचांगस्थ ग्रहमें घटा देवे वा युक्त करे अर्थात् ऋणचालन होने तो घटावे और धनचालन होने तो युक्त करे. युक्त करने व घटानेसे वह तात्कालिक स्पष्ट ग्रह होता

है. परन्तु, जो ग्रह चक्री हो तो धनचालन और ऋण चालनको उलटा समझना. अर्थात्, ऋणचालन हो तो युक्त कर देना और धनचालन हो तो घटा देना और राहु केतु सर्वदा चक्री रहते हैं अर्थात् उलटेही चलते हैं. और इन दोनों ग्रहोंकी गति सद, एकसी रहती है. घटती बढ़ती नहीं. राहुसे केतु और केतुसे राहु सातवीं राशिपर रहता है सो जानना ॥ ५ ॥

तथाच ।

गतावधिदिनादिना विगतमिष्टकालं धनं
ऋणं तु खलु गम्यपंक्तिषु त्यजेत्स्ववारादिकम् ॥
अनेन गुणिता गतिश्च खरसैर्हृदंगादिकं
विपर्ययविलोमगेष्वधिग्रहैः स्फुटा संस्कृता ॥ ६ ॥

अर्थ—गत अवधिके दिन आदिकको इष्टकालमें घटा देनेसे धनचालन होता है. और गम्यवाली पंक्तिमें अपने इष्ट वार आदिकको घटा देनेसे ऋणचालन होता है. इस ऋणचालन अथवा धनचालन को ग्रहकी गतिसे गुण देवे और गोमुत्रिका रीतिके अनुसार साठिका भाग देवे, जो लघ्व अंश आदिक आवे उनको पंचांगस्थ ग्रहमें युक्त करे अथवा घटावे तो ग्रह स्पष्ट हो जाता है, आगे ग्रहस्पष्टका उदाहरण लिखते हैं ॥ ६ ॥

पंचांगस्थ ग्रह ।

ति० ३० मं० मिश्रमान ४६।१६ दिनमा. ३२।३२								
उ.	स्त	उ.	स्त	उ.	उ.	स्त	स्त	उदयास्त
सू.	म.	सू.	घृ.	सू.	श.	रा.	के.	ग्रह
००	१	००	८	००	३	२	८	राशि
१७	००	२७	१७	१२	२१	२२	२२	अश
५०	४६	१५	१४	१६	२४	४८	४८	फल
५१	१९	३१	४०	२८	१७	०७	०७	विक.
५८	४९	१०८	२	१९	२	३	३	गति.
०४	५१	१	८	१७	४८	६१	११	विग
मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा	व.	घ	घनमार्ग

ग्रहसाधनोदाहरण ।

यहाँ प्रस्तार अमावास्या मंगलवारका है और मिश्र-
मान अर्थात् प्रस्तारका इष्ट समय ४६।१६ घटी पलका है और जन्म द्वितीया गुरुवारका है और इष्टकाल घटीपल ३४।८ है तो जन्मकालका इष्टकाल आगे है और प्रस्तार पीछे है, तो जन्मके इष्टकालमें प्रस्तार घटाया जायेंगा, इष्टकालके वार घटी पल ५।३४।८ में प्रस्तारका वार घटीपल ३।४६।१६ घटाया तो शेष १।४७।५२ यह वारादि धनचालन हुआ अर्थात् १ वार ४७ घटी ५२ पल ये धनचालनांक हैं । सूर्यकी गति ५८ विगति ४ है, इसके धनचालनांक १।४७।५२ से गोमूत्रिकारीत्यनुसार गुणन

किया तो गुणनफल योग ५८।२७३०।३२०४। २०८ हुआ
प्रथम २०८ में ६० का भाग दिया तो लब्ध ३, शेष

गामूनि	वार	घटी	पल	
कारीति	१	४७	५२	धनचालन
गति५८	५८	२७२६	३०१६	गुणनफल
		१	४७	५२ धनचा०
गिति ४		४	१८८	२०८ गु.फ.
योग	५८	२७३०	३२०४	२०८
	४६	५३	३	२८
मश १	१०४	२७८३	३२०७	
	४४	३८३	२०७	
	कला	मि. ३३	२७	

मश—कला—त्रिकला

१ ३३ २३ लब्ध मशदि.

यद्वा धनचालन है अतः पचागस्थ सूर्यमें युक्त किया जायगा.

०।१७।५०।५१ पचागस्थ राश्यादि सूर्य १।१४।२३ लब्धराशिदि

०।१९।३५।१४ यह सप्तसूर्यराशि हवे, ॥

२८ रहे. लब्ध ३ को ३२०४ में युक्त किया तो ३२०७
हुए. इनमें ६० का भाग दिया तो लब्ध ५३, शेष २७

रहे. लब्ध ५३ को २७३० में युक्त किया तो २७८३ हुए. इनमें ६० का भाग दिया तो लब्ध ४६, शेष २३ रहे. लब्ध ४६ को ५८ में जोड़ दिया तो १०४ हुए, इनमें ६० का भाग देनेसे लब्ध १ शेष ४४ रहे. तो १ अंश, ४४ कला, २३ त्रिकला ये लब्ध अंशादिक हुए. यहां सूर्य मार्गी है और धनचालन है. अतः पंचांगस्थ राश्यादि सूर्यमें युक्त कर देनेसे स्पष्टराश्यादि सूर्य हो जायंगे. तो पंचांगस्थ सूर्यराश्यादि०० । १७ । ५० । ५१ में लब्धांशादि १ । ४४ । २३ युक्त किये युक्त करनेपर ०० । १९ । ३५ । १४ राश्यादिस्पष्ट सूर्य हुए. इसी प्रकार मंगलआदि राहुपर्यन्त ग्रहोंके स्पष्टकी रीति है. ऋणधनचालन और वक्र मार्ग ग्रहका विचार रखकर जोड़ने घटानेका ध्यान रहे । आगे चन्द्रमाके स्पष्टकी रीति लिखते हैं ।,

चन्द्रसाधनार्थ भयातभभोगप्रकार ।

गतर्क्षनाढ्यः खरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ॥ भयात्तसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाढ्या सहिता भभोगः ॥ ७ ॥ चेत्स्वेष्टकालात्प्रागेव ऋक्षं यदि समाप्यते ॥ तदेष्टकालतो ऋक्षनाढ्यः शोध्य गतर्क्षकम् ॥ भभोगः पूर्ववत्कार्यः ततः साध्यस्तु चन्द्रमाः ॥ ८ ॥

अर्थ—अब पंचांगस्थ नक्षत्रसे चन्द्रमाके साधन करनेका प्रकार वर्णन करते हैं. तहां प्रथम भयातभभोग-साधन लिखते हैं । गतनक्षत्रघडीपलको साठमें घटा देवे, जो घडी पल शेष रहें उनको सूर्योदयसे इष्ट घडी पल-में जोड़नेसे जो अंक हों उनकी भयात संज्ञा होती है और अपने नक्षत्रकी घडीपलको साठमें घटाई हुई घडी पलमें जोड़ देनेसे भभोग होता है ॥ ७ ॥

यदि इष्ट कालसे पहलेही नक्षत्र समाप्त हो जावे तो इष्टकालघडीपलमें नक्षत्रघडीपल घटा देनेसे भयात होता है और गत नक्षत्रकी घडीपलको साठमें घटाकर उसीमें परदिनवाली घडी पल जोड़ देनेसे भभोग हो जाता है. इस प्रकार भयातभभोग बनाकर चन्द्रमा स्पष्ट करना० ॥ ८ ॥

तत्कालचन्द्रसाधन ।

गता भघटिका स्वतर्कगुणिता भभोगोद्धृता युता च भगतेन पष्टि ६० गुणितेन द्वि २ घ्नी कृता ॥
नवाप्तलवपूर्वके शशिभवेत्तु तत्पूर्वकैर्नवांवरवियद्-
जाच्चि ४८००० यु भवेज्जवा कीर्तिता ॥ ९ ॥

अर्थ—जन्मनक्षत्रकी गतघटिका अर्थात् भयातघडी-पलको साठसे गुणा करे फिर उसमें भभोग अर्थात् इष्टनक्षत्रकी सम्पूर्ण घडीपलसे भाग देवे, भाग देनेसे

लब्ध अंक मिलें उन घडीपलविपलात्मक तीन अंकोंको स्पष्ट भयात जाने, फिर उन अंकोंको साठसे गुणे हुए आश्विनी आदि गतनक्षत्र संख्यामें जोड़ देवे और दूने करे अर्थात् दोसे गुणा देवे फिर नवसे भाग लेवे भाग लेनेपर जो लब्धांक मिलें सो अंश जाने शेष अंकोंको साठसे गुणा कर नवसे भाग लेनेपर लब्धांकको कला जाने शेषको साठसे गुणाकर नवका भाग लेके लब्धांकको विकला जाने अंशोंमें तीसका भाग देके राशि निकाल लेवे, अब गति विगति व्यावनेका प्रकार वर्णन करते हैं कि ४८००० अडतालीस हजारको साठसे गुणा करनेपर २८८०००० अठ्ठाईस लाख अस्सी हजार हुए इनमें भभोगसे भाग लेवे भाग लेनेपर जो लब्ध अंक मिलें उनको चन्द्रमाकी गति जाने शेषको साठसे गुणा करके भभोगसे भाग लेनेपर जो लब्धांक मिलें वह विगति जाने भभोगघडियोंको साठसे गुणाकर पल जोड़के जैसे पल बनाये वैसेही, ४८००० घट्यात्मक अंकोंको साठसे गुणकर पल बनानेका अभिप्राय यहां है इस प्रकार चन्द्रमाके स्पष्ट करनेकी रीति वर्ण करी आगे उदाहरण दर्शाते हैं ॥ ९ ॥

चंद्रसाधनोदाहरण ।

अब चंद्रमाके स्पष्ट करनेका उदाहरण वर्णन करते

हैं। जन्मसमय इष्टघडी ३४ पल ८ हैं उस दिन रोहिणी नक्षत्र ५७ घडी ३२ पल है तो रोहिणी जन्म-नक्षत्र है गत नक्षत्र कृत्तिका हुआ कृत्तिका-नक्षत्र पूर्व दिन ५१ घडी ८ पल है साठमें घटानेसे ८ घडी ५२ पल रोहिणी पूर्व दिनमें मिला सो इसमें इष्टकाल ३४ घडी ८ पल जोड़ देनेसे ४३ घडी ०० पल यह भयात अर्थात् रोहिणी नक्षत्रकी मुक्त घडी जानना, अब पूर्व दिन रोहिणीनक्षत्रकी प्राप्त ८ घडी ५२ पलमें ५७ घडी ३२ पल जो जन्मदिनमें हैं सो जोड़ देनेसे घडी ६६ पल २४ यह भोग अर्थात् सर्वर्क्ष (रोहिणीनक्षत्रकी सम्पूर्ण घडीपलका प्रमाण) जानना, अब भयातघडी पल ४३ । ०० को पल ६० से घडी ४३ को गुणा तो २५८० हुए. यहां पल शून्य हैं, इससे २५८० पल भयातके हुए और भोग घडी ६६ को साठसे गुणा तो ३९६० में २४ युक्त किये तो ३९८४ पल भोगके हुए. अब भयात और भोगके पलोंसे चन्द्रमा स्पष्ट करना है तो भयात पल २५८० को ६० से गुणा किया. गुणा करनेसे १५४८०० एक लाख, चौवन हजार, आठ सौ ये भाज्यांक हुए. इनको भोगसे उद्धृत किया अर्थात् भोग पल ३९८४ भाजकांकसे भाग लिया तो लब्ध ३८ घट्यात्मक अंक हुए. शेष ३४०८ को ६० से गुणा किया तो, भाज्यांक २०४४८० दो लाख, चार हजार, अस्सी हुए.

इनमें भाजकांक ३९८४ से भाग लिया तो, लब्ध ५१ पला-
त्मक अंक हुए. शेष १२९६ को ६० से गुणा किया तो,
भाज्यांक ७७७६० सतहत्तर हजार, सात सौ साठ हुए.
इनमें भाजकांक ३९८४ से भाग लिया तो, लब्ध, १९
विपलात्मक अंक हुए. अर्थात् ३८।५१। १९ यह
घट्यादि स्पष्ट भयात हुआ. इसमें अश्विन्यादि गत-
नक्षत्र (कृत्तिका) संख्या ३ को ६० से गुणा किया तो
१८० हुए. इनको स्पष्टभयातमें युक्त किया तो २१८।
५१। १९ अंक हुए. इनको द्विगुणा किया तो ४३७। ४२
३८. यहां पहले अंकसे दूसरा दूसरा जो अंक होता है,
वह ६० से भाग देके लब्धांक जोड़ दिया जाता है.
क्योंकि, यहां यह अंक घट्यादि हैं. अब ४३७ में नवका
भाग दिया तो लब्ध ४८ अंक अंशात्मक हुए. शेष ५
को ६० से गुणा तो ३०० हुए. इनमें ४२ जोड़ दिये तो
३४२ हुए. इनमें नवका भाग दिया तो लब्ध ३८
अंक कलात्मक हुए. शेष ० रहा. अब अंक ३८
रहा उसमें नवका भाग दिया तो लब्ध ४ अंक
विकलात्मक हुए. अंशांक ४८ में ३० का भाग लेनेपर
लब्ध १ राशि और शेष १८ अंश हुए. तो अब
१। १८। ३८। ४ यह राश्यादि स्पष्टचन्द्र हुआ. अर्थात्
भेषगत वृषके १८ अंश, ३८ कला, १४ विकला चन्द्र-
माके स्पष्ट जानना. अब आगे गतिविगतिप्रकार कहते
हैं. कि २८००० को साठसे गुणा तो २८८०००० हुए.

इनमें भभोगपल ३९८४ से भाग लिया तो लब्ध ७२२ गति और शेष ३५५२ को ६० से गुणा तो २१३१२० हुए। इनमें भभोगपल ३९८४ से भाग लिया तो लब्ध ५३ विगति हुई अर्थात् चद्रमाकी कलात्मक गति और विकलात्मक विगति ७२२। ५३ हुई, चद्रमा एक राशिपर, सवा दो नक्षत्र अर्थात् नवचरणपर्यन्त रहता है और एक चरणपर ३ अंश २० कला तक रहता है, इसी गणनासे जितने चरण राशिके भुक्त हो चुके हो उतने गिनकर इसी रीतिके अनुसार जान लेवे। आगे ग्रहस्पष्टचक्र लिखते हैं।

धनचालन वारादि १। ४७। ५२ भयातघट्यादि
४३। ०० भभोगवत्यादि ६६। ३२,

॥ अय सूर्यादयो ग्रहाः स्पष्टाः सजवाः ॥

उ.	उ.	स्त.	उ.	स्त.	उ.	उ.	स्त.	स्त.	उ०६१
सू.	चं.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.	रा.	के.	मि.
००	१	१	१	८	००	३	२	८	रा.
१९	१८	२	००	१७	११	२१	२२	२२	अं.
३५	३८	३	२९	१०	५१	२९	४२	४२	क.
१४	४	३१	४२	४९	४८	१९	२१	२४	वि.
५८	७२२	४२	१०८	२	१९	२	३	३	ग.
४	५३	५१	१	९	७७	४८	११	११	वि.
मा	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.मा

स्पष्टग्रहैर्विना ये च निगदन्ति कुबुद्धयः ॥ दशा
चान्तर्दशादीनां फलं यान्त्युपहास्यताम् ॥ १० ॥

अर्थ—सूर्यादि ग्रहोंके स्पष्ट किये विना जो कुबु-
द्धिवाले जन दशा अन्तर्दशाका फल कहते हैं वे उप-
हासको प्राप्त होते हैं अर्थात् उनकी हँसी होती है।
कारण यह कि--ग्रहगणित नहीं जाननेवालेका वचन
मिथ्या होता है, विना ठीक अंशादिके जाने नवांश
आदिमें भेद पड जाता है और फल ठीक नहीं उत-
रता। इसके प्रमाणमें एक श्लोक ' देशभेदं ग्रहगणितं '
पूर्व लिख चुके हैं ॥ १० ॥

तथाच ।

विनाग्रहास्पष्टतैर्नकिञ्चित्फलं प्रवक्तुं नितरं क्षमः स्यात् ॥

अर्थ—ग्रहोंके स्पष्ट किये विना पंडितजन कुछभी
फल कहनेको समर्थ नहीं होता है ॥

उदये राज्यदा ज्ञेया वक्रे देशाटनप्रदाः ॥

मार्गे चारोग्यकर्तारो ह्यस्ते मानार्थनाशकाः ॥ ११ ॥

अतो एतानां गगनेचराणां सप्ताधनं वग्मि गुरोपदेशात् । यत् उप-
रोक्ता भाषा है.

भाग लेनेसे लब्धांकको अंश जाने, शेषको साठसे गुणाकर दो सौका भाग लेवे, जो लब्धांक हों उनको कला जाने, शेषको साठसे गुणाकर दो सौका भाग लेनेपर लब्धांकको विकला जानना, इस प्रकार अयनांशसाधन करे और जिस महीनेका तत्काल अयनांश ल्यावना होय उस महीनेकी सूर्यराशिको तिगुना करके उसका आधा जोड़कर विकला जानकर अयनांशके विकलात्मक अंकोंमें संयुक्त कर देवे तो तात्कालिक अयनांश होते हैं ॥ १३ ॥

अयनांशसाधनोदाहरण ।

इष्ट शाके १८११ में ४२१ घटाये तो १३९० रहे, इनको तिगुना किया तो ४१७० हुए, इनमें २०० का भाग लिया तो लब्ध २० अंश हुए, शेष १७० को ६० से गुणा किया तो १०२०० हुए, इनमें दोसौका भाग लिया तो लब्ध ५१ कला हुए, शेष ०० रहा तो अयनांश २० । ५१ । ०० अंशादि भये, यहां वैशाखमासमें मेषराशिके सूर्य हैं, तात्कालिक अयनांश ल्यावना है तो मेषराशिकी संख्या १ को तिगुना किया तो ३ हुए, इसका आधा १ । ३० जोड़ देनेसे ४ । ३० विकलात्मक अंक हुए, जो अयनांशमें विकलात्मक अंक नहीं है, तो २० । ५१ । ४ तात्कालिक अयनांश जानिये, विकलाके

आगेके ३० अंक निरर्थक जानकर छोड़ दिये. इस प्रकार तात्कालिक अयनांश साधन प्रकार कहा, अब आगे लग्नसाधन लिखते हैं ।

लग्नसाधन ।

तत्कालार्कः सायनस्तस्य भोग्येर्भागेर्निघ्नः स्वो-
दयः खाभिभक्तः ॥ भोग्यं जह्यादिष्टनाडीपले-
भ्यः शेषादभ्यात्स्वोदयांश्चावशेषम् ॥ १४ ॥
त्रिंशन्निघ्नमशुद्धाल्पभागाद्यं मेपपूर्वकैः ॥ अशुद्धा
आग्रहेर्युक्तं लग्नं स्याद् व्ययनाशकम् ॥ १५ ॥

अर्थ—अब भोग्यकालसे लग्नसाधन प्रकार लिखते हैं कि—जिस समयका लग्न बनाना चाहे उस समयके स्पष्ट-सूर्यमें तत्काल अयनांश युक्त करे तो उसकी सायनार्क संज्ञा होती है. उस राश्यादि सायनार्कमेंसे राशिका त्याग करके जो अंशादिक फल रहे उसको भुक्त कहते हैं. उस भुक्तको ३० अंशमें कम कर देनेसे शेषको अंशा-दि भोग फल कहते हैं. उन भोग्यांशोंको स्वदेशीयउद-यराशिप्रमाणसे गुणा करे. जो गुणाकार आवे उसमें ३० का भाग देवे. भाग देनेसे जो लब्ध अंक मिले, सो सूर्यके भोग्य अंक पलादि होते हैं. उस भोग्यको इष्ट घटीपलोंमें घटा देवे. घटा देनेसे जो शेष रहे उसमें आगेके स्वदेशीय उदयराशियोंको घटादेवे. जिस राशिका

उदयप्रमाण न घटे वही अशुद्ध राशि हुई, अब घटाने-
से जो पलात्मक अंक शेष रहे उनको तीससे गुणा करके
अशुद्ध राशिके उदयप्रमाणसे भाग लेवे, भाग लेनेसे
जो लब्ध अंशादि मिलें उन अंशादिकोंको मेषादि
अशुद्ध राशियोंसे पूर्व राशियोंकी संख्यामें युक्त कर
देवे और अयनांशोंको घटा देवे तो राश्यादि स्पष्ट लग्न
होती है ॥ १४ ॥ १५ ॥

भोग्याऽल्पकात्स्वत्रिघ्नात्स्वोदयात्पलवादियुक् ॥

रविरेव भवेत्लग्नं सप्तभार्कान्निशातनुः ॥ १६ ॥

अर्थ—जो भोग्यकाल थोडा होवे अर्थात् इष्ट घटी-
पलमें नहीं घटे तो इष्ट घटी पलको तीससे गुणा करे,
अनन्तर सायनसूर्यके राश्युदयसे भाग लेवे, भाग लेनेसे
जो अंशादिक लब्ध मिलें उनको सूर्यमें संयुक्त कर देवे,
संयुक्त कर देनेसेही लग्न स्पष्ट हो जाती है, और रात्रिके
विषे दशम लग्नके साधनमें छः राशियोंको सूर्यमें युक्त
कर पूर्वोक्त प्रकार दशम लग्न सिद्ध होती है ॥ १६ ॥

भोग्यकालसे यह लग्नसाधनकी रीति कही, भुक्तका-
लसे लग्नसाधन करनेमें उलटी रीति लेने पडती है,
रीति जान लेनेपर कुछ कठिनता नहीं है, तथापि भो-
ग्यकालकी रीति सरल है जो दीर्घ समझमें आ जाती है ।

दशमसाधन ।

एवं लंकोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ॥

पूर्वपश्चान्नतादन्यत्प्राग्वदशमं भवेत् ॥ १७ ॥

अर्थ—जिस प्रकार लग्न स्पष्ट की गई, इसी प्रकार पूर्वोक्त रीतिसे सायनार्किक भुक्तकाल व भोग्यकालको ग्रहण कर अंशादिकोंको दशमभाव स्पष्ट करनेके अर्थ लंकोदयराशिप्रमाणसे गुणा करे और ३० से भाग लगाकर पलादिको ग्रहण करे, फिर उन भुक्त वा भोग्यपलात्मक अंकोंको पूर्वनत वा पश्चिमनतसे शोधन करे और शेष सब क्रिया पूर्व कहे अनुसार करे तो दशमभाव स्पष्ट हो जाता है, अर्थात् जब पूर्वनत होय तब पूर्वनतको इष्टकाल कल्पना करके उसीमें लंकोदयी राशियोंसे सूर्यके भुक्तकालको बनाकर शोधन करे और सम्पूर्ण शेष क्रिया ऋणलग्नके समान करे और जब पश्चिमनत होवे तो पश्चिम नतकोही इष्टकाल कल्पना करके उसीमें लंकोदयी राशियोंसे सूर्यके भोग्य कालको बनाकर शोधन करे अन्य सब क्रिया धनलग्नके समान करे तो दशमभाव सिद्ध होता है ॥ १७ ॥

लग्नसाधनोदाहरण ।

स्वदेशादयः प्रमाण		
मेघ	२१८	मीन
वृष.	२५१	कुम्भ
मिथु.	३०३	मकर
कर्क	३४३	धनु
सिंह	३४७	वृश्चि.
कन्या	३३८	तुल.

अब लग्न बनानेका उदाहरण लिखते हैं, स्पष्ट सूर्य राश्यादि ०० । १९ । ३५ । १४ इसमें तात्कालिक अयनांश २० । ५१ । ४ युक्त करनेसे १ । १० । २६ । १८ यह सायनार्क तात्कालिक भया, यहां राशि १ को छोड़कर मुक्त अंशादि १० । २६ । १८ को ३० में घटाया तो १९ । ३३ । ४२ यह भोग्यांश हुए, अय सायनार्क वृषराशिका है तो वृषका उदयप्रमाण २५१ पल है, इनसे भोग्यांशादिको गुणा क्रिया तो ४७६९ । ८२८३ । १०५४२ अंक पलादि हुए, यहां विपल व प्रतिपलको साठसे चढ़ाकर पलोंमें जोड़ दिये तो ४९०९ । ५८ । ४२ हुए, इनमें ३० का भाग लिया, भाग करनेसे लग्न १६३ । ३९ । ५७ ये सूर्यके भोग्यपलादि अंक हुए, इनको इष्टनाडीपल ३४ । ८ के पलात्मक अंक २०४८ में घटानेसे शेष अंक १८८४ । २० । ३ शेष रहे, इनमें

मिथुनका उदय ३०३ घटाया तो १५८१ । २० । ३ रहे
 फिर कर्कके उदय ३४३ को घटाया तो शेष १२३८ । २० । ३
 रहे. फिर सिंहके उदय ३४७ के घटानेसे ८९१ । २० । ३
 शेष रहे, अनन्तर कन्याके उदय ३३८ को घटानेसे ५५३ ।
 २० । ३ शेष रहे, तदनन्तर तुलाके उदयप्रमाण ३३८
 घटानेसे शेष २१५ । २० । ३ अंक रहे अब इसमें
 वृश्चिकका उदयप्रमाण ३४७ नहीं घटनेसे वृश्चिक-
 की अशुद्ध संज्ञा हुई तो शेष २१५ । २० । ३ को तीससे गु-
 णा दिया तो ६४५० । ६०० । ९० यहां ९० को साठसे चढा-
 या तो लब्ध १ को ६०० में जोडा ६०१ हुए, शेष ३०
 रहे, ६०१ को साठसे चढाया तो लब्ध १० को ६४५० में
 जोड दिया तो ६४६० हुए, शेष १ तो अंक हुए, ६४६०
 १ । ३० इसमें अशुद्ध संज्ञक वृश्चिकके उदय ३४७ से
 भाग दिया तो लब्ध १८ । ३७ । ०० अंशादिक अंक हुए
 इसमें अशुद्धकी गतराशिसंख्याको जोड दिया
 तो ७ । १८ । ३७ । ०० यह राशिसहित अंशकला विकला-
 त्मक अंक हुए, इनमें तात्कालिक अयनांश २० । ५१ । ४
 को घटा दिया तो ६ । २७ । ४५ । ५६ यह राश्यादि
 स्पष्ट लग्न अर्थात् जन्मसमय तुलालग्नके २७ अंश, ४५
 कला, ५६ विकला हुए यह भोग्यांशादिपरसे लग्न
 स्पष्ट करनेका उदाहरण कहा, यदि मुक्तांशादिपरसे लग्न

स्पष्ट करनेकी इच्छा हो तो सब गणित पूर्वोक्त अनुसार करना, केवल भेद इतना है किं भुक्तांशोंको ग्रहण कर स्वोदयराशिप्रमाणसे गुणाकर तीसका भाग देके लब्ध अंक सूर्यके भुक्तपलादि हुए, उनको इष्ट घटी पलके पलात्मक अंकोंमें घटाकर शेष अंकोंमें पिछाडीकी राशियोंके उदय प्रमाणको घटावे, घटाते घटाते जिसका उदय-प्रमाण न घटे उसको अशुद्ध जाने और जिस राशितक घटाया वह राशि शुद्ध हुई, अब घटानेसे जो शेष अंक रहें उनको ३० से गुणाकर देवे और अशुद्धोदयसे भाग लेवे जो लब्ध अंश आदि मिलें उनको अशुद्धोदयकी राशिसंख्यामें घटा देवे, अनन्तर उसमें अयनाश घटा देवे तो शेषराश्यादि स्पष्ट लग्न होती है, यदि भुक्त पलादि इष्ट घटी पलमें न घटे तो इष्ट पलोंको तीससे गुणा करके सायनार्क राश्युदयसे भाग लेवे, जो लब्ध अंशादिक मिलें उनको सूर्यमें घटा देवे तो स्पष्ट लग्न होती है, यहां रात्रिलग्न बनाना हो तो छः राशि युक्त कर देवे तो रात्रिलग्न स्पष्ट हो जाती है ॥

दशम व चतुर्थलग्नसाधनार्थं नतसाधन ।

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् ॥ दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं चुरात्रिखण्डं त्वपरं नतं स्यात् ॥ १८ ॥

अर्थ—अब दशम व चतुर्थ लग्न साधनके अर्थ नतसाधन कहते हैं दिनरात्रिखण्डमें दिनरात्रिकी इष्ट कालघटी घट जानेसे पूर्वनत होता है अर्थात् दिनार्धमें दिनगत इष्ट घटी घट जावे तो दिवा पूर्वनत होता है और रात्रिखण्ड (रात्र्यर्द्ध) में रात्रिगत घटी घट जावे तो रात्रिका पूर्वनत होता है तथा दिन रात्रिकी इष्ट घटीमें दिनरात्रिखण्ड घट जावे तो दिनरात्रि परनत होता है अर्थात् दिनगत इष्ट घटीमें दिनार्ध घट जावे तो दिवा परनत और रात्रिगत इष्ट घटीमें रात्रिखण्ड घट जावे तो रात्रिपरनत होता है ॥ १८ ॥ ॥ ॥

यहां यह बात स्मरण रहे कि जहां रात्रिगत घटी कहा वहां सूर्यास्तके उपरान्त गत घटी ग्रहण करना दिनरात्रिका विभाग करके नतसाधन करना क्योंकि मध्याह्न वा मध्यरात्रिके विन्दुसे पूर्व वा परके नीचेके भागका नाम नत है, इस नतको तीसमें घटानेसे शेष घट्यादि उन्नत होता है, ॥

केशवमतसे नतोन्नतप्रकार ।

रात्रेः शेषमितं युतं दिनदले नान्होगतं शेषकं
विश्लेष्यं खलु पूर्व पश्चिमनत त्रिशच्चयुतं चोन्नतम्॥
यत्पूर्वोन्नतपट्टभयुक्तविरतः पश्चान्नतादित्यतो ।
यल्लङ्कोदयकैश्च लग्नमिव तन्माध्यं सपङ्गम्
सुखम् ॥ १९ ॥

अर्थ—केशवाचार्यजीके मतसे नत उन्नतका प्रकार वर्णन करते हैं कि, दिनमें पूर्वनत, दिनमें पश्चिमनत, रात्रिमें पूर्वनत, रात्रिमें पश्चिमनत ऐसा चार प्रकारका नत होता है, तहां अर्धरात्रिके उपरान्त शेष रात्रिमें दिनार्ध युक्त करनेसे रात्रिका पूर्वनत होता है, और अर्ध रात्रिके पूर्वरात्रिगतमें दिनार्ध युक्त करनेसे रात्रिका पश्चिमनत होता है, ऐसेही दिनगत और दिनशेषका दिनार्धके साथ अन्तर करना अर्थात् दिनगत घटीपलको दिनार्धघटीपलमें घटानेसे दिनका पूर्वनत, और दिनशेष अर्थात् मध्यदिनके ऊपरका इष्ट होय तो इष्टकालघटीपलमें दिनार्ध घटीपल घट देवे तों दिनका पश्चिमनत होता है, उस नतको तीसमें हीन करे तो वैसाही उन्नत होता है, अर्थात् पूर्वनत कम करनेसे पूर्वोन्नत होता है, और पश्चिमनत कम करनेसे पश्चिमोन्नत होता है, यदि पूर्वोन्नत आया होतो उन्नतको इष्ट काल मानकर तात्कालिक सूर्यमें ६ राशि युक्त करके लंकोदयप्रमाणसे पूर्वोक्त लग्नसाधनकी रीतिके अनुसार दशमसाधन करे और पश्चिमनत आया हो तो नतको इष्ट काल कल्पना करके लग्नके प्रमाण लंकोदयसे दशमभाव साधन करे दशमभावमें ६ राशि युक्त करनेसे चतुर्थ भाव होता है, इस श्लोकमें 'अन्होगतं शेषकं'

यहां शेषकं इस शब्दसे अनेक पंडित दिनकी शेष घटी-
लेकर नत साधन करते हैं ऐसाभी ठीक है, मध्यादिनके
उपरान्त जन्म होनेपर इष्टकालकीभी यहां शेषसंज्ञा
मानी है उसमें दिनार्ध घट जानेसे दिनका पश्चिम
नत होता है इसका प्रमाण हम पूर्व नीलकंठमतानु-
सार लिख चुके हैं, दूसरा प्रमाण पञ्चतिचिन्तामणिका
लिखते हैं ॥ १९ ॥

दिनार्धयुक्त्रात्रिगतावशेषनाड्येनतंपश्चिमपूर्वकं
स्यात् ॥ द्युयातहीनं द्युदलं नतं प्राक् द्युस्वण्ड-
हीने द्युगतं परं तत् ॥ २० ॥

अर्थ—रात्रिगत घटि पलमें दिनार्ध घटी पल युक्त
करे तो रात्रिका पश्चिमनत और रात्रिशेष घटीपलमें
दिनार्ध घटी पलयुक्त करे तो रात्रिका पूर्वनत, होता है
तथा दिनार्धघटीपलमें दिनगत घटी पल घट जानेसे
दिनका पूर्व नत और दिनगत घटी पलमें दिनार्ध घटी
पल घट जावे तो दिनका परनत होता है ॥ २० ॥

मध्यान्हे चार्धरात्रे वा स्वेष्टकालो यदा भवेत् ॥
तदा तात्कालिकः सूर्यो भवेत्लग्नं सत्तुर्यकम् ॥ २१ ॥

अर्थ—जो ठीक मध्यान्हसमयमें अपना इष्टकाल हो
तो तात्कालिक स्पष्ट सूर्य दशममात्र होता है, और

जो ठीक मध्यरात्रि अपना इष्टकाल हो तो तात्कालिक स्पष्ट सूर्य चतुर्थ भाव होता है ॥ २१ ॥

लंकोदयप्रमाण ।

लंकोदयाविघटिकागजभानि २७८ गौकादसा २९९
स्त्रिपक्षदहना ३२३ क्रमतोत्क्रमस्थः ॥ हीनान्वि-
ताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैर्मेपादितोद्धृत उत्क्रम-
गस्विमे स्युः ॥ २२ ॥

अर्थ—लंकोदयराशिप्रमाणपल मेघ आदिसे २७८ ।
२९९ । ३२३ मिथुनतक फिर कर्कसे उत्क्रमपूर्वक ३२३ ।
२९९ । २७८ कन्यातक अनन्तर तुलासे मीनपर्यंत २७८ -
२९९ ३२३ । ३२३ । २९९ । २७८ पल जानना इन
लंकोदयपलप्रमाणमें क्रमशः चरखंड घटाने और जोड़ ।
देनेसे स्वदेशोदय मेपादि राशियोंका पलप्रमाण तैयार
हो जाता है ॥ २२ ॥

नतसाधनोदाहरण ।

लंकोदय लग्नप्रमाण यंत्र ।		
मेघ	२७८	मीन
वृषभ	२९९	धुम्भ
मिथुन	३२३	मकर
कर्क	३२३	घनु
सिंह	२९९	शुद्धिक
कन्या	२७८	तुला

किया तो ६३९१ । ४ । ० ये अंक हुए, इसमें अशुद्ध संज्ञक कर्कके लंकोदयग्रमाण ३२३ से भाग दिया तो लग्न १९ । ४७ । ११ अंशादिक अंक हुए इसमें अशुद्धकी गत राशिसंख्याको जोड़ दिया तो यह ३ । १९ । ४७ । ११ राश्यादि अंक हुए इसमें तात्कालिक अयनांश २० । ५१ । ४ को घटाया तो २ । २८ । ५६ । ७ यह राश्यादि दशमभाव स्पष्ट हुआ, यहां दशभाव नवीं लग्न आई है ।

धनादिभावसाधन ।

लग्नं चतुर्थात्संशोध्य शेषपङ्क्तिर्विभाजितम् ॥

राश्यादि योजयेल्लग्नं सन्धिः स्याल्लग्नवित्तयोः २३ ॥

सन्धिः पडंशसंयुक्तो धनभावो भवेत्स्फुटः ॥

धनभावः पडंशाढ्यः सन्धिर्धनतृतीययोः ॥ २४ ॥

पडंशः संयुतः सन्धिस्तृतीयो भाव उच्यते ॥

पडंशाढ्यस्तृतीयः स्यात्सन्धिर्भातृचतुर्थयोः ॥ २५ ॥

अर्थ—लग्नको चतुर्थभावमें घटानेसे जो शेषांक हों उनमें छः का भाग देवे अर्थात् लग्न व चतुर्थके अन्तरका पष्ठांश (छठा भाग) लेवे वह पष्ठांश राश्यादि लग्नमें जोड़ देवे तो लग्नकी विरामसन्धि और धन भावकी आरंभसन्धि होती है ॥ २३ ॥ उस सन्धिमें पष्ठांश युक्त करनेसे धनभाव स्फुट होता है, धनभावमें पष्ठांश जोड़ देनेसे धनभावकी विराम अर्थात् समाप्तिसन्धि और

तृतीय भावकी आरंभसन्धि होती है ॥ २४ ॥ उस सन्धिमें पष्ठांश युक्त करनेसे तृतीयभाव कहा है, फिर तृतीय भावमें पष्ठांश जोड़ देवे तो तृतीय भावकी विरामसन्धि और चतुर्थ भावकी आरम्भसन्धि होती है ॥ २५ ॥

तृतीयसंन्धिरेकादशस्तुर्यसन्धिर्भवेदिह ॥

द्व्यादशस्तृतीयभावोऽपि पुत्रभावो भवेत्स्फुटः ॥ २६ ॥

ज्याद्व्यो द्वितीयसन्धिः स्यात्सन्धिः पञ्चमभावजः ॥

घनभावो वेदयुतो रिपुभावः प्रजायते ॥ २७ ॥

लघसन्धिः पञ्चयुतः सन्धिः स्याद्रिपुभावजः ॥

लघाद्याः सन्धिसहिता भावाः पद्माशिसंयुताः ॥

सप्तमाद्या भवन्तीह भावाः सर्वे सप्तम्ययः ॥ २८ ॥

अर्थ—तृतीय भावकी सन्धिमें एक जोड़ देवे तो वह चतुर्थ भावकी सन्धि होती है, ओर तृतीयभावमें दो जोड़ देनेसे पुत्र (पंचम) भाव स्फुट होता है ॥ २६ ॥ दूसरे भावकी सन्धिमें तीन जोड़ देनेसे पंचम भावकी सन्धि होती है, घनभावमें चार युक्त करनेसे रिपु (छठा) भाव होता है ॥ २७ ॥ लघुकी सन्धिमें पांच युक्त करे तो रिपुभावकी सन्धि होती है, सन्धिसहित लघादिक भावोंमें छः छः राशि संयुक्त करनेसे सप्तम आदिक सब भाव सन्धिसहित होते हैं ॥ २८ ॥

धनादिभावसाधनोदाहरण ।

लग्नराश्यादि ६ । २७ । ४५ । ५६ चतुर्थभाव राश्यादि
 ८ । २८ । ५६ । ७ तो चतुर्थभावमें लग्नको घटाया अर्थात्
 लग्न चतुर्थका अन्तर २ । १ । १० । ११ इसमें छः का
 भाग दिया अर्थात् छठा भाग निकाला इसीको षष्ठांश
 कहते हैं, तो षष्ठांश हुआ राश्यादि. ० । १० । ११ ।
 ४१ । ५० इसको लग्नमें युक्त किया तो ७ । ७ । ५७ ।
 ३७ । ५० यह लग्नकी विरामसन्धि और धनभावकी आ-
 रंभसन्धि हुई, इसमें षष्ठांश युक्त किया तो ७ । १८ ।
 ९ । १९ । ४० यह धनभाव हुआ इसी प्रकार षष्ठांश
 जोड़ते जानेसे चौथे भावतक भाव बन जानेपर आगे
 जो कम पूर्वोक्त श्लोकार्थमें कह चुके हैं, उस रीतिसे
 साधन कर लेवे, यहां चतुर्थ भावके आगे भाव ऐसेभी
 बन जाते हैं कि षष्ठांशको एक राशि अर्थात् तीस अं-
 शमें घटा देवे और चतुर्थ भावसे आगे जोड़ता जाय
 तो रिपुभावकी सन्धितक भाव बन जाते हैं, जैसे षष्ठांश
 ० । २० । ११ । ४१ । ५० है इसको एक राशिमें
 घटाया तो ० । १९ । ४८ । १८ । १० ये अंक हुए इसको

षष्ठांशो नितैक कहते हैं, जब छः भाव सन्धिसहित स्पष्ट हो जाय तब उनमें छः छः राशि युक्त कर देवे तो नीचे-के भाव घन जाते हैं जैसे लग्न ६ । २७ । ४५ । ५६ । में छः युक्त करनेसे ० । २७ । ४५ । ५६ । सप्तम भाव होता है, एवं सब भावोंके स्पष्टकी रीति भावस्पष्टयंत्रमें देखकर समझ लेना, ॥

भावसाधनप्रयोजन ।

जन्मप्रयाणेत्रतवन्धचौलनृपाभिपेकादिकरग्रहेषु ॥
एवं हि भावाः परिकल्पनीयास्तैरेव योगो-
त्थफलानि यस्मात् ॥ २९ ॥

अर्थ—जन्मसमय, प्रयाण (यात्रासमय) में और व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत), चौल (मुंडन), राज्याभिषेक, करग्रह (विवाह) इन कार्योंमें भावसाधन करे क्योंकि तन्वादि भावोंमें ग्रहोंके योगसे कार्यानुसार फल होता है, अर्थात् भाव और ग्रहोंसे उत्पन्न फल बिना तन्वादि भाव स्पष्ट किये ठीक प्रकारसे जाननेमें नहीं आता अतः भाव अवश्य स्पष्ट करने चाहिये ॥ २९ ॥

तथाच ।

न च वक्तुं फलं किञ्चिद्भावस्पष्टतरैर्विना ।

भावाधीनं जगत्सर्वं जन्तूनां जन्मकालजम् ॥

तस्माद्वादशभावानां यंत्रमेददिहाङ्कितम् ॥ ३० ॥

अर्थ—भावोंको भली भाँति स्पष्ट किये विना, कुछ फल कहनेको उद्यत नहीं होना चाहिये, क्योंकि भावाधीन सब जगत् है जन्तुओंके जन्मकालसे उत्पन्नफल भावोंद्वारा सूचित होता है, इस कारण तन्वादि द्वादश भावोंका यंत्र (चक्र) यहां हम लिखते हैं, ॥ ६० ॥

भावलेखनप्रकार ।

तात्कालिकअयनांश २० । ५१ । ४ सायनार्कराश्यादि १ । १० । २६ । १८ अस्थ भोग्यांशादि १९ । ३३ । ४२ रवोदयाद्रवेर्भोग्यं पलादि १६३ । ३९ । ५७ । स्पष्टलमं राश्यादि ६ । २७ । ४५ । ५६ रात्रौ पूर्वततं घट्यादि १२ । ११ लंकोदयाद्रवेर्भोग्यं पलादि १९४ । २७ । ४२ स्पष्टदशमं राश्यादि २ । २८ । ५६ । ७ सप्तमं चतुर्थं राश्यादि ८ । २८ । ५६ । ७ लग्नचतुर्थयोरन्तरम् २ । १ । १० । ११ अस्य पष्ठांश ० । १० । ११ । ४१ । ५० पष्ठांशो नितैकम् ० । १९ । ४८ । १८ । १० ।

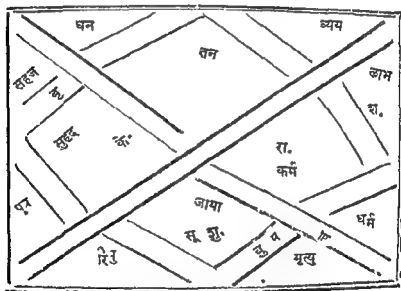
तन्वादयो द्वादश भावाः ससन्धयः ।

त.	स.	ध.	स.	स.	स.	सु.	स.	पु.	स.	रि.	स.	भावाः
१	७	७	७	८	८	८	९	१०	१०	११	००	राशि
२७	७	१८	२८	८	१८	२८	१८	८	२८	१८	७	अश
४६	५७	९	२१	१२	४४	५६	४४	३२	२१	९	५७	मज्ज
५६	३७	१९	१	४३	२५	७	२५	४३	१	१९	३७	विफ.
	५०	४०	३०	२०	१०		१०	२०	३०	४०	५०	

जा.	त.	ध.	स.	स.	स.	क.	स.	ख.	स.	व्य.	स.	भावा.
००	१	१	१	२	२	२	३	४	४	५	९	राशि
२७	७	१८	२८	८	१८	२८	१८	८	२८	१८	७	अश
४६	५७	९	२१	१२	४४	५६	४४	३२	२१	९	५७	मज्ज
५६	३७	१९	१	४३	२५	७	२५	४३	१	१९	३७	विफ.
	५०	४०	३०	२०	१०		१०	२०	३०	४०	५०	

विना चलितचक्रेण न वदेद्भावजं फलम् ॥ त-
स्माच्चलितयंत्रं च लिख्यतेऽन्न मयाऽधुना ॥ ३१ ॥

अर्थ—विना भावग्रहचलितचक्रके भावसे उत्पन्न फलको नहीं कहे इस कारण चलितचक्र हम इस समय यहां लिखते हैं ॥ ३१ ॥



ग्रहभावफलविचार ।

पारम्भसन्धेरुचरा यदोनः फलं ददात्यादिमभाव
जातम् ॥ विरामसन्धेरधिकस्तदानीमागामिभा-
वोत्पलप्रदः स्यात् ॥ ३२ ॥

अर्थ—जो ग्रह आरम्भसंधिमें न्यून हो तो वह पूर्वभावसे उत्पन्न फलको देता है और जो विरामसन्धिसे अधिक हो वह आगेवाले भावमें उत्पन्न फलको देनेवाला होता है ॥ ३२ ॥

तथाच ।

वदान्ति भावैक्यदलं हि संधिस्तत्रस्थितं स्या-
दवलं ग्रहेन्द्रः ॥ ऊनेषु सन्वेर्गतभावजातामा-
गामिजं चाप्यधिकं करोति ॥ ३३ ॥ भावेशतु-
ल्यं खलु वर्तमानो भावो हि संपूर्णफलं विधत्ते ॥
भावोनके चाप्यधिके च खेटे त्रिराशिके नात्र फलं
प्रकल्प्यम् ॥ ३४ ॥ भावप्रवृत्तोहिः फलप्रवृत्तिः
पूर्णं फलं भावसमांशकेषु ॥ हासः क्रमाद्भाव-
विरामकाले फलस्य नाशः कथितो मुनी-
न्द्रैः ॥ ३५ ॥

अर्थ—दो भावोंके योगार्धको सन्धि कहने हैं अर्थात् दो भावोंका बीचवाला खंड संधि कहा जाता है, नशा (सन्धिमें) स्थित ग्रह निर्बल कहा जाता है, जो ग्रह सन्धिसे हीन हो तो पूर्वभावके फलको देता है और सन्धिसे अधिक हो तो आगामिभावात् उत्पन्न फल देता है, अर्थात् आगेवाले भावके फलको देता है, न्यूनधिक फल करता है, मां ३५ प्रकल्प्यम् ॥ ३५ ॥

भावशतुल्य वर्तमान भावही अपना पूर्ण फल देता है, भावसे ऊन वा अधिक होनेसे फलकी न्यूनधिक्यता होजाती है, वह त्रैराशिक अर्थात् अनुपातसे जाने ॥ ३४ ॥ ग्रहोंके भावकी प्रवृत्तिसेही फलकी निष्पत्ति होती है, और पूर्ण फल जब भावोंके विराम अर्थात् अन्त्यमें होनेसे फलका क्रमशः हास होता जाता है, सन्धिमें फलका नाश होता है ऐसा श्रेष्ठ मुनियोंने कथन किया है ॥ ३५ ॥

और कौन ग्रह किस भावमें कितने विश्वा फल करेगा यह जाननेके लिये विशोपक बल निकालनेका क्रम हम इस पुस्तकके दूसरे भागमें लिखेंगे यदि पाठकोंको शीघ्र जाननेकी इच्छा हो तो हमारी लिखी हुई वर्षपत्रीदीपक जो पंडित श्रीधरशिवलालजीके ज्ञानसागरप्रेक्ष मुंबईमें छपी है उसमें देख लेना उचित है ।

भावचलितचक्रके आगे संवत्सर आदिका फल लिखना उचित है, सो संवत्सर आदि पचांग फल हम इस पुस्तकके द्वितीय भागमें लिखेंगे । यहां सामान्य रीतिमें कुछ थोड़ेसे जन्मपत्र विषयको लिखकर प्रथम भाग समाप्त कर देंगे ।

द्वादशभाव ।

तनुर्धनं मोदरमित्रपुत्रशत्रुप्रियामृत्युशुभाः क्र-

मेण ॥ कर्मायसंज्ञौ व्ययनामधेयो लज्जादिभावा
विबुधैरिहोक्ताः ॥ ३६ ॥

अर्थ—तनु, धन, भ्रातृ, मित्र, पुत्र, शत्रु, स्त्री,
मृत्यु, धर्म, कर्म, लाभ, व्यय ये बारह भाव लग्नसे
बारहवें घरतक पंडितोंने कहे हैं ॥ ३६ ॥

ग्रहदृष्टिविचार ।

पादैकदृष्टिदर्शमे तृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपंचमे च ॥
त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके वा संपूर्णदृष्टिः किल सप्तके
च ॥ ३७ ॥ तृतीये दशमे मन्दो नवमे पंचमे
गुरुः ॥ विंशती वीक्ष्यते विश्वांश्चतुर्थे चाष्टमे
कुजः ३८ ॥

अर्थ—सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक ये ग्रह दशवें
और तीसरे घरको एक चरणसे, नवें पांचवें स्थानको
दो चरणसे, चौथे, आठवें स्थानको तीन चरणसे, सातवें
घरको चारों चरणसे अर्थात् सम्पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं ॥ ३७ ॥
और तीसरे दशवें घरको शनैश्वर, नवें पांचवें घरको
बृहस्पति, चौथे आठवें घरको मंगल वीस विश्वा अर्थात्
पूर्ण दृष्टिसे देखे है, यहां यहभी ध्वनि निकलती है,
कि शनैश्वर नवें पांचवें घरको एक चरणसे, चौथे आ-
ठवें घरको दो चरणसे, सातवें घरको तीन चरणसे और
तीसरे दशवें घरको चारों चरणसे देखता है एवं बृहस्प-
ति चौथे आठवें घरको एक चरणसे, सातवें घरको दो
चरणसे, तीसरे दशवें घरको तीन चरणसे, और नवें

पांचवें घरको चार चरणसे देखे है, तथा मंगल सातवें घरको एक चरणसे, तीसरे दशवें घरको दो चरणसे, नवें पांचवें घरको तीन चरणसे और चौथे आठवें घरको चार चरणसे देखता है ॥ ३८ ॥

ग्रहभैत्रीविचार ।

विनापि भैत्रीं खलु खेचराणां न ज्ञायते शुत्तम-
मध्यहीनाः ॥ दशादिकानां विदशादिकाश्च त-
स्मात्प्रवक्ष्ये खलु भैत्रियंत्रम् ॥ ३९ ॥

अर्थ—ग्रहभैत्री जाने विना ग्रहोंका उत्तम मध्यम और हीन फल नहीं जाना जाता है और ग्रहोंकी दशा और विदशाओंके फलकाभी यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, इस कारण भैत्रीचक्र आगे कहा जायगा ॥ ३९ ॥

नैसर्गिकमित्रज्ञान ।

मित्राणि सूर्याहुरुचन्द्रभौमाः सूर्येन्दुपुत्रौ विधु-
वाक्पतीनाः ॥ आदित्यशुक्रौ कुजचन्द्रसूर्या
बुधार्कजौ शुक्रबुधौ क्रमात्स्युः ॥ ४० ॥

अर्थ—अब ग्रहोंके नैसर्गिक मित्र कहते हैं सूर्यके बृहस्पति, चन्द्र, मंगल मित्र हैं, चन्द्रमाके सूर्य और इन्दुपुत्र (बुध) मित्र हैं, और मंगलके विधु (चन्द्र) वाक्पति (बृहस्पति) इन (सूर्य) मित्र हैं, तथा बुधके सूर्य शुक्र मित्र हैं, बृहस्पतिके मंगल, चन्द्र, सूर्य मित्र हैं

एवं शुक्रके बुध शनि मित्र हैं, शनिके शुक्र बुध मित्र हैं, इस क्रमसे ये ग्रह मित्र हैं ॥ ४० ॥

सममैत्रीज्ञान ।

समाश्च सूर्याच्छशिजो यमारसुरासुरे-
ज्या भृगुजार्कजौ च ॥ भौमार्किजीवाश्चशनैश्च-
रश्च जीवाचलाजौ च बृहस्पतिश्च ॥ ४१ ॥

अर्थ—अब ग्रहोंके नैसर्गिक सम ग्रह कहते हैं सूर्य का बुध सम है, चन्द्रमाके यम (शनि) आर (मंगल) सुरेय्य (बृहस्पति) असुरेय्य (शुक्र) सम हैं, मंगलके शुक्र शनि सम हैं, बुधके मंगल शनि, बृहस्पति सम हैं, बृहस्पतिका शनैश्चर सम है और शुक्रके जीव (बृहस्पति) अचलाज (मंगल) सम हैं, शनिका बृहस्पति सम है ॥ ४१ ॥

शत्रुग्रहज्ञान ।

देष्टव्याः सूर्यान्शुक्रशोरी न कोपि सौम्यश्चन्द्रः
शुक्रचन्द्रात्मजौ च ॥ आदित्येन्द्र सूर्यभौमौष-
धीशा नैसर्गोऽयं स्वेचराणां विचारः ॥ ४२ ॥

अर्थ—अब सूर्य आदि ग्रहोंके नैसर्गिक शत्रु कहते हैं, सूर्यके शुक्र शनि हैं, चन्द्रमाका कोई शत्रु नहीं, मंगलका बुध शत्रु है, बुधका चन्द्रममा शत्रु हैं, शनिके सूर्य मंगल चन्द्रमा शत्रु हैं यह ग्रहोंकी नैसर्गिक मैत्रीका विचार है ॥ ४२ ॥

तात्कालिकग्रहमैत्रीविचार ।

नैसर्गिकग्रहमैत्रीयंत्र ।							
सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु	श.	प्रहा:
च.मं. बृ.	सू. बृ.	सू.च बृ.	सू. शु. रा.	सू. च. म	बु. श. रा.	बु. शु. रा	मित्र.
बु.	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	म बु. श.	श. रा.	म. बृ.	बृ.	सम.
शु. श. रा.	रा.	बु. रा.	चं. म.	बु. शु.	सू. च.	सू. च. म	शत्रु.

अथेष्टकाले सहजायकर्मतुर्यस्वरिःफेषु परस्परं यत् ।

मित्रं समः शत्रुरिहाधिमित्रं मित्रं समः स्यात्क

मशोऽन्यथाऽन्यत् ॥ ४३ ॥

अर्थ—अब सूर्य आदि ग्रहोंकी तात्कालिक मैत्री कहते हैं. अनन्तर जन्मसमयमें जो ग्रह परस्पर अर्थात् एक दूसरेसे सहज (तीसरे) आय (ग्यारहवें) कर्म (दशवें) तुर्य (चौथे), स्व (दूसरे), रिःफ (बारहवें) घरमें स्थित हों तो वर'मित्र जानिये, और शेष

राशिस्वामिज्ञान ।

पंचधाग्रहमैत्रीयंत्रम् ।

सू	च	म.	बु	वृ.	शु	श	ग्रह
च.	सू.	सू.	सू.	०	बु.	बु	अधि
म.			शु.		श	शु	मित्र
बु.	शु.	शु.	श.	०	म.	०	मित्र
	श	श.					
वृ.	बु	च.	०	सूच	च.	सूच	सम
श		वृ		म		म	
०	म.	०	मं-	श.	बु.	वृ.	शत्रु
	वृ.		वृ.				
शु	०	बु.	च.	बु.	सू.	०	अधि
				शु			शत्रु.

मेषादीशा भौमशुक्रबृहस्पतिः सूर्यः सौम्यः शुक्र-
 भौमौ गुरुश्च ॥ पंगुः सौरिर्देवपूज्यः क्रमात्सूर्य-
 त्रं स्यात्तस्य वर्गः स एव ॥ ४४ ॥

अर्थ—मेष आदि राशियोंके स्वामीका ज्ञान कथन करते हैं । मेषका स्वामी मंगल, वृषका शुक्र, मिथुनका बुध, कर्कका चंद्रमा, सिंहका सूर्य, कन्याका बुध, तुलाका शुक्र, वृश्चिकका मंगल, धनुका बृहस्पति, मकरका शनि, कुंभका शनि, मीनका बृहस्पति जानना यह क्र-

राशिस्वामी यंत्र											
मे.	दृ.	मि	क.	सि	कं.	तु.	दृ.	घ.	म	कु.	मी.
मं.	शु	बु.	च.	सू	बु.	शु.	मं.	दृ	श.	श	दृ.

मसे राशिस्वामी कहे, जो जिसका क्षेत्र अर्थात् घर है वह उसका वर्ग है अर्थात् जो राशि जिस ग्रहकी है वही राशि उनका क्षेत्र है और वही वर्ग है ॥ ४४ ॥

उच्चनीचराशिज्ञान ।

मेषे रविर्वृषे चन्द्रो मृगे भौमः स्त्रियां बुधः ॥
कर्के गुरुर्ग्रहे शुक्रो घटे सौरिः स्वतुंगगः
॥४५॥ दिग्भिर्गणैर्नागयमैः शराजैः प्राणोश्च ता-
राप्रमितैर्नखांशैः ॥ परोच्चगाः सूर्यमुखाः क्रमेण
नीचाः स्वतुंगात्स्तभसंस्थिताश्चेत् ॥ ४६ ॥ ॥

अर्थ—अब ग्रहोंके उच्च नीच राशिका ज्ञान कहते हैं. सूर्य मेषमें, चन्द्रमा वृषमें, मंगल मकरमें, बुध कन्या-में, बृहस्पति कर्कमें, शुक्र मीनमें, शनि तुलामें हो तो अपने तुंग (उच्च) का जानना, ॥ ४५ ॥ और मेषके सूर्य बीस अंशपर परमोच्च, वृषका चन्द्रमा तीन अंशपर परमोच्च, मकरका मंगल अष्टादश अंशपर परमोच्च, कर्क-

में बृहस्पति पन्द्रह अंशपर परमोच्च, मीनमें शुक्र सत्ता-
इस अंशपर परमोच्च, और तुलाका शनि बीस अंशपर
परमोच्च जानना, इसी प्रकार सूर्य आदि ग्रहोंकी क्रमसे
अपनी उच्च राशिसे सातवीं राशिपर स्थित होनेसे नीच

उच्चग्रहराशि यंत्र ।							
सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
मे.	बृ.	म.	क.	क.	मी.	तु.	उच्चराशि
१	२	१०	६	४	१०	७	
१०	३	२५	१५	५	२७	२०	परमोच्चाश

नीचग्रहराशियंत्र ।							
सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
बु.	बृ.	क.	मी.	म.	क.	मे.	नीचराशि
७	८	४	१२	१०	६	१	
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमनीचाश

राशि जानना और जो अंश परम उच्चके कहे हैं वेही
अंश परम नीचके जानना, जैसे तुलामें सूर्य नीचके और
तुलामें मूर्य दश अंशपर परमनीचके जानना इत्यादि
क्रमसे चक्रमें देखकर समझ लेना ॥ ४६ ॥

मूलत्रिकोणराशिज्ञान ।

सूर्यस्य सिंहो वृषभो विधोश्च क्रियः कुजस्य प्र-
मदा बुधस्य ॥ धनुर्गुरोः स्याद्धटवह्नगोश्च कुंभः
शनेः स्याद्भवनं त्रिकोणम् ॥ ४७ ॥

ग्रहमूलत्रिकाणराशियंत्र ।							
स.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
सि.	वृ.	मे.	क.	घ.	तु.	कुं.	मूलत्रिकोणराशि.
५	२	२	६	९	७	११	

अर्थ—अब ग्रहोंके मूल त्रिकोणराशिका ज्ञान कह-
ते हैं । सूर्य सिंहका, चन्द्रमा वृषका, मंगल मेषका, बुध
कन्याका, बृहस्पति धनुका, शुक्र तुलाका, शनि कुंभका
मूलत्रिकोणभवन होता है ॥ ४७ ॥

राहुउच्चादिराशिज्ञान ।

उच्चं न्युगमं घटमं त्रिकोणं कन्या गृहं सौरि-
सितामरेज्याः ॥ मित्राणि सूर्येन्दवनीतनूजा दे-
व्याश्च राहोः स्वयमाः परांशाः ॥ ४८ ॥

अर्थ—अब राहुकी उच्च आदि राशिका ज्ञान कहते
हैं । राहु मिथुनराशिका हो तो उच्च जानना, कुंभराशि
मूलत्रिकोण और कन्या राहुकी राशि अथवा घर जानना,

तथा शनि, शुक्र, बृहस्पति, राहुके मित्र, और सूर्य, चन्द्र मंगल राहुके शत्रु, शेष बुध और केतु राहुके सम ज नियो. मिथुनका राहु बीस अंशपर परमोच्चका होत है ॥ ४८ ॥

केतुउच्चादिराशिज्ञान ।

सिंहस्रिकोणं धनुरुच्चसंज्ञं मीनो गृहं शुक्रशनी विपक्षो ॥ कुजार्कचन्द्रा सुहृदः समारूढौ जीवेन्दुजौ षट् शिखिनः परांशाः ॥ ४९ ॥ ॥

अर्थ—केतुकी उच्च आदिराशिका ज्ञान कहते हैं ।

सिंहकेतुका मूल त्रिकोण राशि है, धनुराशि उच्च है, मीन स्वगृह है, शुक्र शनि शत्रु हैं, मंगल, सूर्य, चन्द्रमा मित्र हैं, बृहस्पति बुध सम हैं और धनुराशिका केतु छः अंशपर परम नीचका होता है ॥ ४९ ॥

जन्मलग्न करके जो लक्षण मिलाना हो तो हमारी लिखी लग्नजातक जो मुंबईमें छपी है उसमें देखकर लक्षण जानना और ग्रहोंका व राशियोंका स्वरूप व संज्ञा जानना हो तो हमारे भाषानुवाद किये लग्नजातकमें देखना, तथा भाव व ग्रहभाव फल तथा निर्याण आदि फल, तथा भाव संवत्सर आदिका फल, देखना हो तो हमारे भाषानुवाद किये हुए जातकाभरणग्रन्थ जो पंडितहस्तिनादभागीरथ कालकादेवीरोड मुंबईमें छपा है

उसमें देख लेना. और इस ग्रन्थके द्वितीय भागमें यह सब फल, लिखनेका विचार है ॥

ग्रहमित्रादिफल ।

मित्रस्वक्षेत्रगो स्वोच्च अधिमित्रे समेऽपि वा ॥

सर्वे शुभफला ज्ञेयाः शत्रुनीचमनिष्टदाः ॥ ५० ॥

अर्थ—जो ग्रह अपने मित्रकी राशिमें हों अपने क्षेत्र (घर) में हों अपने उच्च राशिमें हों अपने अधि-मित्र के घरमें हों, मित्र अथवा ममकी राशिमें हों, तो यह सब शुभ फलके सूचक जानिये और शत्रुके घरमें वा नीच राशिमें स्थित ग्रह अनिष्ट फलकी सूचना देने-वाले होते हैं ॥ ५० ॥

स्वोच्चस्थितः पूर्णफलं विधत्ते स्वर्क्षं हितर्क्षं हि
फलार्धमेव ॥ फलांघ्रिमात्रं रिपुमन्दिरस्यश्चास्तं
प्रयातः स्रवरो न किञ्चित् ॥ ५१ ॥

अर्थ—जो ग्रह अपने उच्च राशिका हो वह पूर्ण फल देता है, जो अपनी राशि और अपने मित्रराशिका हो उसका उक्त भाव फल आधा होता है, जो शत्रुग्रह-में स्थित हो, वह एक चौथाई फल करता है, और अस्तको प्राप्त ग्रह कुलभी फल नहीं करता है ॥ ५१ ॥

तन्वादिभावे विचारज्ञान ।

रूपं तथावर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः

प्रमाणम् ॥ सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लभे
विलोक्यं खलु सर्वमेतत् ॥ ५२ ॥

अर्थ—अब तनु आदि भावमें विचारका ज्ञान कहते हैं। रूप तथा वर्णका निर्णय (शरीरका रंग जानना) विद्वत्, जाति, अवस्थाका प्रमाण, सुख, दुःख और साहस इन सबका निर्णय लग्नपरसे देखना अर्थात् इन सबका विचार जन्मलग्नसे करना ॥ ५२ ॥

स्वर्णादिधातुक्यविक्रयश्च रत्नादिकोशोऽपि च संग्रहस्य ॥ एतत्समस्तं परिचिन्तनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ ५३ ॥

अर्थ—सुवर्ण आदि धातुक्य (खरीदना), विक्रय (बेचना), रत्न आदिके कोष और अन्य सब वस्तुओंका संग्रह इन सबका विचार धनभाव (दूसरे घर) से पण्डितोंको करना चाहिये ॥ ५३ ॥

सहोदराणामथ किङ्कराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च ॥ विचारणा जातकशास्त्रविद्विस्तृतीयभावे नियमेन कार्या ॥ ५४ ॥

अर्थ—सहोदर (भाई), किङ्कर (सेवक), पराक्रम और अन्य सब आश्रयी लोग इनका विचार जातकशास्त्रके जाननेवालोंको तीसरे भावसे करना चाहिये ॥ ५४ ॥

सुहृद्दृष्ट्यामचतुष्पदं वा क्षेत्रोद्यमालोकनकं
चतुर्थं ॥ दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रवृद्धि-
नियमेन तेषाम् ॥ ५५ ॥

अर्थ—सुहृद् (मित्र), गृह (घर), ग्राम (गांव), च-
तुष्पद (चौपाये पशु), क्षेत्र (खेत) और उद्यम इनका
विचार चौथे घंसे करना, वह चौथा घर शुभ ग्रहोंसे
देखा जाता हो अथवा शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो
नियमपूर्वक इन सबकी वृद्धि होवे, यदि पाप ग्रहों-
की दृष्टि हो अथवा पापग्रहयुक्त हो तो इन पदार्थों-
की हानि होवे ॥ ५५ ॥

बुद्धिप्रबंधात्मजमंत्रविद्याविनेयगर्भस्थितिनीति-
संस्थम् ॥ सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः
परिचिन्तनीयम् ॥ ५६ ॥

अर्थ—बुद्धि, प्रबन्ध, सन्तान, मंत्राराधन, विद्या,
नम्रता, गर्भस्थिति, नीति (न्याय अथवा विनय)
इन सबका विचार पंचमस्थानसे होराशास्त्रके जानने-
वाले ज्योतिषियोंको करना चाहिये ॥ ५६ ॥

वेरित्रातः क्रूरकर्मामयानां चिन्ताशङ्कामातुला-
नां विचारः ॥ होरापारावारपारम्भयातरेतत्सर्वं
शत्रुभावे विचिन्त्यम् ॥ ५७ ॥

अर्थ—शत्रुसमूह, क्रूरकर्म, रोग, विन्ता, शंका और मातुल (मामा) इन सबका विचार हेराशास्त्रके पारगन्ता (ज्योतिषी) को छठे भावसे करना चाहिये ॥ ५७ ॥

रणाङ्गणं चापि वणिक्क्रियाश्च जायाविचारागमन-
प्रमाणम् ॥ शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्रभावे
किल सर्वमेतत् ॥ ५८ ॥

अर्थ—युद्ध, वाणिज्य, स्त्री, आगमन और प्रयाण (यात्रा) इन सबोंका विचार ज्योतिषियोंको सातवें भावसे करना चाहिये ॥ ५८ ॥

नद्युत्पाताऽत्यन्तवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः संकटं चे-
ति सर्वम् ॥ रन्ध्रस्थाने सर्वदा कल्पनीयं प्राचीना-
नामाज्ञया जातकज्ञैः ॥ ५९ ॥

अर्थ—नदीके पार उतर जाना, उत्पात, अतिविषमता, दुर्ग, आयु इन सबका विचार प्राचीनोंकी आज्ञासे जातककोविदोंको रन्ध्र (आठवें) स्थानसे करना चाहिये ॥ ५९ ॥

धर्मक्रियायां मनसः प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च
शीलम् ॥ तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणैः पुण्या-
लये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥ ६० ॥

अर्थ—धर्मकर्ममें चित्तकी प्रवृत्ति, माग्योदय, निर्मल शील व स्वभाव, तीर्थयात्रा और नम्रता इन सबका विचार पुण्यालय (नवम भाग्य) स्थानसे करना ऐसा प्राचीन पंडितोंने कहा है ॥ ६० ॥

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितु-
स्तथैव ॥ महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने
भवने विचार्यम् ॥ ६१ ॥

अर्थ—व्यापारमुद्रा, राजासे मान, राज्यप्राप्तिप्रयो-
पिता तथा महत्पदकी प्राप्ति इन सबका विचार
भावसे करना योग्य है ॥ ६१ ॥

गजाश्वहेमाम्बररत्नजातमान्दोलिकामण्डनानि ॥
लाभः किलास्मिन्नखिलं विचार्यमेतत्तु लाभस्य
गृहे ग्रहज्ञैः ६२ ॥

अर्थ—हाथी, घोड़ा, सुवर्ण, वस्त्र, सब प्रकारके
त्न, हिंडोला (पालकी आदि सवारी), मंगल, मंडन,
(अलंकार आदि) और लाभ, इन सबका विचार पं-
डेत्तोंको ग्यारहवें घरसे करना चाहिये ॥ ६२ ॥

ज्ञानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो निर्वन्ध एव च ॥
सर्वमेतद् व्ययस्थाने चिन्तनीयं प्रयत्नतः ॥ ६३ ॥

अर्थ—हानि, दान, व्यय (खर्च), दण्ड और बन्ध ये सब चारहवें स्थानसे यत्नपूर्वक विचारना चाहिये ॥६३॥

दीप्तादिग्रहज्ञान ।

दीप्तस्तुंगगतः खगो निजगृहे स्वस्थो हिते हर्षितः शान्तः शोभनवर्गगश्च खचरः शक्तः स्फुरद्रश्मिभाक् ॥ लुप्तः स्याद्विकलः स्वनीचगृहगो दीनः खलः पापयुक् खेटो यः परिपीडितश्च खचरैः स प्रोच्यते पीडितः ॥ ६४ ॥

अर्थ—अपनी उच्चराशिमें स्थित ग्रह 'दीप्त' संज्ञक होता है, अपनी राशिमें स्थित ग्रह 'स्वस्थ' कहाता है, अपने मित्रके घरमें स्थित ग्रह 'हर्षित' कहाता है, तथा शुभ ग्रहके वर्ग (नवांश) आदिमें स्थित ग्रह 'शान्त' कहाता है, जिस ग्रहकी किरणें प्रकाशवान् हैं अर्थात् जो उदयको प्राप्त है अस्त नहीं वह 'शक्त', जानना, और जो ग्रह लुप्त है अर्थात् अस्त हो गया है, वह 'विकल' जानना जो ग्रह अपनी नीच राशिमें है वह 'दीन' है, जो पाप ग्रहोंके साथ हो वह 'खल' (दुष्ट) जानना, तथा जो ग्रह पाप ग्रहोंसे पीडित है वह 'पीडित' कहाता है ॥ ६४ ॥

भाववलावलज्ञान ।

तन्वादयो भाववलं वदन्ति तत्स्वामिसंपूर्णवलेः

समेतः ॥ युक्तेऽथ दृष्टे शुभदृश्युते च क्रमेण त-
द्भावविवृद्धिकारी ॥ ६५ ॥

अर्थ—तनु (लग्न) आदि भावोंका बल कहते हैं,
तनु आदि द्वादश भावोंमेंसे जिस भावका स्वामी स-
म्पूर्ण बलसे युक्त हो और अपने स्थानमें स्थित हो अ-
थवा देखता हो और शुभ ग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो क्रम
करके वह भाववृद्धिकारी होता है, ६५ ॥

तथाच ।

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्या-
त्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः ॥ पापैरेवं तस्य भा-
वस्य हानिर्निर्दिष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥ ६६ ॥

अर्थ—जो जो भाव अपने स्वामीसे युक्त अथवा
दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रहोंकरके युक्त अथवा दृष्ट हो
अर्थात् शुभ ग्रह उस भावमें स्थित हों अथवा उनकी
दृष्टि हो तो उस उस भावकी वृद्धि कहिये और पाप
ग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट हो तो उस भावकी हानि क-
हिये, प्रश्नसमय अथवा जन्मसमय यह विचार
करना चाहिये ॥ ६६ ॥

प्रशस्तग्रहज्ञान ।

शत्रो मृत्योऽतिशस्तः सुखभवनगतो पूर्णचन्द्रेऽ
तिशस्तः राज्ये भोमोऽतिशस्तः ॥ धनसदनगतो

चन्द्रपुत्रोऽतिशस्तः ॥ कोणे जीवोऽतिशस्तः त
नुगतभृगुजो विमक्रार्किः प्रशस्तो लाभे स
प्रशस्ताः कथितफलकरा पाण्डुपुत्राः व
दन्ति ॥ ६७ ॥

अर्थ—शत्रु (छठे) स्थानमें सूर्य अतिशस्त (ब
हुतश्रेष्ठ) जानना, चौथे स्थानमें पूर्ण चन्द्रमा बहुत
श्रेष्ठ होता है, राज्य (दशम) स्थानमें मंगल बहुत
श्रेष्ठ होता है, धनस्थान (दूसरे घर) में बुध बहुत
श्रेष्ठ होता है, कोण (नवम पंचम) स्थानमें बृहस्पति
बहुत श्रेष्ठ होता है, तनुगत (जन्मलग्नमें) शुक्र बहुत
श्रेष्ठ होता है, विक्रम (तीसरे घर) में शनि बहुत
श्रेष्ठ होता है, लाभ (ग्यारहवें) स्थानमें सब ग्रह बहुत
श्रेष्ठ होते हैं, कहे हुए फलकी सूचना भली भांति करते
हैं, ऐसा पाण्डुपुत्र (सहदेव आदि) कहते हैं ॥ ६७ ॥

मूर्तो शुक्रबुधो यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ॥ दशमो-
ऽङ्गारको यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥ ६८ ॥
नास्ति शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ॥
दशमोऽङ्गारको नैव स जातः किं करि-
ष्यति ॥ ६९ ॥

अर्थ—जिसके मूर्तिमें शुक्र हो और केन्द्र अर्थात्
पहले चौथे मातर्वे दशवें स्थानमें बृहस्पति हो, तथा

जैसेके दशवें घरमें मंगल हो, उसको कुलदीपक जानिये । ६८ ॥ जिसके जन्मसमय शुक्र बुध और वृहस्पति चन्द्र १११७१० स्थानमें न हो, और दशम स्थानमें मंगल न हो तो वह बालक क्या करेगा, अर्थात् उसका जन्म वृथा जानना ॥ ६९ ॥

पातालाम्बरपंचमे दिनवमे लमे च सौम्य-
ग्रहाः क्रूरा पष्ठगता शशी धनगतो सर्वे त्रिरे-
कादश ॥ यात्राजन्मविवाहदीक्षणाविधौ राज्या-
भिषेके नृणां याभिन्नं ग्रहवर्जितं यदि भवेत्स-
र्वेऽपि ते शोभनाः ॥ ७० ॥

अर्थ—चौथे दशवें पांचवें दूसरे नवें और लग्नमें यदि शुभ ग्रह स्थित हों और क्रूर ग्रह छठे स्थानमें हों, चन्द्रमा दूसरे स्थानमें हो, तथा सब ग्रह यदि तीसरे ग्यारहवें स्थानमें हों, सातवें स्थानमें कोई ग्रह नहीं होवे तो यात्रा व जन्मसमय, दीक्षाविधिमें और राज्याभिषेक (राजतिलक) में मनुष्योंको सब प्रकार शुभ फल देनेवाले जानने, ॥ ७० ॥

अशुभसूचकग्रह ।

खलाः सर्वेषु केंद्रेषु घनस्थोऽपि खलग्रहः ॥
दरिद्रो जायते जातः स्वपक्षे दुष्करो
भवेत् ॥ ७१ ॥

अर्थ—पाप ग्रह सब केन्द्रस्थान (१११७१०) में हों और धनस्थान (दूसरे घर) में भी पाप ग्रह हो तो वह बालक दरिद्री (निर्धनी) होता है और अपने हितैषियोंके साथ द्रोह करनेवाला है ॥ १०९ ॥

स्थितो वा ॥ तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः
शुभेक्षिते तद्भवनस्य सौख्यम् ॥ ७३ ॥

अर्थ—जिस भावका स्वामी छठे आठवें बारहवें
घरमें हो उस भावका नाश कहना, जो शुभ ग्रहोंकी
दृष्टि उस भावमें हो तो उस भावके सुखको करे ॥ ७३ ॥

आयुर्माहात्म्य ।

प्रथमायुर्निरीक्षेत पुनलक्षणमेव च ॥ आयुर्ही
नो नरो यस्तु लक्षणैः किं प्रयोजनम् ॥ ७४ ॥

अर्थ—जन्मसमय पहले जातककी आयुको देखे
फिर लक्षण विचारे क्योंकि जिस बालककी आयु
हीन है उसके लक्षणोंसे क्या प्रयोजन है अर्थात्
बिना आयुके लक्षण वृथा है ॥ ७४ ॥

अकालमृत्युलक्षण ।

ये पापलुब्धचौराश्चेद्देवब्राह्मणनिन्दकाः ॥

परदाररता तेपामकालमरणं नृणाम् ॥ ७५ ॥

अर्थ—जे पापी, लोभी, चोर और देवब्राह्मणनिन्दक हैं
तथा जो परस्त्रीमें आसक्त रहते हैं उनकी ॥ ७५ ॥

दीपस्तैलादियुक्तोपि तथा वातेन नश्यति ॥

अजितेन्द्री तथापथ्यौरे वमायुर्विनश्यति ॥ ७६ ॥

अर्थ—तेल आदिसं युक्त होनेपरभी दीपक जिसे
प्रकार वायुके झकोरेसे बुझ जाना है, उमी प्रकार अजि-

अर्थ—पाप ग्रह सब केन्द्रस्थान (१।४।७।१०) में हों और धनस्थान (दूसरे घर) में भी पाप ग्रह हो तो वह बालक दरिद्री (निर्धनी) होता है और अपने हितैषियोंके साथ द्रोह करनेवाला होता है ॥ ७१ ॥

ग्रहसेग्रहोंकाफल ।

इनाङ्कार्क्षत्तातःशशिसुखगृहान्मातृकथितः कुजा-
द्भातृस्थानात्सहज इनपुत्राष्टमगृहात् ॥ मृतिर्ज्ञा-
त्पष्ठे स्याद्भुज इति क्रमान्मातुलमपि गुरौ पुत्रा-
त्पुत्रो सितसदनभादारफलजम् ॥ ७२ ॥

अर्थ—अब ग्रहोंसे ग्रहोंका फल कहते हैं सूर्यसे नवम स्थानद्वारा पितासम्बन्धी शुभाशुभ फल विचार करना, चन्द्रमासे चौथे भावद्वारा मातासम्बन्धी विचार करना, मंगलसे तीतरे स्थानद्वारा भाईका विचार करना शनिसे आठवें स्थानद्वारा मृत्युका विचार करना, बुधसे छठे स्थानद्वारा रोग और मामाका विचार करना, वृहस्पतिसे पाचवें स्थानद्वारा पुत्रसम्बन्धी शुभाशुभ विचार करना, शुक्रसे सातवें स्थानद्वारा स्त्रीका शुभाशुभ फल विचारकरना ॥ ७२ ॥

भावफल ।

यद्भावनाथो रिपुरन्धरिण्ये दुःस्थानपो यद्भवन

स्थितो वा ॥ तद्भावनानां कथयन्ति तज्ज्ञाः
शुभेक्षिते तद्भावनस्य सौख्यम् ॥ ७३ ॥

अर्थ—जिस भावका स्वामी छठे आठवें बारहवें
घरमें हो उस भावका नाश कहना, जो शुभ ग्रहोंकी
दृष्टि उस भावमें हो तो उस भावके सुखको करे ॥ ७३॥

आयुर्माहात्म्य ।

प्रथमायुर्निरीक्षित पुनलक्षणमेव च ॥ आयुर्ही-
नो नरो यस्तु लक्षणैः किं प्रयोजनम् ॥ ७४ ॥

अर्थ—जन्मसमय पहले जातककी आयुको देखे
फिर लक्षण विचारे क्योंकि जिस बालककी आयु
हीन है उसके लक्षणोंसे क्या प्रयोजन है अर्थात्
बिना आयुके लक्षण बूझा है ॥ ७४ ॥

अकालमृत्युलक्षण ।

ये पापलुब्धचोराश्चेद्देवब्राह्मणनिन्दकाः ॥

परदाररता तेपामकालमरणं नृणाम् ॥ ७५ ॥

अर्थ—जे पापी, लोभी, चोर और देवब्राह्मणनिन्दक हैं
तथा जो परस्त्रीमें आसक्त रहते हैं उनकी ॥ ७५ ॥

दीपस्तेलादियुक्तोपि तथा वातेन नश्यति ॥

अजितेन्द्रो तथापथ्योरेवमायुर्विनश्यति ॥ ७६ ॥

अर्थ—तेल आदिसे युक्त होनेपरभी दीपक जिसे
प्रकार वायुके झकोरेसे बुझ जाता है, उसी प्रकार अजि-

तेन्द्रिय तथा अपथ्यसे रहनेवालेकी आयुका विनाश हो जाता है अर्थात् जो अपनी इन्द्रियोंको अपने वशमें नहीं रखता जो पथ्यसे नहीं रहता, भावार्थ यह कि जिसका आहार विहार ठीक नहीं उसकी आयु क्षीण हो जाती है और अंकालमृत्युसे वह नहीं बचता ॥७६॥

अथ सप्तवर्गपतिविचार ।

तत्रादौ सप्तवर्ग प्रयोजन ।

अर्थ— अब सप्तवर्गपतिका विचार लिखते हैं तहाँ पहले सप्तवर्ग प्रयोजन लिखते हैं ।

लभे देहो वर्ग पट्काङ्गकानि प्राणश्रद्धो धातवः
खेचरेन्द्राः ॥ प्राणे नष्टे धातवो देहनाशं तस्माज्ज्ञेयं
चन्द्रवीर्यः प्रधानम् ॥ ७७ ॥

अर्थ— लग्न देह है और पट्कर्ग (होरा आदि छे कुंडली) पृथक् पृथक् छे अंग हैं चन्द्रमा प्राण हैं अन्य सब ग्रह धातु हैं. जब प्राण नष्ट हो जाता है तब शरीर धातु अंग ये सब प्राणके साथही विनाश हो जाते हैं. सब शरीरका राजा प्राण है इसी कारण चन्द्रमाका बल सर्व प्रधान माना है अर्थात् जो राशि चन्द्रमाकी है वही राशि मनुष्यकी मानी है ऐसा जानना ॥७७॥

गेहात्सौख्यमुदाहरन्ति मुनयो होरावलाञ्छी-
लतां द्रेष्काणो पदवो धनस्य निचयं सप्तांशके

चिन्तयेत् ॥ वर्णं रूपगुणान्सुधीसुतनयान्प्रायो
नवांशेऽखिलं अंशे द्वादशगे वपुर्वयमिदं त्रिशां-
शके स्त्रीफलम् ॥ ७८ ॥

अर्थ—गृह (जन्मलग्न) कुंडलीसे देह मुखका
विचार मुनिजन करते हैं. होरावलसे शीलभाव, द्रेष्काणसे
पदवी, सप्तांशसे धनका संग्रह, और वर्ण (शरीरका रंग)
रूप, गुण, सन्तति इन सबका विचार बुद्धिवान् जन
प्रायः नवांशसे करे. तथा द्वादशांशसे शरीर और अव-
स्थाका विचार करे. त्रिशांशसे स्त्रीका विचार करे ॥ ७८ ॥

लमे नूनं चिन्तयेद्देहभावं होरा यां वै संप
दाढ्यं सुखं च ॥ द्रेष्काणो स्याद्मातृजं कर्मरूपं
स्यात्सप्तांशे सनन्ततिः पुत्रपौत्रीम् ॥ ७९ ॥
नूनं नवांशे च कलत्ररूपं स्याद्द्वादशांशे पितृ-
मातृसौख्यम् ॥ त्रिशांशकेऽरिष्टफलं विधेयं एवं
हि पङ्क्तिं फलोदयं स्यात् ॥ ८० ॥

अर्थ—जन्मलग्नमें निश्चयकरके देहभावका अर्थात्
शरीरके सुखदुःखका विचार करना होरामें निश्चयकरके
सम्पदा (ऐश्वर्य) से युक्त होने और मुखका विचार करना

और निश्चयकरके नवांशमें स्त्रीके रूप आदिका विचार करना और द्वादशांशसे पितामाताके सुखका विचार करना, त्रिंशांशकरके अरिष्टफलका विचार करना इस प्रकारका पङ्क्तिके फलका उदय होता है ॥ ८० ॥

जन्मलग्नयंत्रम् ।



लग्नमात्मा मनश्चन्द्रस्तद्योगफलनिर्णयः ॥

तस्माल्लग्नश्च चन्द्रश्च विज्ञेयं जातकं फलम् ॥ ८१ ॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाम्भो लग्नश्च कुसुमप्रभम् ॥

फलेन सदृशांशश्च भावः स्वादुरसः स्मृतः ॥ ८२ ॥

अर्थ—लग्न आत्मा है और चन्द्रमा मन है इन दोनोंके योगसे फलका निर्णय करै और इसी कारण लग्न से और चन्द्रमासे जातकफल जानिये ॥ ८१ ॥

चन्द्रमा सर्वत्र बीज और जल है और लग्न फूलके समान है अंश फलके सदृश जानिये और भाव स्वादिष्ट रस है ऐसा कहा है ॥ ८२ ॥

जन्मलग्नका स्वामी यदि शुभ ग्रह हो और शुभ ग्रह जन्मलग्नमें हो तथा शुभस्वामी अथवा शुभग्रहको दृष्टि लग्नमें हो तो देहको सुख हो

शरीर पुष्ट होवै, और जो लग्नस्वामी पाप ग्रह हो और लग्नमें स्थित हो अथवा लग्नको देखता हो तथा पापग्रह लग्नमें स्थित हों और पाप ग्रहोंकी दृष्टि हो तो देहको सुख नहीं प्राप्त हो और शरीर दुर्बल हो अथवा लग्नका स्वामी छठे आठवें चारहवें हो तो शरीरसुखका अभाव होवे-इसी प्रकार सब भाषोंका विचार करके फल लिखना, भाव आदिका विशेष फल इस ग्रन्थके द्वितीय भागमें लिखेंगे. वहां देख लेना ॥

होराद्रेष्काणविचार ।

विषमेऽर्कविधोर्होरे समे विधुविभावसोः ॥

स्वसप्तसुतधर्मेशा द्रेष्काणास्ते प्रकीर्तिताः ॥ ८३ ॥

अर्थ—विषमराशि अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ इनमें कोईभी ग्रह हो तो १५ अंशतक सूर्य होरा अर्थात् सिंहराशिकी होरा जानना, और १६ अंशसे ३० अंशपर्यंत चन्द्रहोरा अर्थात् कर्कराशिकी होरा जानना. तथा समराशि अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन इनमें कोईभी ग्रह हो तो १५ अंश

तक चन्द्रमा (कर्क) की होरा और १६ अंशसे ३० अंशतक सूर्य (सिंह) की होरा जानना । द्रेष्काणका विचार इस प्रकार है कि, दश अंशतक पहला द्रेष्काण, फिर बीस अंशतक दूसरा द्रेष्काण, अनन्तर तीस अंश तक तीसरा द्रेष्काण जानना, पहला द्रेष्काण उसी रा-

होराविचार यंत्र ।

मे.	बृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	रा.
सु.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	१५
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	
च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	३०
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	

द्रेष्काणविचार यंत्र ।

मे.	बृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	रा.
म.	तु.	ध.	च.	सू.	तु.	ध.	म.	सू.	तु.	ध.	म.	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१०
सू.	तु.	ध.	म.	वृ.	श.	सू.	वृ.	म.	तु.	ध.	सू.	२०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	
वृ.	श.	सू.	म.	तु.	वृ.	ध.	सू.	तु.	वृ.	म.	सू.	३०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	

शिका होता है, कि जिस राशिपर ग्रह स्थित हो और उसराशिका स्वामी द्रेष्काणपति कहाता है, और दूसरा द्रेष्काण ग्रहस्थित राशिसे पांचवी राशिका होता है,

और तीसरा द्रेष्काण नवम राशिका होता है, सो च-
क्रमे देखकर समझ लेना उचित है ॥ ८४ ॥

सप्तांशविचार।

स्वहेगसप्तभागेभ्यः सप्तांशेशा बुधैः स्मृताः ॥ ओजे
स्वगेहतो गरायाः समे सप्तमराशितः ॥ ८५ ॥

सप्तांशविचारयंत्र ।

मं.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	उ.	दृ.	प.	म.	कु.	मी.	राशि.
मं.	मं.	वृ.	श.	सू.	वृ.	शु.	शु.	वृ.	च.	श.	वृ.	४
१	८	३	१०	५	११	७	२	९	४	११	६	१७
२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	८
३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	१२
४	११	६	१	८	३	१०	५	११	७	२	९	५१
५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	१७
६	१	८	३	१०	५	११	७	२	९	४	११	८
७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	११	२१
८	३	१०	५	११	६	१	८	३	१०	५	११	२५
९	४	११	६	१	८	३	१०	५	११	७	२	२५
१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	४३
११	६	१	८	३	१०	५	११	७	२	९	४	२०
१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	००

अर्थ—अपनी राशिके सात भाग करके सप्तांश
जानिये और उस राशिके स्वामीको सप्तांशपति जानिये
ऐसा पण्डितोंने कहा है तहां विषम राशिमें अपनी
(उसी) राशिसे सात भाग करके सात राशियोंका

सप्तांश जानना और जिस राशिका सप्तांश हो उस राशिका स्वामी सप्तांशपति जानना और सम राशि हो तो सप्तम राशिसे सात राशि क्रमशः सातवें सातवें भाग के सप्तांश राशि जाननी सो चक्रमें स्पष्ट देखकर समझना ॥ ८५ ॥

नवांशविचार ।

मेषादीनां चतुर्णां तु सकोणानां नवांशपाः ॥
मेषादयो मृगाद्याश्च तुलाद्याः कर्कटादयः ॥ ८६ ॥

अर्थ—मेष आदि चार चार राशियोंके नवांश अर्थात् नव भाग क्रमपूर्वक मेष आदिसे, मकर आदिसे, तुला आदिसे, कर्क आदिसे गणना करके जानने, जैसे मेषका नवांश मेषसे धनुतक गणना करके जानने, वृषका नवांश मकरसे गणना करके कन्यातक जानना, मिथुनका, तुलासे, कर्कका कर्कसे, सिंहका मेषसे, कन्याका मकरसे-तुलाका तुलासे, वृश्चिका कर्कसे, धनुका मेषसे, मकरका, मकरसे, कुंभका तुलासे, मीनका कर्कसे गणना करके जानना, एक राशिके तीस अंशका नवां भाग ३ अंश २० कलाका पहला नवांश ३ और अंश २० कलाका दूसरा नवांश और दश १० पूर्ण अंशतक तीसरा नवांश हुआ १३ अंश २० कलातक चौथा नवांश और १६ अंश ४० कलातक पांचवां नवांश तथा २० अंश

नवांश विचार्यत्र ।

श.	क.	न.	म.	व.	श.	स.	ह.	ल.	व.	म.	श.	र.
१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१
२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२
३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३
४	१३	१०	७	४	१३	१०	७	४	१३	१०	७	४
५	१४	११	८	५	१४	११	८	५	१४	११	८	५
६	१५	१२	९	६	१५	१२	९	६	१५	१२	९	६
७	१६	१३	१०	७	१६	१३	१०	७	१६	१३	१०	७
८	१७	१४	११	८	१७	१४	११	८	१७	१४	११	८
९	१८	१५	१२	९	१८	१५	१२	९	१८	१५	१२	९
१०	१९	१६	१३	१०	१९	१६	१३	१०	१९	१६	१३	१०
११	२०	१७	१४	११	२०	१७	१४	११	२०	१७	१४	११
१२	२१	१८	१५	१२	२१	१८	१५	१२	२१	१८	१५	१२
१३	२२	१९	१६	१३	२२	१९	१६	१३	२२	१९	१६	१३
१४	२३	२०	१७	१४	२३	२०	१७	१४	२३	२०	१७	१४
१५	२४	२१	१८	१५	२४	२१	१८	१५	२४	२१	१८	१५
१६	२५	२२	१९	१६	२५	२२	१९	१६	२५	२२	१९	१६
१७	२६	२३	२०	१७	२६	२३	२०	१७	२६	२३	२०	१७
१८	२७	२४	२१	१८	२७	२४	२१	१८	२७	२४	२१	१८
१९	२८	२५	२२	१९	२८	२५	२२	१९	२८	२५	२२	१९
२०	२९	२६	२३	२०	२९	२६	२३	२०	२९	२६	२३	२०

पूर्ण तक छठा नवांश और २३ अंश २० कलातक सा-
तवां नवांश और २६ अंश ४० कलातक आठवां न-
वांश और तीस अंश ३० पूर्णतक नवां नवांश हो-
ता है, इस प्रकार ये नव नवांश चक्रमें देखकर
विचार लेना ॥ ८६ ॥

वर्गोत्तमनवांशज्ञान ।

चरादिष्वदिमध्यान्त्या वर्गोत्तमनवांशकाः ॥

अर्थ—चर आदि राशियोंमें क्रमशः आदि मध्य
अन्त्यका नवांशा वर्गोत्तम कहाता है, जैसे चरराशि
(मेष, कर्क, तुला, मकर) का पहला आदिका नवां-
शा अर्थात् मेषमें मेषका, कर्कमें कर्कका, तुलामें तुला-
का, मकरमें मकरका नवांशा वर्गोत्तम जानना, और
स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) का मध्य (बीच)
का पांचवा नवांशा वर्गोत्तम कहा है, और द्विःस्वभा-
वराशि (मिथुन, कन्या, धन, मीन) का अन्त्यका
नवां नवांशा वर्गोत्तम कहाता हैं भावार्थ यह कि ज-
पना नवांशा अर्थात् उसी राशिका नवांशा वर्गोत्तम
होता है ॥

द्वादशांशविचार ।

स्वर्गेहाद्वादशैर्भागेः क्रमशो द्वादशांशयाः ॥ ८७ ॥

द्वादशांशविचारचन्द्र.

मे.	वृ.	मि.	फ.	सि.	कं.	तु.	वृ.	च.	म.	कुं.	मो.	रा.
मं	शु	वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	२।३०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
शु	वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	मं	५।०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	शु	
वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	मं	७।३०	
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	
कं	सू	वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	१०।०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	
सू	वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	चं	१२।३०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	
वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	मं	५	१५।०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	
शु	वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	चं	१७।३०
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	
वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	मं	७	२०।०
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	
मं	शु	वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	२२।३०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	
शु	वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	मं	२५।०
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
वृ	च	सू	वृ	शु	म	वृ	श	श	वृ	मं	१०	२८।३०
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	

अर्थ—अपनी राशिके बारह भाग करे, अर्थात् एक राशिके तीस अंश होते हैं, बारहवां भाग २ अंश ३० कला हुए तो २ अंश ३० कलाका एक द्वादशांश हुआ और ५ अंश पूर्णतक दूसरा द्वादशांश हुआ, ७।३० अर्थात् साढ़ेसात अंशतक तीसरा द्वादशांश हुआ १० अंश पूर्णतक चौथा द्वादशांश हुआ और १२।३० अंशतक पांचवा द्वादशांश हुआ, पूर्ण १५ अंशतक छठा द्वादशांश हुआ १७।३० अंशतक सातवाँ द्वादशांश हुआ २० अंशपूर्ण तक आठवाँ द्वादशांश हुआ, २२।३० अंशतक नवाँ द्वादशांश हुआ, २५। अंशपूर्णतक दशवाँ द्वादशांश हुआ २७।३० अंशतक ग्यारहवाँ द्वादशांश हुआ और पूर्ण ३० अंशतक बारहवाँ द्वादश हुआ सो चक्रमें देखकर समझ लेना ॥ ८७ ॥

त्रिशांशविचार ।

आरार्किजीवबुधदैत्यपुरोधसश्च पञ्चद्रियाष्ट नग
मारुतभागकानाम् ॥ ओजेषु राशिषु भवन्ति
यथारुमेण त्रिशांशपाः समग्रहेषु विलोमतः स्युः ८८॥

अर्थ—त्रिशांशविचार इस प्रकार करे कि विषम राशिमें और (मंगल) का त्रिशांश पांच अंशतक होता है, फिर आर्कि (शनैश्वर) का त्रिशांश पांच अंश अर्थात् छठे अंशसे दश अंशतक होता है अनन्तर

जीव (बृहस्पति) का आठ अंश अर्थात् ग्यारहवें अंशसे
मठागहवें अंशतक तीसरा त्रिंशांश होता है, तदनन्तर बु-
धका त्रिंशांश सात अंशतक अर्थात् उनीसवें अंशसे प-
चीसवें अंशतक चौथा त्रिंशांश होता है, अनन्तर वैत्यपु-
रोहित (शुक्र) का त्रिंशांश पांच अंशतक अर्थात् छब्बी-

त्रिपमत्रिंशांशविचार यंत्र						
मेघ	मयु०	सिह	तुला	घनु	कुंभ	राशि.
म.	म.	म.	मं.	मं.	मं.	५ अंश पर्यन्त
१	१	१	१	१	१	
श.	श.	श.	श	श.	श.	१० अंश पर्यन्त
११	११	११	११	११	११	
वृ.	वृ.	वृ.	वृ	वृ	वृ.	१८ अंश पर्यन्त
९	९	९	९	९	९	
बु.	बु	बु	बु	बु.	बु.	२५ अंश पर्यन्त
१	१	३	३	३	३	
शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	३० अंश पर्यन्त
७	७	७	७	७	७	

सर्वे अंशसे पूर्ण तीस अंशतक पांचवा त्रिंशांश होता है,
यह त्रिपमराशिका त्रिंशांश हुआ, अब सम राशिका
त्रिंशांश इस रीतिसे विचारे कि त्रिपम राशिके त्रिंशांशसे
त्रिलोम अर्थात् उलटे क्रमसे त्रिंशांश होता है, अर्थात्
समराशिका त्रिंशांश पहले पांच अंशतक शुक्र का फिर

सात अंश (६ अंशसे १२ तक) बुधका त्रिशांश होता है, अनन्तर आठ अंश (१३ अंशसे २० तक) वृहस्प-
तिका त्रिशांश होता है, तदनन्तर पांच अंश
(२१ से २५ तक) शनिको त्रिशांश होता है. पश्चात्

समात्रिशांशविचार यंत्र ।						
वृष	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन	राशि
शु. २	शु. २।	शु. २	शु. २	शु. २	शु. २	५ अंश
बु. ६	बु. ६।	बु. ६	बु. ६	बु. ६	बु. ६	अं. १२
वृ. १२	वृ. १२	वृ. १२	वृ. १२	वृ. १२	वृ. १२	अंश २०
श. १०	श. १०	श. १०	श. १०	श. १०	श. १०	अ. २५
मं.८	मं.८	मं.८	मं.८	मं.८	मं.८	३० अं

पांच अंश (२६ से ३० तक) मंगलका त्रिशांश होता है
तथा विषम राशिमें विषम राशिका और सम राशिका
त्रिशांश होता है, सो विषम सम राशिके त्रिशांश विचार
चक्रमें समझ लेना ॥ ८८ ॥

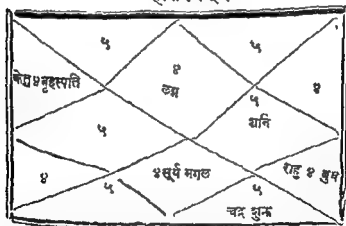
भाषाटीकासहित ।

षड्वर्गसाधनोदाहरण ।

तत्रादौहोराज्ञानोदाहरण ।

यथा द्वारकाप्रसादकी जन्मपत्रीमें जन्मलग्न तुला है और २७ अंश गत हैं, तो होरा १५ १५ अंशके दो जानना, यहां दूसरा होनेसे विषम लग्न तुलाकी दूसरी होरा चंद्रमा (कर्क) की जानना, सो कर्कसे होराकुंडली लिखनी उचित है,

होरायंत्रम् ।



सूर्य आदि ग्रहोंको होराकुंडलीमें रखे सो इस प्रकार जैसे सूर्य मेषराशिका अंश १९ गत होनेसे दूसरी होरा है मेष विषमराशि है दूसरी होरा चंद्रमाकी जानना एवं मंगल आदिका होरा विचार कर होराकुंडलीमें लिखना,

पद्वर्गफल ।

सम्यद्देहसुखं स्थानं होरायां चिन्तयेद्बुधः ॥ द्रेष्का-
णात्प्रकृतिं आहन्सप्रांशात्तनयं हि सः ॥ ८९ ॥
नवःशतो धनं मित्रकलत्राणि च चिन्तयेत् ॥
द्वादशांशात्सर्वसौख्यं वाहनानि विचारयत् ॥ ९० ॥
मृत्युं रोगं च त्रिंशांशात् शोकवाय्वग्निजं भयम्
विचार्य गृहयोगाश्च वदेत्सम्यक् विचक्षणः ॥ ९१ ॥

अर्थ—सम्पदा (ऐश्वर्य) देहसुख, स्थान (स्वदेश
परदेश) का विचार बुधजन होरासे करे, और द्रेष्काण-
से प्रकृति और भाइयों अथवा भाइयोंकी प्रकृति का
विचार करे और सप्तांशसे सन्तानका विचार करे, ॥ ८९ ॥
नवांशसे धन मित्र और स्त्रीका विचार करे, तथा द्वाद-
शांशसे सबप्रकारके सुख और वाहन (सवारी) का
विचार करे ॥ ९० ॥ त्रिंशांशसे मृत्यु और रोग तथा
शोक एवं वायु अग्निसे उभय भयका विचार करे, इन
सबके विचारमें मली भांति ग्रहोंके योग देखकर और
विचारकर ज्योतिषी पण्डित फल कथन करे, ॥ ९१ ॥

होराफल ।

रवेःस्वदेशस्थितिदा होरा चन्द्रस्य चैव हि ॥ वि-
देशे मुखदुःखानि शुभाशुभग्रहे क्षणात् ॥ ९२ ॥

अर्थ—सूर्यकी होरा अपने देशकी स्थिति देनेवाली होती है अर्थात् सूर्यकी होरा हो तो अपने देशमें स्थिति रहे और चन्द्रमाकी होरा हो तो विदेशमें स्थिति होवे सुख दुःखका विचार शुभ और पाप ग्रहोंकी दृष्टिके अनुसार विचार करे, अर्थात् शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो सुख और पाप ग्रहोंकी दृष्टि हो तो दुःखपूर्वक स्थिति होवे ॥९२॥

द्रेष्काणज्ञानोदाहरण ।

। द्रेष्काणयंत्रम् ।



जन्मलग्नतुलागनांशं २७ से तीसरा द्रेष्काण जानना तीसरा द्रेष्काण नवम राशिका होता है. तो तुलासे नवम राशि मिथुन हुई मिथुन राशिका द्रेष्काण जन्मलग्नमें जानना तथा जैमे सूर्य मेषराशिका गतांश १९ हैं तो दूसरा द्रेष्काण हुआ दूसरा द्रेष्काण पांचवी राशिका होता है मेषसे पांचवी राशि सिंह है सिंहका द्रेष्काण हुआ सिंहका स्वामी सूर्य तो सूर्य अपनेही द्रेष्काणमें जानिये.

द्रेष्काणफल ।

जन्मसौम्यस्य द्रेष्काणे सौम्यग्रहनिरीक्षिते ॥
भवति भ्रातरो मित्रा बहवो न विपर्ययः ॥ ९३ ॥

अर्थ—जन्मसमय शुभग्रहका द्रेष्काण हो शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो भाई मित्र बहुतसे होवें इसमें सन्देह नहीं. और इससे विपरीत हो अर्थात् पाप ग्रहका द्रेष्काण जन्मसमयमें हो और पाप ग्रह देखते हों तो भाई और मित्र बहुत नहीं होवें ॥ ९३ ॥

नवांशज्ञानोदाहरण ।

जन्मलग्नतुलाके अंशगत २७ पर नवांश नवां हुआ तुलासे नयां मिथुनका नवांश जन्मसमय हुआ. तथा सूर्य मेषगतांश १९ से छठा नवांश कन्याका हुआ ॥

नवांशयंत्रम् ।



नवांशफल ।

नवांशे बलसंयुक्ते कलत्राणि बहूनि च ॥ सौम्ये
सौम्यानि जायन्ते पापैः दृष्टेभ्य संख्यया ॥ ९४ ॥

अर्थ—जन्मसयय यदि नवांश बलसंयुक्त हो तो स्त्रियां बहुत हों तहां शुभग्रह और पापग्रह जितने स्थित हों, उसी संख्याके अनुसार स्त्रियां होवे, शुभग्रहोंसे शुभ लक्षणवाली पाप ग्रहोंसे कुलक्षणवाली जानने, यहां ग्रहोंकी स्थिति और दोनोंका विचार करना ॥ ९४ ॥

द्वादशांशज्ञानोदाहरण ।

जन्मलग्नतुलाके गतांश २७।४५ हैं तो २७।३० पर्यन्त ग्यारहवां द्वादशांश रहा, उपरान्त बारहवां प्रारंभ हुआ, यहां कला ४५ हैं तो बारहवीं राशि कन्याका द्वादशांश हुआ, तथा सूर्य मेषके गतांश १९ से आठवां वृश्चिकका द्वादशांश हुआ ॥

द्वादशांशयंत्रम् ।



द्वादशांशफल ।

द्वादशांशे शुभे सौख्यं वनितांवरचंदनैः ।

अर्थ—द्वादशांशमें शुभग्रह स्थित हों अथवा देखते हों तो स्त्री वस्त्रचन्दन आदि पदार्थोंकरके सुख होवे ॥

त्रिंशांशज्ञानोदाहरण ।



जन्मलग्न तुलाके गतांश २७ तुला विषम राशि है. अन्त्यका पांचवां त्रिंशांश, तुलाका हुआ और तुलाका स्वामी शुक्र तो शुक्रके त्रिंशांशमें जन्म जानना. तथा सूर्य मेषके गतांश १९ से चौथा त्रिंशांश बुधका हुआ, मेष विषम राशि है. इस कारण बुधकी विषम राशि मिथुनका त्रिंशांश हुआ ॥

त्रिंशांशफल ।

प्राप्नोति शोभनं मृत्युं त्रिंशांशेऽपि शुभावहः ॥९५॥

अर्थ—त्रिंशांश यदि शुभ हो तो मृत्यु शुभ प्रकारसे अर्थात् सुखपूर्वक होती है. अर्थात् शुभग्रहका त्रिंशांश हो, और त्रिंशांशपर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो युक्त हों तो शोभन मृत्यु प्राप्त होती है ॥ ९५ ॥

यह सामान्य रीतिसे पद्वर्गफल लिखा विशेष फल नारायण ज्योतिषके जातकभागमें लिखेंगे ।

। : मारकस्थानविचार ।

अष्टमं ह्यायुषस्थानमष्टमादष्टमं च यत् ॥

तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ ९६ ॥

अर्थ—जन्मलग्नसे आठवां स्थान आयुका है और आठवेंसे आठवां स्थान । अर्थात् जन्मलग्नसे तीसरा घर है. इन दोनोंसे बारहवां स्थान मारक स्थान जानना, आठवें स्थानसे बारहवां घर सातवां, और तीसरे स्थान-बारहवां स्थान दूसरा ये दो स्थान मारकस्थान कहाते हैं इनके स्वामी मारकेश कहाते हैं ॥ ९६ ॥

तत्राप्याद्यव्ययस्थानाद्वितीयं बलवत्तरम् ॥

तदीशितुस्तत्र गताः पापिनस्तेन संयुताः ॥ ९७ ॥

तेषां दशाविपाकेषु संभवे निघनं नृणाम् ॥

तेषामसंभवे साक्षाद् व्ययाधीशदशास्वपि ॥ ९८ ॥

अर्थ—तहां (उन दोनों मारकस्थानोंमेंसे) आदि-द्वितीय मारकस्थान अर्थात् दूसरे स्थानवाला मारक-स्थान बलवान् होता है. इस कारण द्वितीयस्थानके स्वामीकी तथा उस द्वितीय स्थानके स्वामी (मारकेश) के साथ जो पाप ग्रह (तृतीयेश षष्ठेश लाभेश) स्थित हों उनकी दशाओंका परिपाक होनेके समय मनुष्योंका निघन होना संभव है और यदि मारकेशके साथ पाप ग्रह न हों और और पाप ग्रहोंकी दशामी न हो, तो

जन्मलग्नसे बारहवें स्थानके स्वामीकी तथा व्ययभावके स्वामीके संबंधी ग्रहोंकी दशाओंका परिपाक होनेके समय मनुष्योंका निधन (मरण) होवे, ऐसा कहना ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

अलाभे पुनरेतेषां सम्बन्धेन व्ययेशितुः ॥

क्वचिच्छुभानां च दशा ह्यष्टमेशदशासु च ॥ ९९ ॥

अर्थ—यदि बारहवें स्थानके स्वामीके स्थान इन (पूर्वोक्त) पाप ग्रहोंकी दशाका सम्बन्ध न हो, तो बारहवें स्थानके पतिके सम्बन्धी शुभ ग्रहोंकी दशामें भी मरण हो जाना सम्भव है, और कहीं आठवें स्थानके स्वामीके सम्बन्धी ग्रहोंकी दशाभी मरण हो जाता है ॥ ९९ ॥

केवलानां च पापानां दशासु निधनं क्वचित् ॥

कल्पनीयं बुधैर्न्दणां मारकाणां न दर्शने ॥ १०० ॥

अर्थ—यदि इन (पूर्वोक्त) मारकयोगोंका असम्भव हो तो केवल पाप ग्रहोंकी दशाओंमें निधन होना कोई पण्डित जन कहते हैं, सूर्य और चन्द्रमाको छोड़कर शेष पांच ग्रहोंमेंसे मारकेश होता है, पाप ग्रहोंका योग मारकेश हो अथवा मारकेश पापग्रह हों तो मरण कहना, और शुभ ग्रह मारकेश हों अथवा मारकेशका शुभ ग्रहसे योग हो तो पीडा होवे ऐसी कल्पना पण्डितोंकरके करनी चाहिये ॥ १०० ॥

मारकैः सह संयोगान्निहन्ता पापकृच्छ्रनिः ॥

अतिक्रम्येतरान्सर्वान् भवत्येव न संशयः ॥१०१॥

अर्थ—यदि तीसरे छठे ग्यारहवें स्थानका स्वामी होनेसे पापकारक शनि मारकेश ग्रहोंके साथ स्थित हो, अथवा देखता हो अथवा किसी प्रकारका संबंध हो तो अन्य सब ग्रहोंको उल्लंघन करके आपही मारक हो जाता है, इसमें संशय कुछभी नहीं जानना ॥ १०१ ॥

यह सामान्य प्रकारसे मारकस्थान लिखा, और ग्रह-भावफल, ग्रहावस्था, जातकदशा, अष्टकवर्ग, सूर्यकालानल, चन्द्रकालानल, कालदंष्ट्रा, सर्वतोभद्रनिर्याण, आयुर्वीर्यक्रम, ये सब विषय हम इस ग्रन्थके द्वितीय भागमें क्रमशः लिखते हैं. अब आगे परम आवश्यकीय और प्रचलित अष्टोत्तरीमहादशा, त्रिंशोत्तरीमहादशा, योगिनीमहादशा आगे लिखते हैं.

महादशाक्रम ।

राजयोगग्रहयोगसंभवं रिष्टयोगजनितं च यत्फल-
म् ॥ तद्दशाफलगतं यतो भवेत्तेन तत्क्रममलं बुवे
धुनाः ॥ १०२ ॥ ॥ ॥

अर्थ—राजयोग और ग्रहयोगसे उत्पन्न और अरिष्ट-योगसे उत्पन्न जो फल है वह फल दशओंमें होता है,

इस कारण दशाओंका क्रम उत्तमताके साथ इस समय आगे कहा जाता है ॥ १०२ ॥

शुक्लेविंशोत्तरी रात्रौ कृष्णो ह्यष्टोत्तरी दिवा ॥
अन्यथा योगिनी ग्राह्या जन्मकाले त्रिधा
दशा ॥ १०३ ॥

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि ॥
विंशोत्तरी दशा तस्य शुभाशुभफलप्रदा ॥ १०४ ॥

अर्थ—यदि शुक्लपक्षमें रात्रिसमय जन्म होतो विंशो-
त्तरीदशा, और कृष्ण पक्षमें दिनका जन्म होतो अष्टो-
त्तरी दशा, और इससे अन्यथा हो अर्थात् शुक्लपक्षमें
दिनके समय, और कृष्णापक्षमें रात्रि समय जन्म
हो तो योगिनीदशा ग्रहण करै, जन्मसमयमें यह
तीन प्रकारकी दशा जानना, ॥ १०३ ॥ तथा कृष्ण
पक्षमें यदि दिनका जन्म हो, और शुक्लपक्षमें रात्रिका
जन्म हो तो विंशोत्तरी उसके शुभाशुभ फलको
देवे है ॥ १०४ ॥ ये दो श्लोक प्रायः सुननेमें आये परंतु
यह किसीको ठीक ज्ञात नहीं कि किस आचार्यका ऐसा
मत है, अनेक जन्मपत्रियोंमें हमने अष्टोत्तरी, विंशोत्तरी,
योगिनी, किसीमें केवल विंशोत्तरी अथवा योगिनी, इस
कारण जन्मपत्रप्रदीपमें हम तीनों दशाओंका क्रम लि-
खते हैं.

शाकी वर्षसंख्या ६, और चंद्रकी १० और मंगलकी ७, राहुकी १८, एवं बृहस्पतिकी १६, और शनिकी १९ बुधकी १७, केतुकी ७ और शुक्रकी वर्षसंख्या २० जानना, इनमें जो पहली अर्थात् जन्मकी महादशा हो, उसकी वर्षसंख्यासे जन्मनक्षत्रकी गतघटी संख्यासे गुण

विंशोत्तरीदशाविचार चक्र.									
स.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु	के.	शु.	दशा
क.	रो.	मृ.	भा.	पु.	पु	स्रो	म	पू.	जन्म.
उ.	व.	चि	स्वा.	वि.	ऽनु.	उपे	मू	पू.पा.	नक्षत्र
उ.पा.	शु.	ध.	श	पू.भा	उ.भा	दे.	अ.	भ	
६	१७	७	१८	१६	१९	११	७	१०	वर्षसंख्या

देवे, ॥ १०६ ॥ और भोग, अर्थात् जन्मनक्षत्रकी सम्पूर्ण घटीसंख्यासे भाग देवे जो लब्ध वर्ष मास दिन घटी पल आवे उनको सम्पूर्ण वर्षसंख्यामें घटा देवे अर्थात् जन्मदशापतिकी वर्षसंख्यामें न्यून करे, न्यून करनेसे जो शेष अंक हों वही महादशाकी भोग्य वर्षादिसंख्या जानना, विंशोत्तरी महादशाकी गणना कृत्तिका आदि क्रमसे जानिये और चक्रमें सूर्य आदि महादशाको बुद्धिवान् जनोकरके लिखना उचित है, सो विंशोत्तरीदशाविचार चक्रमें देख लेना ॥ १०७ ॥

विंशोत्तरीअन्तर्दशासाधन ।

दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत् ॥ यत्ल-
व्यं तद्भवेन्मासास्त्रिंशद्विगुणितं दिनम् ॥ १०८ ॥

अर्थ—जिस महादशामें दूसरी महादशाकी अन्तर्द-
शा जानना हो तो महादशाकी वर्षसंख्याको दूसरी
महादशाकी वर्षसंख्यासे गुण देवे, और उसमें १० का
भाग देवे लब्ध अंकको मास जानिये और शेषको
तीससे गुणाकर दशका भाग देवे जो लब्ध हो सो
दिन जानिये ॥ १०८ ॥

विंशोत्तरीमहादशासाधनोदाहरण ।

जन्मनक्षत्र रोहिणीकी संख्या ४ में २ घटानेसे शेष
अंक २ इसमें नवका भाग नहीं लगता, इस कारण
दूसरी महादशा चन्द्रमाकी जन्मसमयमें हुई अथवा चंद्र-
माकी महादशाकी वर्षसंख्या १० है इसकी महादशाका
युक्त योग्य जन्मसमयमें निकालनेके निमित्त जन्मनक्ष-
त्रकी गतघटी और जन्मनक्षत्रकी सर्व घटी जिसको भया-
त, भभोग कहते हैं, उसको स्थापित किया तो भयात
४३ । ०० भभोग ६६ । २४ भयातके पल किये तो

लब्ध १९ घटी हुई. शेष २०६४ को त्रिपल व्यावनेके लिये ६० से गुणा तो १२३८४० हुए. इनमें ३९८४ से भाग लिया तो लब्ध ३१ पल हुए. तो ६ वर्ष ५ मास २१ दिन १९ घडी ३१ पल, भुक्त हुई. इनको चन्द्र-माकी महादशावर्षसंख्या १० में घटानेसे भोग्य वर्ष ३ मास ६ दिन ८ घडी ४० पल २९ हुए. सो चक्रमें समझ लेना. लिखनेका यहभी क्रम है कि अथ पाराशरौक्तविंशोत्तरीमहादशामध्ये चन्द्रमहादशायां जन्मः तद्भुक्त पूर्वजन्मानि वर्षादिकम् ६ । ५ । २१ । १९ । ३१ भोग्य वर्षादिकम् ३ । ६ । ८ । ४० । २९ ॥

अन्तर्दशासाधनोदाहरण ।

जैसे सूर्यकी महादशावर्ष ६ इसमें सूर्यहीकी अन्तर्दशा व्यावना है तो दशा दशासे गुणा अर्थात् ६ को ६ से गुणा तो ४६ हुए इनमें १० का भाग दिया तो लब्ध ३ मास हुए. शेष ६ को तीससे गुणा तो १८० हुए. इनमें १० का भाग दिया तो लब्ध १८ दिन हुए सूर्यमहादशाके अन्तरमें सूर्यकी अन्तर्दशा ३ मास १८ दिन जानना, इसी प्रकार सूर्यमें चन्द्रकी अन्तर्दशा जानना, सो चक्रमें स्पष्ट देख लेना ॥ जन्मपत्रीमें अन्तर्दशाका चक्र लिखना हो तो जिस प्रकार महादशा

प्रवेशचक्र लिखा है, उसी क्रमसे लिखना महादशाके नीचेके सम्बत् लेना और अन्तर्दशाके वर्ष, मास, दिन क्रमशः सम्बत् और सूर्यकी राशि और अंशमें जोड़ देना, और जन्मपत्रीमें अनेक दशाओंका क्रम जानना

विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्र ।

सूर्यान्तर्दशा				चन्द्रान्तर्दशा				भौमान्तर्दशा			
अतर्द.	व.	मा.	दि.	अतर्द.	व.	मा.	दि.	अतर्द.	व.	मा.	दि.
स.	०	३	१८	च.	०	१०	०	म.	०	४	२८
च.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	८	६	रा.	१	६	०	वृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	वृ.	१	४	०	श.	१	१	९
वृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	शु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	शु.	१	५	०	के.	०	४	२७
शु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सु.	०	४	६
वृ.	१	०	०	म.	०	६	०	च.	०	७	०
योग	६	०	०	यो.	१०	०	०	योग	७	०	०

हो तो हमारे बनाये दशार्चितामणिनामक ग्रन्थमें देखना आगे अष्टोत्तरीमहादशाज्ञान लिखते हैं ।

राहुभतर्दशा				जीवातर्दशा				शन्यतर्दशा				बुधोतर्दशा				केवतर्दशा				शुक्रातर्दशा			
अ. द.	व.	मा.	दि.	अ.	व.	मा.	दि.	अ.	व.	मा.	दि.	अ.	व.	मा.	दि.	अ.	व.	मा.	दि.	अ.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	वृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	कृ.	२	४	२७	के.	०	४	२७	गु.	१	४	०
हु.	२	४	२४	श.	२	६	१२	कु.	२	८	२	कं.	०	२	२७	गु.	१	०	०	सु.	१	०	०
श.	२	२०	६	कु.	२	३	६	के.	१	१	०	सु.	२	१०	०	सं.	०	६	०	मं.	१	०	०
मु.	२	६	१८	के.	०	११	०	कु.	३	२	१२	सं.	०	१०	६	रा.	०	२	१७	गं.	१	०	०
के.	१	०	१८	सु.	०	७	०	सं.	०	११	०	चं.	१	५	०	रा.	०	०	०	रा.	१	०	०
गु.	३	०	०	च.	१	७	१८	मं.	०	७	१२	मं.	०	११	२७	गं.	०	०	०	गं.	१	०	०
सु.	०	१०	०	म.	१	१	०	रा.	१	१	०	कु.	२	६	१८	सं.	०	११	०	गं.	१	०	०
मं.	१	०	०	रा.	२	२	६	कु.	२	२	१२	गं.	२	३	६	सं.	०	११	०	गं.	१	०	०
योग.	१८	०	०	योग	१९	०	०	योग	१९	०	०	योग	१९	०	०	योग	१९	०	०	योग	१९	०	०

अष्टोत्तरीमहादशाविचार ।

चत्वारि भानि पापेषु शुभेषु त्रीणि योजयेत् ॥
 आर्द्रादिमृगपर्यन्तं लिखेदभिजिता सह ॥ १०९ ॥
 तद्यथा ॥ आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्य आश्लेषा तु रश्मिर्दशा
 ॥ मघा पूर्वात्तरा चैव चन्द्रस्य च दशा तथा ॥ ११० ॥
 हस्तो चित्रा विशाखा च स्वाती भौमदशा स्मृता
 ॥ ज्येष्ठाऽनुराधा मूले च बुधस्य च दशा बुधैः
 ॥ १११ ॥ अभिजिच्छ्रवणाः पूषा ऊषा चैव शनै-
 र्दशा ॥ धनिष्ठा शततारा च पूर्वा भाद्रपदा गुरोः
 ॥ ११२ ॥ उभा पूषाश्विनी कालराहोश्चैव दशा
 स्मृता ॥ कृत्तिका रोहिणी चोक्ता मृगा शुक्रदशा
 बुधैः ॥ ११३ ॥ एषां भानां क्रमेणैव ज्ञेया सूर्यादि-
 कादशाः ॥ क्रूरजा अशुभा प्रोक्ता शुभा स्यात्सौ-
 म्यखेटजा ॥ ११४ ॥ सूर्यस्य पञ्चर्षाणि इन्द्रोः पञ्च
 दशैव च ॥ मंगलस्याष्टवर्षाणि ऋषिचन्द्रबुध-
 स्य च ॥ ११५ ॥ मन्दस्य दश वर्षाणि गुरोश्चैकोन
 विंशतिः ॥ राहोर्द्वादश वर्षाणि शुक्रस्याप्येक
 विंशतिः ॥ ११६ ॥ ॥ ॥ ॥

अर्थ—अष्टोत्तरीमहादशाका विचार लिखते हैं.
 अष्टोत्तरीमहादशाका क्रम यह है कि चार नक्षत्र पाप
 ग्रहकी दशमें और तीन नक्षत्र शुभ ग्रहकी दशमें, योज-

ना करे. आर्दानक्षत्रसे मृगाशिर नक्षत्रपर्यन्त अभिजित सहित लिखे ॥ १०९ ॥ आर्द्रा, पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा नक्षत्रका जन्म हो तो सूर्यदशा और मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी हो तो चन्द्रदशा तथा ॥ ११० ॥ हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा हो तो मंगलकी दशा, ज्येष्ठा, अनुराधा, मूल हो तो बुधदशा ॥ १११ ॥ पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित्, श्रवण हो तो शनिदशा और

अष्टोत्तरीदशाविद्याचक्र								
सु.	च.	म	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.	दशा -
भा.	म.	ह.	ऽनु.	पू.पा	ध	उ.भा	कृ.	जन्म.
पु.	पू.	चि.	ज्ये.	उ.पा	श.	रे	रो.	नक्षत्र
पु.	उ.	स्वा	मू.	ऽभि	पू.	अ.	मृ.	
ले	०	वि.	०	श्र.	०	म.	०	
६	१५	८	१७	१०	१९	११	२१	वर्षसंख्या.

धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद हो तो गुरुदशा ॥ ११२ ॥ उत्तराभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी हो तो राहुकी दशा कृतिका रोहिणी मृगशिरा हो तो शुक्रदशा पंडितो ने कही है ॥ ११३ ॥ इन नक्षत्रोंमें जन्म हो तो क्रम से सूर्य आदि दशां जाननी तहां पाप ग्रहकी दशा अ-शुभ कही है और शुभ ग्रहकी दशा शुभ कही है, ॥ ११४ ॥ सूर्यमहादशाका वर्षसंख्या ६ चन्द्रमादशाकी

वर्षसंख्या १५ तथा मंगलकी वर्ष संख्या ८ एवं बुधकी वर्ष संख्या १७ ॥ ११५ ॥ मन्द (शनि) दशाकी वर्ष संख्या १० गुरुदशाकी वर्षसंख्या १९ राहुदशाकी वर्ष संख्या १२ एवं शुक्रदशाकी वर्षसंख्या २१ कही है ॥ ११६ ॥

अष्टोत्तरीअन्तर्दशासाधन ।

दशा दशाहसामश कार्या नवभिर्भागमाहरेत् ॥

यल्लब्धं तद्भवेन्मासस्त्रिंशद्विगुणितं दिनम् ॥ ११७ ॥

अर्थ—जिस महादशामें दूसरी महादशाकी अन्तर्दशा जानना हो तो महादशाकी वर्षसंख्याको दूसरी महादशाकी वर्षसंख्यासे गुण देवै और उसमें नव ९ का भाग देवे लब्ध अंकको मास जानिये और शेषको तीससे गुणाकर नवका भाग देकर लब्धको दिन जानिये ॥ ११७ ॥

अष्टोत्तरीदशासाधनोदाहरण ।

जन्मनक्षत्र रोहिणी होनेसे अष्टोत्तरी महादशा शुक्रकी हुई । अब जन्मनक्षत्रसे शुक्रदशाका भुक्त भोग्य जानना है, तां भयात् ४३१०० के पल २५८० और मभोगके पल ३९८४ हैं. भयात् पल २५८० को शुक्रदशाकी वर्षसंख्या २१ से गुणा तो ५४१८० अंक हुए इनमें मभोगपल ३९८४ से भाग लिया तो लब्ध १३ वर्ष हुए शेष २३८८ को मास लावनेके अर्थ १२ से गुणा तो

१८६५६ हुए. इनमें मभोगका भाग लेनेसे लब्ध ७ मास
 हुए. शेष ७६८ को दिन लावनेके अर्थ ३० से गुणा
 तो २३०४० हुए इनमें मभोगसे भाग लिया तो लब्ध
 ५ दिन हुए. शेष ३१२० को घटी लावनेके अर्थ ६०
 से गुणा तो १८७२०० हुए. इनमें मभोगसे भाग लिया
 तो लब्ध ४६ घटी हुई, शेष ३९३६ को पल लावनेके

अष्टोत्तरीमहादशाप्रवेशयंत्रम् ।

ब्र.	मृ.	क.	म.	मु.	श.	र.	रा.	द.	ऐक्यम्
७	१	१५	८	१७	१०	१९	११	९४	वर्ष
४	०	०	०	०	०	०	०	४	मास
२४	०	०	०	०	०	०	०	२४	दिन
१३	०	०	०	०	०	०	०	१३	घटी
१	०	०	०	०	०	०	०	१	पल
१००	१००	१०५	१००	१००	१००	१००	१००	१००	सम्बन्ध
सु.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु.	सूर्य
००	५	५	५	५	५	५	५	५	रा.
१९	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	अ.
३९	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	क.
१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	वि.

अर्थ ६० से गुणा तो २३६१६० अंक हुए इनमें मभोगसे
 भाग दिया तो लब्ध ५९ पल हुए, इस प्रकार शुक्र-
 महादशाकी भुक्त वर्षादिक १३७५५४६५९ इसका भोग्य

वर्षादिक जाननेके अर्थ महादशाकी वर्षसंख्या २१ :
घटादिया तो भोग्य वर्षादिक ७ । ४ । २४ । १३ । १ हुए स
चक्रमें स्पष्ट देख लेना ॥

अन्तर्दशासाधनोदाहरण ।

अष्टोत्तरीमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्र.											
पूर्वान्तर्दशा				मौलान्तर्दशा				बुधान्तर्दशा			
व.	मा.	दि.	रा.	प्र.	व.	मा.	दि.	च.	मा.	दि.	व.
५	०	४	०	५	०	७	३	२०	२	६	२०
५	०	१०	०	५	१	१	३	२०	१	६	२०
५	०	१६	०	५	०	८	२६	४०	२	११	२६
५	०	२१	०	५	१	४	२६	१०	१	२०	०
५	०	२७	०	५	०	१०	१०	०	३	२०	०
५	०	३०	०	५	१	६	२०	०	०	१०	०
५	०	३६	०	५	०	५	१०	०	२	१०	०
५	०	४०	०	५	१	२	१०	०	१	३	२०
५	०	४०	०	५	०	१०	०	०	०	०	०

अन्यतर्था			गुणतर्था			रक्ततर्था			शुक्रतर्था		
म.	व.	मा दि.	प.	क.	सा.	बृ.	भा.	दि.	अ.	र.	मा.
०	११	२२०	३	४	५	१	४	०	कु.	४	१
१	९	२२०	२	२	१	२	४	०	दु.	१	२
१	११	१००	३	३	८	०	८	०	च	२	११
१	१६	१००	१	१	०	१	८	०	स	१	६
०	६	२००	२	२	७	०	७	२०	मु	३	२०
१	४	२००	१	१	४	१	७	२०	ज.	१	११
०	८	२६४०	२	२	११	१	१	१०	हृ	३	१०
१	६	२६४०	१	१	९	२	१	१०	रा.	२	४
२०	०	०	१२	१२	०	१२	०	०	३।	११	०

मष्टोत्तरीकी अन्तर्दशासाधनका क्रम यह है, कि जैसे सूर्यदशामें सूर्यका अन्तर्दशा ल्यावना है तो सूर्यकी वर्षसंख्या ६ को ६ से गुणा दिया तो ३६ हुए. इसमें ९ का भाग दिया तो लब्ध ४ मास हुए. शेष ०० रहे. तो सूर्यमें सूर्यकी अन्तर्दशा ४ मास हुई इसी प्रकार चन्द्रकी अन्तर्दशा जाननी ॥

जन्मपत्रीमें अन्तर्दशाचक्र महादशाचक्रके लिखना, अन्तर्दशामें वर्ष, मास, दिन, लिखी है सो क्रमशः जोड़कर लिखना विशेष देखना हो तो हमारे लिखे देखना, अब आगे योगिनीमहादशाक्रम हम लिखते हैं,

योगिनीमहादशाप्रकार ॥

स्वकीयं च भं रुद्रनेत्रैर्युतं ततद्विविधायाष्टमिर्भाग-
माहार्यं शेपात् ॥ क्रमान्मंगलादिर्दशा शून्यशेषे
तदा संकटा प्राणासन्देहकर्त्री ॥ ११८ ॥ मंगला
पिंगला धन्या भ्रामरी भद्रिका तथा ॥ उत्का
सिद्धा संकटा च एतासां नामवत्फलम् ॥ ११९ ॥
एकं द्वौ गुणावेदवाणरससप्ताष्टाऽब्दसंख्याक्रमा-
त्स्वीस्वीया च दशा विपाकसमये ज्ञेयं शुभं वा-
शुभम् ॥ पदं कृत्वा विभजेच्च पदकृतिरसेः कुट्टि-
त्रिवेदेषु पदं सप्ताष्टचन्दशा भवेयुरिति ता एवं
दशान्तर्दशाः ॥ १२० ॥ गतर्क्षनाडीगुणिता
दशाब्दा सर्वर्क्षनाडीविहृताः फलं यत् ॥ वर्षादि-
कं भुक्तफलं ततश्च भोग्यं दशायाः प्रविचार्य
लेख्यम् ॥ १२१ ॥

अर्थ—अब योगिनी महादशाका प्रकार लिखते हैं, अपने जन्मनक्षत्रकी संख्यामें तीन

संख्यामें आठका भाग देवे जो अंक शेष रहे तो क्रमसे मंगला आदि महादशा जानना, शून्य शेष रहनेसे संकटा दशा जानिये. सो संकटा प्राणोंको सन्देहकी करने वाली होती है ॥ ११८ ॥ १ मंगला, २ पिंगला, ३ घन्या, ४ भ्रामरी, ५ भद्रिका, ६ उल्का, ७ सिद्धा, ८ संकटा, ये आठ योगिनीदशायें हैं. नामके तुल्य फल इनका जानना ॥ ११९ ॥ इनकी वर्षसंख्या यह है कि मंगला १ वर्ष, पिंगला २ वर्ष, घन्या ३ वर्ष, भ्रामरी ४ वर्ष, भद्रिका ५ वर्ष, उल्का ६ वर्ष, सिद्धा ७ वर्ष, संकटा ८ वर्ष, ये अपनी अपनी दशामें शुभ वा अशुभ फलको देनेवाली दशायें हैं इनकी अन्तर्दशा निकालनेका यह क्रम है, कि इनकी वर्षसंख्या जो १।२।३।४।५।६।७।८ है. सो मंगला आदिकी दशामें जिसकी अन्तर्दशा निकालनी हो तो पहले परस्पर दशवर्षसंख्याको गुण देवे अर्थात् दशावर्षसंख्यासे दूसरी दशवर्षसंख्याको गुणो कि जिसकी अन्तर्दशा निकालनी है. फिर दशादशासे गुणों अंकमें छः से छः गुणाकर अंक है अर्थात् छत्तीस का भाग देवे तो लब्ध वर्ष जानना, शेष अंकको बारहसे गुणाकर ३६ का भाग देके लब्ध मास जानना, फिर शेषको ३० से गुणाकर ३६ का भाग देके लब्ध दिन जानना, इस प्रकार दशाओंमें अन्तर्दशा जानना,

जन्मपत्रीमें अन्तर्दशाचक्र महादशाचक्रके अनुसार लिखना. अन्तर्दशामें वर्ष, मास, दिन, घटीलीसंख्या लिखी है सो क्रमशः जोड़कर लिखना, विशेष देखना हो तो हमारे लिखे दशार्चितामणिग्रन्थमें देखना, अब आगे योगिनीमहादशाक्रम हम लिखते हैं,

योगिनीमहादशाप्रकार ॥

स्वकीयं च भं रुद्रनेत्रैर्युतं ततद्विविधायामिर्भाग-
माहार्यं शेपात् ॥ क्रमान्मंगलादिर्दशा शून्यशेषे
तदा संकटा प्राणासन्देहकर्त्री ॥ ११८ ॥ मंगला
पिंगला धन्या भ्रामरी भद्रिका तथा ॥ उत्का
सिद्धा संकटा च एतासां नामवत्फलम् ॥ ११९ ॥
एकं द्वौ गुणावेदवाणरससप्ताष्टाऽब्दसंख्याक्रमा-
त्स्वीस्वीया च दशा विपाकसमये ज्ञेयं शुभं वा-
शुभम् ॥ पदं कृत्वा विभजेच्च पदकृतिरसैः कुद्वि-
त्रिवेदेषु पदं सप्ताष्टन्नदशा भवेयुरिति ता एवं
दशान्तर्दशाः ॥ १२० ॥ गतर्क्षनाडीगुणिता
दशाब्दा सर्वर्क्षनाडीविहताः फलं यत् ॥ वर्षादि-
कं भुक्तफलं ततश्च भोग्यं दशायाः प्रविचार्य
लेख्यम् ॥ १२१ ॥

अर्थ—अब योगिनी महादशाका प्रकार लिखते हैं, अपने जन्मनक्षत्रकी संख्यामें तीन मिला देवे फिर उस

संख्यामें आठका भाग देवे जो अंक शेष रहे तो क्रमसे मंगला आदि महादशा जानना, शून्य शेष रहनेसे संकटा दशा जानिये. सो संकटा प्राणोंको सन्देहकी करने वाली होती है ॥ ११८ ॥ १ मंगला, २ पिंगला, ३ धन्या, ४ आमरी, ५ भद्रिका, ६ उल्का, ७ सिद्धा, ८ संकटा, ये आठ योगिनीदशायें हैं. नामके तुल्य फल इनका जानना ॥ ११९ ॥ इनकी वर्षसंख्या यह है कि मंगला १ वर्ष, पिंगला २ वर्ष, धन्या ३ वर्ष, आमरी ४ वर्ष, भद्रिका ५ वर्ष, उल्का ६ वर्ष, सिद्धा ७ वर्ष, संकटा ८ वर्ष, ये अपनी अपनी दशामें शुभ वा अशुभ फलको देनेवाली दशायें हैं इनकी अन्तर्दशा निकालनेका यह क्रम है, कि इनकी वर्षसंख्या जो १।२।३।४।५।६।७।८ है. सो मंगला आदिकी दशामें जिसकी अन्तर्दशा निकालनी हो तो पहले परस्पर दशवर्षसंख्याको गुण देवे अर्थात् दशावर्षसंख्यासे दूसरी दशवर्षसंख्याको गुणो कि जिसकी अन्तर्दशा निकालनी है. फिर दशादशासे गुणों अंकमें लः से लः गुणाकर अंक है अर्थात् छत्तीस का भाग देवे तो लब्ध वर्ष जानना, शेष अंकको बारहसे गुणाकर ३६ का भाग देके लब्ध मास जानना, फिर शेषको ३० से गुणाकर ३६ का भाग देके लब्ध दिन जानना, इस प्रकार दशाओंमें अन्तर्दशा जानना,

॥ १२० ॥ जन्मसमय महादशाका भुक्त भोग्य इस प्रकार निकालना चाहिये, कि जन्मनक्षत्रकी गत घटी अर्थात् भयातको दशावर्षसंख्यासे गुण देवे और सर्वर्क्षनाडी अर्थात् भभोगसे भाग लेवे जो लब्ध हो वह वर्ष जानना, जो शेष हो उसको बारहसे गुणाकर भभोगसे भाग लेके मास जानना, फिर शेषको ३० से गुणाकर भभोग.

योगिनीदशानामतथावर्षसंख्या							
मंगला	रिगला	धन्या	आमरा	भाद्रका	उल्का	सिद्धा	सकट
१	२	३	४	५	६	७	८

से भाग लेके दिन जानना, शेषको ६० से गुणाकर भभोगसे भाग लेके लब्धको घटी जानना, शेषको ६० से गुणाकर लब्धको पल जानना, इस प्रकार भुक्तकाल निकालकर दशाकी वर्षसंख्यामें घटाकर भोग्यकाल निकाल लेवे. इस प्रकार योगिनीमहादशाको विचारकर लिखे ॥ १२१ ॥ आगे उदाहरण लिखते हैं,

योगिनीदशासाधनोदाहरण ।

जन्मनक्षत्र रोहिणीकी संख्या ४ में ३ युक्त करनेसे ७ हुए ८ का भाग नहीं लगनेसे सातवीं सिद्धा महादशा सिद्धाकी वर्षसंख्या ७ को भयातपल २५८० से गुणा तो १८०६० अंक हुए, इनमें भभोगपल ३९८४ से भाग

लिया तो लब्ध ४ वर्ष हुए. शेष २१२४ को १२ से गुणा तो २५४८८ हुए. इनमें भोगपलसे भाग लिया तो लब्ध ११ दिन हुए शेष ९३८६ को ६० से गुणा तो २२१७६० हुए. इनमें भोगका भाग लिया तो लब्ध ५५ घटी हुई. शेष २६४० को ६० से गुणा तो १५८४०० हुए. इनमें भोगसे भाग लिया तो

योगिनीमहादशाप्रवेशयंत्रम्									
सि	स	म	पि.	ध	म्रा	म.	उ	द.	ऐत्यम्
२	८	०	२	३	४	५	६	३१	वर्ष
५	॥	०	०	०	०	०	०	५	मास
१८	०	०	०	०	०	०	०	१८	दिन
४	०	०	०	०	०	०	०	४	घटी
२१	०	०	०	०	०	०	०	२१	पल
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	संवत्
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सूर्य.
००	६	६	६	६	६	६	६	६	राशि
१९	७	७	७	७	७	७	७	७	अश
३५	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	३९	कञ
१४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	विक

लब्ध ३९ पल हुए. तो सिद्धादशाके भुक्त वर्षादि ४६।११ ५५।३९ पल हुए. इनको वर्षसंख्या ७ में बटाया तो भोग्य वर्षादि २।५।१८।४।२१ जानना, । यहां मंगलादशा आ-

दिके स्वामी क्रमसे चं. सु. बृ. मं. बु. श. शु. रा. जा-
नना. संकटादशाके अंतमें केतुस्वामी जानना. ॥

योगिनीअन्तर्दशासाधनोदाहरण ।

जैसे मंगलादशामें मंगलाकाही अन्तर निकालना है.
तो एकको एकसे गुणा तब (एकेन गुणितं तदेव) एकही
हुवा. इसमें ३६ का भाग नहीं लगा. दो बार लब्ध शून्य
आया अब १२ को ३० से गुणा तो ३६० हुए इनमें ३६
का भाग दिया तो लब्ध १० दिन हुए. शेष शून्य रहा
तो मंगलामें मंगलाकी अन्तर्दशा १० दिन हुए. इसी प्र-
कार सबकी अन्तर्दशा निकाले और अन्तर्दशाचक्रमें
देखकर समझ लेवे ॥

योगिनीमहादशान्तर्दशाचक्र.

मंगलान्तर्दशा				पिण्डान्तर्दशा				धन्यान्तर्दशा				आमर्षान्तर्दशा			
अ.	व.	मा.	दि.	अ.	व.	मा.	दि.	अ.	व.	मा.	दि.	अ.	व.	मा.	दि.
म.	०	०	१०	पि.	०	१	१०	ध.	०	३	०	आ.	०	५	०
पि.	०	०	२०	ध.	०	२	०	आ.	०	४	०	भ.	०	६	२०
ध.	०	१	०	आ.	०	३	२०	भ.	०	५	०	उ.	०	८	०
आ.	०	१	१०	म.	०	४	१०	उ.	०	६	०	सि.	०	९	१०
भ.	०	१	२०	उ.	०	५	०	सि.	०	७	०	स.	०	१०	२०
उ.	०	२	०	सि.	०	६	२०	स.	०	८	०	म.	०	१	३०
मि.	०	१	१०	स.	०	७	१०	म.	०	९	०	पि.	०	२	२०
स.	०	२	०	म.	०	८	२०	पि.	०	१०	०	ध.	०	३	०
यो.	१	०	०	यो.	२	०	०	यो.	३	०	०	यो.	४	०	०

भाद्रिफतदशा	उल्कातदशा				सिद्धातदशा				सकटातदशा			
	दि.	मा.	व.	अ.	दि.	मा.	व.	अ.	दि.	मा.	व.	अ.
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
भाद्रिफतदशा	दि.	मा.	व.	अ.	दि.	मा.	व.	अ.	दि.	मा.	व.	अ.
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
भाद्रिफतदशा	दि.	मा.	व.	अ.	दि.	मा.	व.	अ.	दि.	मा.	व.	अ.
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
भाद्रिफतदशा	दि.	मा.	व.	अ.	दि.	मा.	व.	अ.	दि.	मा.	व.	अ.
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४

योगिनीप्रत्यन्तर्दशासाधन ।

स्वी स्वी दशा या दिवसादिनिष्णा स्वांतर्दशाया
दिवसेः क्रमेण ॥ यदिर्विभक्ता घटिकास्तथा च
स्युमंगलाद्या दिवसेः क्रमेण ॥ १२२ ॥

अर्थ—अथ योगिनीदशाकी प्रत्यन्तर्दशाका प्रकार
लिखते हैं. अन्तर्दशाओं जो अन्तर्दशा होती है, उसको

प्रत्यन्तर्दशा कहते हैं. उसके साधनका प्रकार यह है, कि अपनी अपनी अन्तर्दशाके दिनसंख्याको जिसकी अन्तर्दशा निकालनी है, उसके अन्तर्दशादिनसंख्यासे गुणा करे, गुणा करनेसे जो अंक हों उनको छःसे भाग देवे, जो लब्ध अंक हों वह प्रत्यन्तरकी घड़ी जाननी, शेष अंकको ६० से गुणाकर छःसे भाग देके लब्ध अंकको पल जानना, घड़ियोंसे दिन जान लेवे और दिनोंसे मास जाने इस प्रकार क्रमसे यह प्रत्यन्तर्दशाका साधन वर्णन किया ॥ १२२ ॥

प्रत्यन्तर्दशासाधनोदाहरण ।

जैसे मंगलाकी, अन्तर्दशामें मंगलाकी प्रत्यन्तर्दशा निकालनी है, तो मंगलामें मंगलाकी अन्तर्दशाके दिन दश हैं. अब मंगलाके अन्तरमें मंगलाकी प्रत्यन्तर्दशा निकालनेके अर्थ दशको दशसे गुणा तो सौ हुए, इनमें छः का भाग लिया तो लब्ध १६ घड़ी, शेष ४ को ६० से गुणा तो २४० में ६ का भाग लिया तो लब्ध ४० पल हुए तो मंगलाकी अन्तर्दशामें मंगलाकी प्रत्यन्तर्दशा घड़ी १६, पल ४० हुई. इसी क्रमसे अन्तर्दशामें प्रत्यन्तर्दशाको निकाल लेवे. यहां प्रत्यन्तर्दशाओंके चक्र ग्रन्थविस्तारभयसे नहीं लिखे, आगे योगिनीदशाका फल लिखते हैं ।

अर्थ—मनुष्योके जन्मसमयमें अथवा और किसी समय जब पिंगलादशा होती है तब हृदयरोग शोकको देती है और नाना प्रकारके रोग कुसंग शरीर और मनमें व्याधिपीडा चिन्ताको उत्पन्न करती है, तथा काला रुधिर, ज्वर, चित्तशूल, मालिनता इनको करती है और स्त्री, पुत्र, सेवक, लाभ, सन्मान इनका विध्वंस करती है और धनका व्यय करती है तथा सज्जनोंसे प्रेमको हरनेवाली दुष्टा दशा होती है ॥ १२४ ॥

धन्यादशाफल ।

धन्या धन्यतमा धनागममुखव्यापारभोगप्रदा पुं-
सां मानविवृद्धिदा रिपुगणग्रध्वंतिनी सौख्यदा
विद्याराजजनप्रबोधसुरताज्ञानांकुरान्वर्द्धिनी स-
त्तीर्थाभिरसिद्धसेवनरतिर्लभ्या दशा भाग्यगा ॥१२५॥

अर्थ—धन्यादशा मनुष्यको धनका आगम, सुख, व्यापार, भोग इनको देती है, मानको बढ़ाती है, शत्रुओंका विध्वंस करके सुख देती है और विद्या, राजजन, प्रबोध, स्मरणशक्ति, ज्ञानका अंकुर इनको बढ़ाती है, उच्चम तीर्थ, देव, सिद्ध, इनके सेवनमें प्रीतिको बढ़ाती है, ऐसी धन्यादशा भाग्यको बढ़ानेवाली होती है ॥ १२५ ॥

धामरीदशाफल ।

दुर्गारण्यमदीधरोपगहनोरामातपव्याकुला दूरा-
दूरतरं भ्रमंति मृगवचृष्णाकुलाः सर्वतः॥ भूधा-

लान्वयजादशामधिगता ये वै सुपाभ्रामरीं स्वराज्यं
प्रविहायते स्फुटतरं क्षमाधो लुठते मुहुः ॥ १२६ ॥

अर्थ—जिसको भ्रामरीदशा आती है तो, वह मनुष्य
दुर्ग (कोट,) वन, पर्वत, उपवन इनमें दूरसे दूर व्या-
कुलतापूर्वक धामसे पीडित, मृगतृष्णासे आकुल हो सर्व-
त्र भ्रमण करता है और राजा होनेपरभी वह मनुष्य
बारंवार निरान्तरण भूमिपर लोटनेवाला और अपने
राज्यको छोड़कर सर्वत्र भ्रमण करनेवाला होवे, ऐसी
भ्रामरीदशा होती है ॥ १२६ ॥

भद्रिकादशाफलम् ।

सौहार्दं निजवर्गभूसुरसुरेशानां सुहृन्मानता मां-
गल्यं गृहमंडलेखिलमुखव्यापारसक्तं मनः ॥ रा-
ज्यं चित्रकपोलपालितिलकासप्तांगनाभिः समः
क्रीडायोदभरो दशा भवति चेतुंसा हि भद्रा-
भिधा ॥ १२७ ॥

अर्थ—अपने वर्गमें मित्रता हो, ब्राह्मण और देव-
ताओंमें प्रीति और सन्मानबुद्धि होवे गृहमंडलमें मंगल
हो, व्यापार करनेमें मन लगे, राज्यप्राप्तिसमान स्त्रीसंभो-
गादिसुख प्राप्त हो और क्रीडासे मन आनन्द हो मनुष्यों
को भद्रिकादशा जो हो तो यह फल होता है ॥ १२७ ॥

उल्कादशाफलम् ।

उल्काचेद्यदि योगिनीशनिदशा मानार्थगोवाहन-

व्यापारांबरहारिणी नृपजनक्लेशप्रदा नित्यशः ॥
 भृत्यापत्यकलत्रवैरजननी रम्यापहन्त्री नृणां हन्ने-
 त्रोदरकर्णदावतपदो रोगः सदेहे भृशम् ॥ १२८ ॥

अर्थ—यदि उल्कानामवाली योगिनीशनिदशा होवे तो उल्कादशा मान, अर्थ, गौ, वाहन, व्यापार, वस्त्र, इनको हरनेवाली और राजजन नृपजन इनमें नित्य क्लेशको देनेवाली और सेवक, पुत्र, स्त्री इनमें वैर उत्पन्न करनेवाली उत्तम वस्तुओंका नाश करनेवाली तथा हृदय, नेत्र, उदर, कान, चरण इनमें रोग करनेवाली और शरीरमें पीडा देनेवाली होती है ॥ १२८ ॥

सिद्धादशाफलम् ।

सिद्धा सिद्धिकरी सुभोगजननी मानार्थसंदायिनी
 विद्याराजजनप्रतापधनसद्धर्मासजज्ञानदा ॥ व्या-
 पारांबरभूषणादिकमतोद्वाहोऽपि मांगल्यदास
 त्संगान्नृपदत्तराज्यविभवो लभ्या दशा पुण्यतः १२९ ॥

अर्थ—सिद्धादशा सिद्धि करनेवाली, उत्तम भोगोंको और मान-अर्थको देनेवाली तथा विद्या राजजन, प्रताप, धन, सद्धर्म, ज्ञान इनको देनेवाली और व्यापार वस्त्रालंकार, विवाहमें मंगल देनेवाली होती है, तथा सत्संग-पूर्वक राजदत्त विभव प्राप्त होता है, सिद्धादशा महत्पुण्यसे प्राप्त होती है ॥ १२९ ॥

॥ संकटादशाफलम् ।

राज्यभ्रंशाभिदाहो ग्रहपुरनगरग्रामगोष्ठेषु पुंसां
तृष्णारोगांगधातोः क्षणविकृतिरथो पुत्रकातावि-
योगः ॥ चेत्स्यान्मोहोऽरिभीतिः कृशतनुलतिका
संकटाया विरोधो नो मृत्युर्जन्मकालाद्यमपि हि
विना संकटं योगिनीजम्

अर्थ—संकटायोगिनीदशा राज्यसे भ्रष्ट करती है
और घर, पुर, नगर, गांव, गोष्ठ (खिरक) इनमें अग्नि-
दाह होता है और संकटासे ग्रसित पुरुषोंको तृष्णा, अंग
में रोग, धातुक्षीण विकार, पुत्र-स्त्रीसे वियोग, मोह, शत्रु-
भय, शरीरमें दुर्बलता, मनुष्योंसे विरोध और मृत्यु ये अ-
रिष्टफल विना संकटादशाके अन्य कैसे प्राप्त हो ? यह
योगिनीसंकटाका फल है ॥ १३० ॥ यद्यपि यह फल यो-
गिनी दशाका लिखा तथापि यहां दो बातोंका ध्यान रहे
एक यह कि जो बालक असमर्थ हैं उनके पिता
आदिको उक्त फल प्राप्त होना कहे और जिस अरिष्ट
दशाकाभी स्वामी श्रेष्ठ हो तो फल बदल जाना सम्भव
है ॥

रिपुव्ययगते चाय ह्यथवाधनमृत्युगे ॥ द्यूने वा
पापमध्यस्थे स्वपाके दुःखदो ग्रहः ॥ १३१ ॥

अर्थ—जो ग्रह छूटे, बारहवें वा दूसरे, आठवें, सातवें
वा पापके बीचमें हो वह ग्रह अपनी दशामें दुःखदायक
होता है ॥ १३१ ॥

न दिशेयुर्ग्रहाः सर्वे स्वदशासु स्वक्तिषु ॥ शुभा-
शुभफलं नृणामात्मभावानुरूपतः ॥ १३२ ॥ आत्म
सम्बन्धिनो ये च ये वा निजसधर्मिणः ॥ तेषामन्तर्द-
शास्वेव दिशन्ति स्वदशा नृणाम् ॥ १३३ ॥

अर्थ—सब ग्रह अपनी दशा—अंतर्दशामें भी शुभा-
शुभ फल अपने भाव आदिके अनुरूप होनेपर भी मनु-
ष्योंको नहीं देते हैं ॥ १३२ ॥ कब देते हैं सो कहते
हैं कि—स्वसंबन्धी अथवा अपने समानधर्मवाले ग्रहोंकी
अंतर्दशामें जब फलदाता ग्रहोंकी दशा आती है, तब
शुभाशुभ फल ग्रह देते हैं ॥ १३३ ॥

वसुन्मत्त्वक्चन्द्रेऽद्दे श्रावणे कृष्णपक्षको ॥ नवम्यां
गुरुवारे च प्रदीपोऽयं प्रकाशितः ॥ १३४ ॥

अर्थ—श्रीमहाराजा विक्रमादित्यजीके सम्वत् १९६८
श्रावणमास, कृष्णपक्ष नवमी गुरुवारके दिन इस ज-
न्मपत्रीप्रदीपको प्रकाशित किया ॥ १३४ ॥ इति श्रीमदयो-
ध्यामण्डलान्तर्वर्तिलखीमपूरखीरीनिवासिज्योतिर्वित्पण्डित
नारायणप्रसादमिश्रलिखितभापाटीकासमान्वितं जन्मपत्री
प्रदीपकं सम्पूर्णम् ॥ शुभमस्तुसमाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

॥ समाप्तम् ॥